''40 वर्ष की अव्यक्त पालना का रिटर्न - 4 बातें - शुभचिंतक बनो, शुभचिंतन करो, शुभ वृत्ति से शुभ वायुमण्डल बनाओ तथा (0) जीरो और हीरो की स्मृति में रहो''

आज बापदादा चारों ओर के अपने सेवा के साथी बच्चों से मिलने आये हैं। आदि सेवा के साथी और साथ में और भी सेवा के साथी बन बहुत अच्छी सेवा की वृद्धि कर रहे हैं, तो बापदादा अपने साथियों को देख खुश हो रहे हैं। और दिल में गीत गा रहे हैं वाह! मेरे विश्व परिवर्तन सेवा के साथी वाह! आज अमृतवेले से चारों ओर स्नेह की मालायें बापदादा को डाल रहे थे। तीन प्रकार की मालायें थी एक थी बाप समान बनने के उमंग-उत्साह की, दूसरी थी अति बिछुड़ी हुई बंधन वाली बांधेली गोपिकाओं की, उन्हों की मालायें तो थी लेकिन चमकते हुए अति अमूल्य आंसुओं की माला भी थी। एक-एक आंसू मोती समान चमक रहे थे और तीसरी माला कुछ-कुछ बच्चों की उल्हनों की थी।

आज अमृतवेले से लेके सभी में विशेष स्नेह समाया हुआ दिखाई दे रहा था। बापदादा ने विराट रूप जैसे बांहें पसार सब बच्चों को बांहों में समा लिया। वैसे आज का दिन स्नेह के साथ सर्व पावर्स की विल देने का भी था। एक बच्ची को हाथ में हाथ मिलाके विल पावर्स की विल सभी बच्चों को शक्ति सेना और पाण्डव, कई बच्चे पाण्डव भी और शक्तियां भी, बापदादा ने देखा, गुप्त रूप से अन्तर्मुखी बन पुरुषार्थ में तीव्र गति से चल रहे हैं। बाहर से दिखाई नहीं देते हैं लेकिन पुरुषार्थी अच्छे हैं। बापदादा ने देखा आज का विशेष रूप स्नेह का सबजेक्ट सभी के चेहरे चमका रहे थे। ज्ञानी तू आत्मा बच्चे तो हैं लेकिन स्नेह की सबजेक्ट आवश्यक है क्योंकि स्नेही मेहनत कम और मुहब्बत के अनुभव में सहज रहते हैं। स्नेह की शक्ति कैसी भी पहाड़ जैसी समस्या हो, पहाड़ को भी रूई बना देते हैं। पहाड़ को भी पानी जैसा हल्का बना देते हैं। स्नेह एक छत्रछाया है। छत्रछाया के कारण वह सदा सेफ रहता है। सहज होता है। स्नेह से परमात्मा वा भगवान को भी अपना दोस्त बना देते हैं। जो यादगार है खुदा दोस्त का। खुदा को दोस्त बनाके कोई भी समस्या दोस्ती के नाते से सहज कर देते हैं। बाप को अपना साथी बना देते हैं। ज्ञान बीज है, लेकिन प्रेम का पानी बीज में फल लगा देता है, प्राप्ति के फल। तो ऐसे बाप के स्नेही बच्चे बाप को याद करना मेहनत नहीं समझते हैं लेकिन भूलना मुश्किल समझते हैं। स्नेही कभी स्नेह को भूल नहीं सकता। मेरा बाबा कहा, दिल के स्नेह से और सर्व खजानों की चाबी मिल जाती है। तो दोनों बापदादा ऐसे स्नेही, जिनके आगे बापदादा भी हज़ूर हाज़िर हो जाता है। याद तो सब करते हैं लेकिन कोई थोड़ी थोड़ी मेहनत से करते हैं और कोई सदा स्नेह के सागर में लवलीन रहते हैं। दुनिया वाले कहते हैं आत्मा परमात्मा में लीन हो जाती लेकिन आत्मा परमात्मा के प्यार में लव लीन हो जाती है। लीन नहीं होती लवलीन होती।

तो आज का दिन मुहब्बत में लवलीन का है। मेहनत समाप्त हो मुहब्बत के रूप में बदल जाती है। तो बापदादा ने सभी बच्चों की रिजल्ट भी देखी, होमवर्क मैजारिटी ने किया है। बाप समान बनने का लक्ष्य बार-बार रिवाइज भी किया, रियलाइज़ भी किया। 75 परसेन्ट बच्चों की रिजल्ट अच्छी रही। और यह बाप समान बनना ही है, कुछ भी तूफान आये, है ही कलियुग का समाप्ति का समय, तो तूफान तो आयेंगे, परिवर्तन का समय है ना, लेकिन आप बच्चों के लिए तूफान क्या है! तूफान, तूफान नहीं लेकिन तोहफा है क्योंकि बापदादा के वरदान का हाथ सभी पुरुषार्थी बच्चों के माथे पर है। जिन्होंने दृढ़ संकल्प अर्थात् दृढ़ता की चाबी कार्य में लगाई उन्हों की अभी की रिजल्ट प्रमाण सफलता भी प्राप्त की है लेकिन सदाकाल के लिए तूफान को तोहफा बनाए, समस्या को समाधान रूप दे आगे बढ़ते चलो। तो बापदादा अभी की रिजल्ट में खुश है। जो योग तपस्या की है उसमें लक्ष्य दृढ़ रखा है, बनना ही है।

40 वर्ष अव्यक्त पालना के पूरे हुए हैं। तो 40 वर्ष में पहले क्या आता - बिन्दू, जीरो। तो जीरो याद दिलाता कि मैं हीरो, सच्चा हीरो, महान हीरो हूँ और हीरो पार्टधारी बन हर कार्य हीरो समान करना है। तो जीरो, हीरो यह सदा याद रहे और बाकी जो चार हैं, उसमें चार बातें नेचुरल जीवन में करनी है, दृढ़ता पूर्वक करनी हैं, करेंगे? तैयार हैं? कुछ भी पेपर आवे लेकिन चार बातें अपने जीवन में करनी ही है। पक्का? पक्का? पक्का? पीछे वाले, पक्के हैं ना! कच्चे को माया

खा जाती है इसीलिए पक्का रहना। एक बात - सदा शुभचिंतक, कोई की कमजोरी देख वा सुन रहमदिल बन शुभ चिंतक बन उनको सहयोग देना ही है। कमजोरी को नहीं देखना है लेकिन सहयोग देना ही है। इसको कहते हैं शुभ चिंतक। पक्का रहेगा ना! सहारे दाता, रहमदिल बन सहयोग दो। उससे किनारा या घृणा नहीं करना, क्षमा करना। परवश के ऊपर कभी घृणा नहीं की जाती है। सहारा दिया जाता है। तो शुभ चिंतक और दूसरा है शुभ चिंतन। आजकल बापदादा देखते हैं - मैजारिटी बच्चों में कभी-कभी व्यर्थ संकल्प बहुत चलता है, इसमें अपनी जमा हुई शक्तियां व्यर्थ चली जाती हैं, इसलिए शुभ चिंतन की, स्वमान का कोई न कोई अपना टाइटिल मन को होमवर्क दे दो, मन का टाइमटेबल बनाओ, कर्म का तो टाइमटेबल बनाते हो लेकिन मन का टाइमटेबल बनाओ। स्वमान, अमृतवेले मिलन मनाने के बाद मन को दे दो लेकिन जैसे सुनाया है कि 12-13 बारी सभी को टाइम मिलता है, उसमें रियलाइज भी करो, रिवाइज भी करो तो मन बिजी रहने से व्यर्थ संकल्प में समय नहीं जायेगा, मेहनत नहीं करनी पड़ेगी, हर समय संगमयुग जो मौज का युग है, उसी मौज में रहेंगे। तो दूसरा सुनाया - शुभचिंतन। चेक करो और चेंज करो। तीसरा है - शुभ वृत्ति। अशुभ वृत्ति वायुमण्डल भी अशुद्ध फैलाती है इसीलिए शुभ वृत्ति। और चौथा है हर एक को यह जिम्मेवारी लेनी है कि मुझे, मेरा काम है खास, दूसरे को नहीं देखना है, मेरा काम है शुभ वायुमण्डल बनाना। जैसे कभी भी वायुमण्डल में बदबू होती है तो क्या करते हो? खुशबू फैलाते हो ना! बदबू सहन नहीं होती, कोई न कोई खुशबू का साधन अपनाते हो, ऐसे साधारण वायुमण्डल वा अशुभ वायुमण्डल बदलना ही है। चाहे छोटा है, चाहे नया है, लेकिन सबकी जिम्मेवारी है। दृढ़ संकल्प करना है मुझे शुभ वायुमण्डल बनाना ही है। यह प्रतिज्ञा प्रत्यक्षता करेगी। प्रतिज्ञा करते हो, बापदादा खुश होता है लेकिन प्रतिज्ञा में कभी-कभी दृढ़ता नहीं होती है इसीलिए सफलता जो चाहते हो, जितनी चाहते हो उतनी नहीं होती। सारे विश्व का, प्रकृति का, आत्माओं का, आत्माओं में ब्राह्मण आत्मायें भी आ जाती हैं, हर एक अपने सेवास्थान का ऐसा वायुमण्डल दृढ़ता से बनाओ, कुछ त्याग करना पड़े तो कर लो, त्याग करे तो मैं करूं, नहीं। सिस्टम ठीक हो तो... तो तो नहीं करो। मुझे तो करना ही है। विश्व परिवर्तक स्वमान है ना! सभी विश्व परिवर्तक हो ना! हाथ उठाओ। अच्छा विश्व परिवर्तक। बहुत अच्छा। तो पहले बापदादा देखने चाहते हैं, है भी होगा भी लेकिन इस वर्ष में बापदादा छोटे या बड़े सेवाकेन्द्र का चक्कर लगावे तो वायुमण्डल कैसा हो? जैसे आज का दिन स्नेह और शक्ति का है, ऐसे गांव-गांव का सेन्टर, बड़ा सेन्टर का वायुमण्डल चैतन्य मन्दिर हो। निगेटिव को पॉजिटिव बनाना इसमें पहले मैं। पहले आप नहीं करना, पहले मैं, क्योंकि बापदादा और एडवांस पार्टी और आजकल तो प्रकृति भी इन्तजार कर रही है। इन्तजाम करने वाले आप हो, आपको इन्तजार नहीं करना है, इन्तजाम करना है।

आज चारों ओर भय फैला हुआ है, सबके दिल में एक ही संकल्प है मैजारिटी दुनिया वालों के, कल क्या होगा! आपको पता है कल क्या होगा! तो परिवर्तन करने में पहले मैं निमित्त बनूंगा, यह संकल्प कौन करता है? इसमें हाथ उठाओ। करना पड़ेगा। करना पड़ेगा। बदलना पड़ेगा। रक्षक बनना पड़ेगा। कुछ छोड़ना पड़ेगा और प्यार लेना पड़ेगा। मन का हाथ उठाया या यह हाथ उठाया! किसने मन का हाथ उठाया। क्योंकि मन बदला तो विश्व बदला। तो इस वर्ष में क्या स्लोगन होगा? क्या स्लोगन होगा? ''नो प्राबलम''। विजय का झण्डा दिल में लहरेगा। और सभी खुशी की डांस सदा मन में करेंगे, मन की डांस है खुशी। तो हर समय खुशी की डांस करेंगे। और दाता के बच्चे हो तो जो भी आवे हर एक को कोई न कोई गुण की गिफ्ट दो। तो एक सेकण्ड में वह दृढ़ संकल्प, दाता का संकल्प लिफ्ट बन जायेगा और सेकण्ड में परमधाम, सूक्ष्मवतन, स्थूल मधुबन साकार वतन, जहाँ चाहेंगे वहाँ बिना मेहनत के सेकण्ड में पहुंच जायेंगे। कोई भी सामने आये उसको खाली हाथ नहीं भेजना, कोई न कोई गुण की, चेहरे से, चलन से, मुख से गुण की सौगात के बिना नहीं मिलना।

तो इस वर्ष का हर मास रिजल्ट अपने पास भी रखना और यज्ञ में टीचर द्वारा ओ.के. का कार्ड भेजना, लम्बा पत्र नहीं भेजना, ओ.के. का कार्ड भेजना। कार्ड भी लम्बा नहीं भेजना, जो दुनिया में कार्ड चलता है वह नहीं, टीचर द्वारा जो वरदान का कार्ड मिलता है वह भेजना। गुणों की सौगात, शक्तियों की सौगात कितनी है? लिस्ट गिनती करो तो कितनी बड़ी लिस्ट है। और जितना देंगे उतनी कम नहीं होगी बढ़ती जायेगी। जैसे कहते हैं ना छू मन्त्र, तो यह शिव मन्त्र कभी कोई

गुण आपसे कम नहीं होगा, और ही बढ़ेगा क्योंकि कहावत है दे दान छूटे ग्रहण। अच्छा।

इस बारी जो पहले बारी आये हैं वह उठके खड़े हों। अच्छा है - (एम.पी. के राज्यपाल सामने बैठे है) इस संगठन में पधारे हो, अच्छा है। बापदादा आप सभी को, आने वालों को यह वरदान दे रहे हैं कि सदा बाप से गुडमार्निंग और गुडनाइट जरूर करना। क्योंकि पहले-पहले आंख खुलते ही बाप को देखेंगे तो सारा दिन अच्छा होगा। तो पहले बारी आने वाले बच्चों को बापदादा का पदमगुणा यादप्यार और बधाई हो। अच्छा। आज टर्न किसका है?

सेवा का टर्न इन्दौर ज़ोन का है:- अच्छा, निशानी अच्छी रखी है (सबके हाथ में कमल का फूल है) अच्छा। इन्दौर कहेंगे ना इसको, इन्दौर का अर्थ क्या है? इन डोर अर्थात् अन्तर्मुखी। यह जो निशानी रखी है, इस निशानी अनुसार सदा कमल पुष्प समान न्यारे और बाप के प्यारे। अन्तर्मुखी सदा सुखी। अन्तर्मुखी सदा बाप के दिलतख्तनशीन हैं। अन्तर्मुखी सदा सर्व के प्यारे होते हैं। अच्छा अन्दाज भी काफी आया है, मुबारक हो। यज्ञ सेवा का गोल्डन चांस मिलना यह बहुत बड़ा पुण्य जमा करने का है, हर कदम यज्ञ सेवा करना अर्थात् अपना पुण्य जमा करना। तो इन 10-15 दिन में हर कदम सेवा किया तो कितने पदम बने? यज्ञ सेवा महान सेवा है। और बापदादा ने देखा है कि जो भी ज़ोन यह गोल्डन चांस लेता है वह बहुत सिक व प्यार से सेवा करते हैं। रिजल्ट वेरी गुड होती है। तो आप सबकी भी रिजल्ट अच्छी है और अच्छे ते अच्छी रहेगी। अभी यह बात याद रखना कि मैं कौन! कमल। कमल जल में रहते न्यारा रहता, वैसे कोई भी समस्या या कोई भी वायुमण्डल में रहते न्यारा और प्यारा क्योकि समय तो दु:ख का है, भय का है लेकिन आपके लिए सदा मन में खुशी के नगाड़े बजते रहते हैं। सदा खुश रहते हो ना! हाथ उठाओ। खुशी को नहीं छोड़ना। खुशी गई तो जीवन बेकार। नीरस जीवन अच्छी नहीं। इसलिए सदा खुश रहना है, रहना है ना और खुशी बांटनी है। इतनी खुशी हो जो बांटों भी और खुश रहो भी क्योंकि बाप का ब्राह्मण बच्चा बनना अर्थात् खुशनसीब बनना, खुशकिस्मत बनना। अपना खुशनसीब का टाइटिल सदा याद रखना क्योंकि बाप मिला अर्थात् सर्व प्राप्तियों का भण्डार मिला। तो कहावत है भण्डारा भरपूर, सब दु:ख दूर तो क्या करेंगे! खुश ही रहेंगे ना! अच्छी सेवा भी कर रहे हो। सेवा करना अर्थात् वरदान प्राप्त करना। तो सेवा में सफलतामूर्त हैं ना! कांध हिलाओ। टीचर्स, सफलतामूर्त हैं ना! कहो सफलता तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। बोलो। सफलता हमारे गले का हार है। अच्छा।

मेडिकल विंग:- अच्छा, मेडिकल और मेडीटेशन दोनों का ग्रुप है, क्योंकि डबल डाक्टर हैं ना मेडीटेशन द्वारा बाप से मिलाना और मेडिकल द्वारा दु:ख दूर करना। टैम्प्रेरी है लेकिन करते तो है ना। जैसे बाप दु:ख हर्ता है ना तो डाक्टर्स या मेडिकल डिपार्टमेंट भी थोड़े समय के लिए पेशेन्ट का दु:ख तो दूर कर देते हैं। लेकिन अभी तो आप सभी उसको मेडीटेशन सिखाके यह भी पुण्य कमाने वाले मेडिकल डिपार्टमेंट हो। सभी डबल सेवा करते हो। हाथ उठाओ जो डबल सेवा करते हैं, डबल डाक्टर हैं। सिंगल डाक्टर तो बहुत हैं लेकिन आप डबल सेवाधारी डबल काम करने वाले हो। बापदादा को अच्छा लगा। इस सेवा द्वारा भी कई खुश होंगे, खुशनसीब बनेंगे। बापदादा ने देखा कि यह बाम्बे की हॉस्पिटल भी बहुत सेवा के निमित्त है। आबू की तो पहले ही है लेकिन वह बीच में शहर में होने कारण ज्यादा सेवा करने का चांस है। अच्छा कर रहे हो और आगे बढ़ते रहेंगे, आगे बढ़ने का चांस और वरदान दोनों है। अच्छा है। अभी नया प्लैन बनाया है ना कोई। बनाया है? अच्छा, बनाते चलो, परिवर्तन विश्व का करते चलो, उड़ते चलो और उड़ाते चलो। अच्छा।

यूथ ग्रुप:- आजकल की गवर्मेन्ट का भी युवा के लिए बहुत उमंग है, संकल्प है क्योंकि युवा की विशेषता है जो चाहेगा, जो सोचेगा वह करके ही दिखाता है। युवा की डबल शक्ति है, शारीरिक भी और मन की भी। युवा संगठित होके जो चाहे वह कर सकते हैं, पाण्डव गवर्मेन्ट भी देख रही है कि युवा चारों ओर खास अपने स्कूल साथियों की सेवा अच्छी कर रहे हैं। बापदादा के पास युवा वर्ग की रिपोर्ट आती रहती है। अभी एडीशन यह करो कि इस वर्ष में जो भी ब्राह्मणों की मर्यादायें हैं, एक एक मर्यादा को पूर्ण रीति से, मन्सा से, वाचा से, कर्मणा से और सम्बन्ध-सम्पर्क से, चारों ही रूप में पालन करने वाला हो - ऐसा ग्रुप तैयार करो, इस वर्ष में कोई भी मर्यादा भंग न हो। ऐसा ग्रुप बनाओ, आपस में बनाओ। जो ओटे सो अर्जुन। पसन्द है? कौन करेगा? आप करेंगे? हाथ उठाओ। करेंगे? सभी युवा करेंगे? कितने हैं? (400) आपस में ग्रुप ग्रुप में पक्का करो फिर गवर्मेन्ट को दिखायेंगे कि यह मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। गवर्मेन्ट भी चाहती है

लेकिन कर नहीं पाती है आप करके दिखाओ। एक्जैम्पुल बनके दिखाओ। होमवर्क मिल गया ना। बापदादा यही चाहते हैं कि चारों ओर के ब्राह्मण आत्मायें इस वर्ष में कमाल करके दिखायें। व्यर्थ संकल्प की धमाल भी नहीं हो। शुद्ध संकल्प इतना जमा करो जो व्यर्थ को आने का समय नहीं मिले। है ना खजाना। शुद्ध संकल्प का इतना खजाना इकट्ठा है? है हाथ उठाओ। शक्तियां भी हैं, अच्छा है, शक्तियां भी एक्जैम्पुल बनें और पाण्डव भी एक्जैम्पुल बनें। अच्छा। बापदादा खुश है।

सिक्युरिटी विंग:- सिक्युरिटी वाले हैं, आप भी डबल सिक्युरिटी वाले हो ना! एक तो जो हंगामा करने वाले हैं, उनसे सिक्युरिटी करते हो, दूसरे जो बिचारे चाहना रखते हैं कि हम सदा सुख में रहे, शान्ति में रहे, उनकी भी सिक्युरिटी करो, उन्हों को मनमनाभव का मन्त्र देकर शिव मन्त्र देकरके कम से कम खुश रहें, खुशी की सिक्युरिटी, खुशी गंवायें नहीं यह सिक्युरिटी का रास्ता बताओ। तो डबल सिक्युरिटी करो तो कितनी आपको आशीर्वाद मिलेगी। दु:खी को सुखी करना, गमगीन को खुश करना तो आशीर्वाद मिलेगी और ऐसा हर एक के घर को छोटा सा मन्त्र दो, जो खुशी नहीं गंवाये, हर घर में खुशी हो, जितनी यह सेवा करेंगे तो डबल सिक्युरिटी वाले बन जायेंगे। फैलाओ। हर स्थान पर यह रेसपान्सिबिल्टी दो, हैं तो सब स्थान वाले, अपने देश में पहले यह सिक्युरिटी का काम करो, गांव गांव, बड़े बड़े स्थान, खुशनुमा हो जायें। तो करेंगे? करेंगे? अच्छा।

अभी सभी सदा जो चार बातें सुनाई और पांचवा जीरो और हीरो सुनाया, तो इन बातों का मनन करते हुए मग्न अवस्था में रहने वाले ब्राह्मण सो फरिश्ता आत्मायें, देवता बनना तो आपका जन्म सिद्ध अधिकार है, फरिश्ता सो देवता है ही, तो सदा स्नेह के लव में लीन, लवलीन रहने वाले, सदा दृढ़ता के संकल्प की चाबी को मन में, बुद्धि में स्मृति में रखने वाले, क्योंकि इस चाबी के पीछे माया बहुत चक्कर लगाती है। तो मन और बुद्धि से सदा समर्थ रहने वाले चारों ओर के बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:-(दादी जानकी से) चक्कर लगाकर आई बहुत अच्छा। जो कर रहे हैं बहुत अच्छा। बाबा को चित्र याद आया कि जगदम्बा बीच में खड़ी है झण्डा लहरा रहे हैं और पीछे सब शक्तियां साथ में खड़ी है। तो अभी वह चित्र बापदादा विश्व के आगे दिखाना चाहता है। सारे ब्राह्मणों से शक्ति सेना ऐसी तैयार करो जो निमित्त बनें, चक्कर लगाते हुए वायुमण्डल को पावरफुल बनाये और दृढ़ संकल्प करे तो हम यह दृढ़ संकल्प रखते हैं कि हम वायुमण्डल को बदलके दिखायेंगे। यह झण्डा उठायें। ऐसा ग्रुप निकालो जो चक्कर लगाके वायुमण्डल को ठीक करे, अपनी स्थिति, वाणी और संग से। ऐसा ग्रुप तैयार करके दिखाओ। तो बापदादा को चित्र याद आया तो यह प्रैक्टिकल होना चाहिए। ऐसे नहीं कहना समय नहीं मिलता। कोई नहीं कहेगा, समय नहीं मिलता। समय मिलेगा अगर शुभ भावना है तो, ऐसा ग्रुप बापदादा को बनाके देना।

परदादी से: सेवा कर रही हो, मन्सा सेवा से सकाश बहुत दे रही हो। सेवा में बिजी रहती हो।

कलकत्ता वालों ने फूलों का श्रंगार किया है:- अच्छा, हमेशा करते हैं।

(डाक्टर अशोक मेहता जी और योगिनी बहन से) दोनों ने हिम्मत अच्छी रखी और समय पर पहुंचाया,(दादी गुल्जार को कल बाम्बे से मधुबन लेकर आये) इसकी मुबारक हो। जो ड्युटी दी वह की।

अव्यक्त बापदादा से - मध्यप्रदेश के राज्यपाल महामहिम बलराम जाखड़ जी मिल रहे हैं:

बहुत अच्छा, देखो, यह भी आपका भाग्य है जो ऐसे संगठन में पहुंचे हो। अभी बापदादा यही कहते हैं कि जो इस संगठन में मेडीटेशन सिखाते हैं ना, मेडीटेशन तीन घण्टे का है। तो यह जरूर करना। देखो, तीन घण्टा अलग अलग देना है। अगर बिजी हो तो छुट्टी के दिन दो। अच्छा है। क्योंकि बाप के पास आये हो तो बाप सौगात तो देंगे ना। आशीर्वाद यह है कि मेडीटेशन द्वारा सदा खुश रहेंगे। खुशी कभी नहीं गंवाना। कभी भी कोई बात आवे, कहो बाबा, शिवबाबा। वह बात बाप को दे दो, आप खुश रहो।

''सेवा करते डबल लाइट स्थिति द्वारा फरिश्तेपन की अवस्था में रहो, अशरीरी बनने का अभ्यास करो''

आज बापदादा चारों ओर के बच्चों के तीन रूप देख रहे हैं - जैसे बाप के तीन रूप जानते हो, ऐसे बच्चों के भी तीन रूप देख रहे हैं। जो इस संगमयुग का लक्ष्य और लक्षण है, पहला स्वरूप ब्राह्मण, दूसरा फरिश्ता, तीसरा देवता। ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता। तो वर्तमान समय अभी विशेष क्या लक्ष्य सामने रहता है? क्योंकि फरिश्ता बनने के बिना देवता नहीं बन सकते। तो वर्तमान समय और स्वयं के पुरुषार्थ प्रमाण अभी लक्ष्य यही है फरिश्ता। संगमयुग के सम्पन्न स्वरूप फरिश्ता सो देवता बनना है। फरिश्ते की परिभाषा जानते भी हो, फरिश्ता अर्थात् पुरानी दुनिया के सम्बन्ध, संस्कार, संकल्प से हल्का हो। पुराने संस्कार सबमें हल्के हों। सिर्फ अपने संस्कार स्वभाव संसार में हल्कापन नहीं, लेकिन फरिश्ता अर्थात् सर्व के सम्बन्ध में आते सर्व के स्वभाव संस्कार में हल्कापन। इस हल्केपन की निशानी क्या है? वह फरिश्ता आत्मा सर्व के प्यारे होंगे। कोई कोई के प्यारे नहीं, सर्व के प्यारे। जैसे बाप, ब्रह्मा बाप को हर एक समझता है मेरा है। मेरा बाबा कहते हैं। ऐसे फरिश्ता अर्थात् सर्व के प्रिय। कई बच्चे सोचते हैं कि ब्रह्मा बाबा तो ब्रह्मा ही था, लेकिन आप सबने आप समान ब्राह्मण आत्माओं में देखा कि आप सबकी प्यारी दादी, जिसको सभी प्यार से अनुभव करते रहे कि मेरी दादी है। सर्व तरफ स्वभाव, संस्कार और इस पुराने संसार में रहते न्यारी और प्यारी, सब हक से कहते हमारी दादी। तो कारण क्या? स्वयं स्वभाव, संस्कार में हल्के। सबको मेरापन अनुभव कराया। तो एक्जैम्पुल रहा। जगत अम्बा का भी देखा लेकिन कई सोचते हैं वह तो जगत अम्बा थी ना। लेकिन दादी आप ब्राह्मण परिवार जैसी साथी थी। उनके मुख से सदैव अगर पुरुषार्थ सुनते वा पूछते तो उनके मुख में एक ही शब्द रहा - ''अब कर्मातीत बनना है।'' कर्मातीत की लगन में औरों को भी यही शब्द बार-बार याद दिलाती रही। तो हर ब्राह्मण का अभी लक्ष्य और लक्षण विशेष यही रहना चाहिए, है भी लेकिन नम्बरवार है। यही लगन हो अब फरिश्ता बनना ही है। फरिश्ता अर्थात् इस देह, साकार देह से न्यारा, सदा लाइट के देहधारी। फरिश्ता अर्थात् इस कर्मेन्द्रियों के राजा।

बापदादा ने पहले भी सुनाया कि सारे सृष्टि चक्र के अन्दर एक ही बापदादा है जो फलक से कहते हैं कि मेरा एक एक बच्चा राजा बच्चा है। स्वराज्य अधिकारी है। तो फरिश्ता अर्थात् स्वराज्य अधिकारी। ऐसा स्वराज्य अधिकारी आत्मा, लाइट के स्वरूपधारी। कोई भी ऐसे लाइट के डबल हल्केपन की स्थिति में स्थित होंके अगर कोई को भी मिलते हैं तो उनके मस्तक में आत्मा ज्योति का भान चलते फिरते भी दिखाई देगा। अभी यह तीव्र पुरुषार्थ का लक्ष्य और लक्षण सदा इमर्ज रखो। जैसे ब्रह्मा बाप में देखा अगर कोई भी मिलता, दृष्टि लेता तो बात करते-करते क्या दिखाई देता? और लास्ट में अनुभव किया कि ब्रह्मा बाप ज्यादा बात करते-करते भी मीठी अशरीरी स्थिति में स्थित हो जाता। दूसरे को भी चाहे कितना भी सर्विस समाचार हो, लेकिन सेकण्ड में अशरीरीपन का अनुभव कराते रहे और बार-बार कोई भी मुरली में चेक करो, बार-बार मैं अशरीरी आत्मा हूँ, आत्मा का पाठ एक ही मुरली में कितने बार याद दिलाता रहा। तो अभी समय अनुसार छोटी-छोटी विस्तार की बातें, स्वभाव-संस्कार की बातें अशरीरी अवस्था से दूर कर देती हैं। अभी परिवर्तन चाहिए।

बापदादा ने देखा सेवा में रिजल्ट अच्छी हो रही है, सेवा के लिए मैजारिटी को उमंग-उत्साह है, प्लैन भी बनाते रहते हैं लेकिन सेवा के साथ, सन्देश देना यह भी आवश्यक है और बापदादा ने आज भी भिन्न-भिन्न वर्ग की, भिन्न-भिन्न स्थान की सेवा की अच्छी रिजल्ट देखी लेकिन अशरीरीपन का वायुमण्डल मेहनत कम और प्रभाव ज्यादा डालता है। सुना हुआ अच्छा तो लगता है, लेकिन वायुमण्डल से अशरीरीपन की दृष्टि से अनुभव करते हैं और अनुभव भूलता नहीं है। तो फरिश्तेपन की धुन अभी सेवा में विशेष एडीशन करो। कोई न कोई शान्ति का, खुशी का, सुख का, आत्मिक प्रेम का अनुभव कराओ। चलन में प्यार प्रेम और जो खातिरी करते हो, सम्बन्ध से, परिवार से वह तो अनुभव करके जाते हैं लेकिन अतीन्द्रिय सुख की फीलिंग, शान्ति का रूहानी नशा अभी वायुमण्डल और वायब्रेशन द्वारा विशेष अटेन्शन में रखो। विशेष अनुभव कराओ, कोई न कोई अनुभव कराओ। जैसे सिस्टम में प्रभावित होके जाते हैं ऐसी सिस्टम परिवार के प्यार की और कहाँ भी नहीं मिलती, ऐसे अभी कोई न कोई शक्ति का, कोई न कोई प्राप्ति

का अनुभव करके जायें। अभी 70-72 वर्ष पूरे हो रहे हैं, इस समय में रिजल्ट में क्या देखा! मेहनत की है, लेकिन अभी तक ब्रह्माकुमारियां काम कर रही हैं, ब्रह्माकुमारियों का ज्ञान अच्छा है। देने वाला कौन! चलाने वाला कौन! सोर्स कौन! बाबा शब्द आप सबका सुन करके कहते भी हैं बाबा है इन्हों का, लेकिन मेरा वही बाबा है, बाप की प्रत्यक्षता अभी गुप्त रूप में है। बाबा बाबा कहते हैं, लेकिन मेरा बाबा, मैं बाबा का, बाबा मेरा, यह कोटों में कोई निकलता है।

तो संगमयुग का लक्ष्य क्या है? हम सब आत्माओं का बाप आ गया, वर्सा तो बाप द्वारा मिलेगा ना! वह प्रभाव फरिश्ता अवस्था से वायुमण्डल फैलेगा। इन्हों की दृष्टि से लाइट मिलती है, इन्हों की दृष्टि में रूहानियत की लाइट नज़र आती है, तो अभी तीव्र पुरुषार्थ का यही लक्ष्य रखो मैं डबल लाइट फरिश्ता हूँ, चलते फिरते फरिश्ता स्वरूप की अनुभूति को बढ़ाओ। अशरीरीपन के अनुभव को बढ़ाओ। सेकण्ड में कोई भी संकल्पों को समाप्त करने में, संस्कार स्वभाव में डबल लाइट। कई बच्चे कहते हैं हम तो हल्के रहते हैं लेकिन हमको दूसरे जानते नहीं हैं। लेकिन ऐसे डबल लाइट फरिश्ता, डबल लाइट उसकी लाइट छिप सकती है। छोटी सी स्थूल लाइट टार्च हो या माचिस की तीली हो लाइट कहाँ भी जलेगी, छिपेगी नहीं और यह तो रूहानी लाइट है तो अपने वायुमण्डल से उन्हों को अनुभव कराओ कि यह कौन हैं! चाहे जगदम्बा चाहे दादी ने कहा नहीं कि मुझे जानते नहीं हैं। अपने वायुमण्डल से सर्व की प्यारी। इसीलिए दादी का मिसाल देते हैं क्योंकि ब्रह्मा बाप के लिए भी सोचते हैं ब्रह्मा बाबा में तो शिवबाबा था, शिव बाप के लिए भी सोचते कि वह तो है ही निराकार, न्यारा और निराकार, हम तो स्थूल शरीरधारी हैं। इतने बड़े संगठन में रहने वाले हैं, हर एक के संस्कार के बीच में रहने वाले हैं, संस्कार को मिलाना अर्थात् फरिश्ता बनना। संस्कार को देख कई बच्चे दिलशिकस्त भी हो जाते हैं, बाबा बहुत अच्छा, ब्रह्मा बाप बहुत अच्छा, ज्ञान बहुत अच्छा, प्राप्तियां बहुत अच्छी, लेकिन संस्कार स्वभाव मिलाना अर्थात् सर्व के प्यारे बनना। कोई कोई के प्यारे नहीं, क्योंकि कई बच्चे कहते हैं कि कोई कोई से प्यार विशेषता को देख करके भी हो जाता है। इनका भाषण बहुत अच्छा है, इसमें फलानी विशेषता बहुत अच्छी है, वाणी बहुत अच्छी है, फरिश्ता बनने में यह विघ्न आता है। प्यारा भले बनाओ, लेकिन मैं आत्मा न्यारी हूँ, न्यारी स्टेज से प्यारा बनाओ। विशेषता से प्यारा नहीं। यह इसका गुण मुझे बहुत अच्छा लगता है ना वह धारण भले करो लेकिन इसके कारण सिर्फ प्यारा बनना वह रांग है। फरिश्ता सभी का प्यारा। हर एक कहे मेरा, अपनापन, ऐसी फरिश्ते अवस्था में विघ्न दो चीज़ें डालती हैं। एक तो देह भान, वह तो नेचुरल सबको अनुभव है, 63 जन्म का फिर फिर देहभान प्रगट हो जाता है और दूसरा है देह अभिमान, देह भान और देह अभिमान, ज्ञान में जितना आगे जाते हैं, तो स्वयं के प्रति भी कभी कभी देह अभिमान आ जाता है, वह अभिमान नीचे गिराता है, देह- अभिमान क्या आता है? जो भी कोई विशेषता है ना, उस विशेषता के कारण अभिमान रहता है, मैं कोई कम हूँ, मेरा भाषण सबको पसन्द आता है। मेरी सेवा का प्रभाव पड़ता है, कोई भी कला मेरी हैण्डलिंग बहुत अच्छी है, मेरा कोर्स कराना बहुत अच्छा। कोई न कोई ज्ञान में आगे बढ़ने में, सेवा में आगे बढ़ने में यह अभिमान अपने प्रति भी आता और दूसरे के गुण या कला, या विशेषता प्रति भी प्यार हो जाता। लेकिन याद कौन आयेगा? देहभान ही याद आयेगा ना, फलाना बुद्धि का बहुत अच्छा है, मेरी हैण्डलिंग बहुत अच्छी है, यह अभिमान सेवा वा पुरुषार्थ में आगे बढ़ने वालों को अभिमान के रूप में आता है। तो यह भी चेक करना है, और अभिमान वाले को अभिमान है इसको चेक करने का साधन है, अभिमान वाले को जरा भी कोई ने अपमान किया, उसके विचार का, उसकी राय का, उसकी कला का, उसकी हैण्डलिंग का अपमान बहुत जल्दी महसूस होगा। और अपमान महसूस हुआ, उसकी और सूक्ष्म निशानी क्रोध का अंश पैदा होता है, रोब। वह फरिश्ता बनने नहीं देता। तो वर्तमान समय के हिसाब से बापदादा फिर से इशारा दे रहा है, अपना संगमयुग का लास्ट स्वरूप फरिश्ता अब जीवन में प्रत्यक्ष करो, साकार में लाओ। फरिश्ता बनने से अशरीरी बनना बहुत सहज हो जायेगा। अपनी चेकिंग करो, सूक्ष्म रूप में भी लगाव कोई विशेषता या अपनी या और किसकी, अभिमान तो नहीं है? कई बच्चों की छोटी सी बात भी होगी ना, तो अवस्था नीचे ऊपर हो जाती है। दिलखुश, चेहरा खुश उसके बजाए या चिंतन वाला चेहरा या चिंता वाला चेहरा, और चलते चलते दिलशिकस्त भी हो जाते। दिलखुश के बजाए दिलशिकस्त। तो समझा, अब अपने संगमयुग की लास्ट स्टेज फरिश्तेपन के संस्कार इमर्ज करो। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, फालो फादर करना है ना। बात करते करते लास्ट में कई बच्चों को अनुभव है, सुनाने आये समाचार लेकिन समाचार से परे, आवाज से परे स्थिति का अनुभव किया हुआ देखा है। बातों का समाचार सुनाने, बहुत प्लैन

बनाकर आते यह बताऊंगा, यह बताऊंगा, यह पूछूंगा लेकिन सामने आते क्या बोलना था वही भूल जाता। तो यह है फरिश्ता अवस्था। तो क्या आज पाठ पक्का किया? मैं कौन? फरिश्ता। किसी बातों से, किसी विशेषताओं से, अपनी विशेषता से, देह अभिमान से परे डबल लाइट फरिश्ता क्योंकि फरिश्ता बनने के बिना देवता का ऊंचा पद नहीं मिलेगा। सतयुग में तो आ जायेंगे, क्योंकि बच्चे बने हैं, वर्सा तो मिलेगा लेकिन श्रेष्ठ पद नहीं। जो वायदा है सदा साथ रहेंगे, साथ साथ राज्य करेंगे, तख्त पर भले नहीं बैठे लेकिन राज्य अधिकारी बनें, वहाँ की राज्य सभा देखी है ना। जो भी राज्य सभा के अधिकारी हैं, वह तिलक और ताजधारी, राज्य का तिलक, राज्य की निशानी ताज। तो बहुत समय से स्वराज्य अधिकारी, बीच-बीच में नहीं। बहुत समय के स्वराज्य अधिकारी तख्त पर भले नहीं बैठे लेकिन रॉयल फैमिली के अधिकारी बन जाते हैं। अच्छा।

अच्छा आज जो पहली बारी आये हैं वह उठो। अच्छा। पौनी सभा तो उठी हुई है। अच्छा जो भी पहली बारी आये हैं उन सभी को बाप से साकार में मिलने की, पहले बारी की जन्म की मुबारक हो। बापदादा का सभी आये हुए बच्चों को यही वरदान है कि आये, टूलेट के समय हैं लेकिन नये आये हुए बच्चों प्रति एक विशेष वरदान है कि कभी भी यह संकल्प नहीं करना कि हम आगे कैसे जा सकते? टूलेट आने वालों को अभी तो लेट में आये हो टूलेट में नहीं आये हो। और अभी आप सबको विशेष बापदादा और निमित्त बने हुए ब्राह्मण परिवार के भाई बहिनों की विशेष सहयोग की भावना है कि अगर आप थोड़े समय को एक एक सेकण्ड को सफल करने का, क्योंकि थोड़े समय में बहुत पाना है, एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं गंवाना, कर्मयोगी बनके चलना, कर्म नहीं छोड़ना है लेकिन कर्म में योग एड करते, कर्म और योग का बैलेन्स रखना है। तो बैलेन्स रखने वाले को ब्लैसिंग एकस्ट्रा मिलती है। तो जो भी लेट में आये हो, टूलेट अभी आगे लगना है, आपको चांस है, थोड़े समय में बहुत पुरुषार्थ कर सकते हो। बापदादा वरदान देते हैं कि हिम्मते बच्चे मददे बाप है ही।

सेवा का टर्न गुजरात का है:- अच्छा गुजरात के जो नये पहली बारी आये हैं वह उठो। जो बाप से पहले बारी मिलने आये हैं गुजरात के, हाथ हिलाओ। (गुजरात से 6 हजार आये है) अच्छा हुआ, आ तो गये। अपना मधुबन बापदादा का मधुबन तो देखा। इसकी भी मुबारक हो। अच्छा। अभी सभी गुजरात के उठो। बापदादा शुरू से गुजरात को मधुबन का कमरा समझते हैं। सबसे नजदीक सहयोगी, स्नेही और अभी वर्तमान समय बापदादा ने देखा रिजल्ट में तो जो बापदादा ने होमवर्क दिया था, कि हर एक ज़ोन आपस में मिलके ज़ोन को निर्विघ्न बनाने का प्रोग्राम बनाके और निर्विघ्न बनाओ, तो बापदादा ने देखा सभी ज़ोन अपने अपने रूप में करते होंगे लेकिन गुजरात ने हर मास में रिकार्ड दिखाया, हर मास में टापिक और समाचार की लेन देन इससे संगठन में उमंग आता है। अलग अलग पुरुषार्थ करते हैं ना उससे अगर संगठन में नियम प्रमाण, कायदेमुजीब प्रोग्राम रखते हैं तो उससे अटेन्शन अच्छा होता है। निर्विघ्न बने या नहीं बनें वह रिजल्ट अभी आनी चाहिए कि इस प्रोग्राम चलते किस किस में अन्तर आया है, क्लास चले, यह तो मुबारक है। टापिक निकाली है यह भी मुबारक है लेकिन प्रैक्टिकल में अन्तर क्या आया है, वह रिजल्ट अभी आनी चाहिए। बाकी बापदादा मुबारक देते हैं कि होमवर्क को बुद्धि में रख पुरुषार्थ किया है, तो पुरुषार्थ का बाबा बधाई दे रहा है। ऐसे ही छोटे छोटे ग्रुप बनाओ, जैसे देखा है बापदादा ने तो यह वर्गीकरण का जो ग्रुप बनाते हैं, तो ग्रुप टर्न बाई टर्न आपस में भी मिलते रहते और छोटा ग्रुप होने के कारण आपस में लेन देन कर सकते हैं, बाकी वर्गीकरण वाले भी बहुत आये हैं। उन्हों को भी बापदादा यही कह रहे हैं, कि जैसे सर्विस के प्लैन बनाते हो, रिजल्ट में बापदादा ने देखा, तीन चार की रिजल्ट भी आई है लेकिन जैसे सेवा का प्लैन बनाते हो और उसको प्रैक्टिकल में करते हो, और प्रैक्टिकल में जो सहयोगी बने हैं, सहयोगी कम बने हैं, स्नेही बने हैं, तो जैसे वह रिजल्ट निकालते हो, वैसे हर वर्ग को धारणा के लिए अपने वर्ग को निर्विघ्न बनाने के लिए भी अटेन्शन देना चाहिए। कोई कोई करते हैं, धारणा का प्वाइंट भी रखते हैं लेकिन रिजल्ट किया नहीं किया, वृद्धि है या नहीं है, परिवर्तन हुआ या नहीं हुआ, वह रिजल्ट भी आनी चाहिए। क्या रिजल्ट रही? परिवर्तन का कोई ऐसा दृष्टान्त दिखाना चाहिए। जैसे सेवा पर अटेन्शन देते हो तो सेवा वृद्धि को तो पाई है ना, बापदादा खुश है लेकिन अभी धारणा के ऊपर अटेन्शन और चाहिए। क्योंकि अन्त में सेवा चाहेंगे तो भी नहीं कर सकेंगे, अभी कर ली सो कर ली, उस समय फरिश्ता लाइफ या अशरीरी बनने का सेकण्ड में बिन्दु लगाने का यही काम में आना है। और अचानक होना है। इसका अभ्यास अगर सेवा भी की, लेकिन इसका अभ्यास कम होगा, सेवा में ही लगे रहे, सेवा में लगना है लेकिन दोनों का बैलेन्स चाहिए। बापदादा बार-बार

इशारा दे रहा है कि अचानक होना है और ऐसी सरकमस्टांश में होना है इसीलिए बाप को उल्हना कोई नहीं दे कि आपने बताया नहीं। बार-बार भिन्न-भिन्न ईशारे दे रहे हैं। सेवा का फल मिलता है, सेवा की मार्क्स, क्योंकि चार सबजेक्ट हैं ना तो सेवा की सबजेक्ट की माकर्स मिलेंगी लेकिन और तीन सबजेक्ट, अगर एक सबजेक्ट में आपने मार्कस ले ली और तीन में कम ली तो नम्बर क्या मिलेगा? चार ही में फर्स्ट नम्बर आना चाहिए। यह बापदादा की हर बच्चों के प्रति शुभ आश है। तो बाप की आशाओं के सितारे कौन हैं? हाथ उठाओ। बाप की आशाओं के सितारे हो तो बापदादा की यही सबसे बड़ी आश है कि चार ही सबजेक्ट में नम्बर अच्छा हो। नहीं तो पास विद आनर में नहीं आयेंगे। महारथी उसको कहा जाता है जो चार ही सबजेक्ट में अच्छे नम्बर ले। कहने में भले महारथी महारथी आता है, लेकिन अगर नम्बर नहीं लेते तो बापदादा के उम्मीदों के तारे हैं, आशाओं के तारे नहीं। तो बनना क्या है? उम्मीदों के सितारे? आशाओं के सितारे, सफलता के सितारे। तो गुजरात अच्छा लक्ष्य तो रखा है। लेकिन रिजल्ट बापदादा को भेज देना क्योंकि आपको देख करके फिर औरों को भी उमंग आयेगा, कि इस संगठन से फायदा क्या हुआ। प्लैन तो अच्छा है और रेग्युलर करते आये हैं, इसकी मुबारक भी है। ठीक है। मुबारक भी है और होमवर्क भी है। दोनों है। अच्छा।

इस ग्रुप में 5 वर्ग की मीटिंग है:- (बिजनेस, महिला, समाज सेवा, ट्रांसपोट और ग्राम विकास)

अच्छा सभी ने अपनी निशानी रखी है। अभी जिसने जो कुछ निशानियां बनाई है ना, उसका एक एक सामने आवे। बोर्ड है या सिम्बल है। एक दो आ जाओ। सब आगे आओ। यह भी अच्छा है। अभी ऐसे सामने फेश करो। अच्छा। अच्छा किया है। यह भी एक एकस्ट्रा उमंग-उत्साह भरने का साधन है। अभी प्लेन किसने नहीं देखा हो तो प्लेन तो देख लिया। (ट्रांसपोर्ट वालों ने फ्लैक्स पर प्लेन बनाया है) अपने प्लेन में तो चढ़ते हो ना! इसमें तो टिकेट खर्च करनी पड़ेगी और आपका प्लेन, मन और बुद्धि का प्लेन सेकण्ड में कहाँ से कहाँ तीन लोकों में पहुंच सकता है। मेहनत अच्छी की है। अच्छा।

सभी को खुशी होती है ना, अच्छा कौन से विंग्स हैं। अच्छा बिजनेस वाले हाथ उठाओ। अच्छा यह बिजनेस वाले और ट्रांसपोर्ट, ट्रांसपोर्ट दोनों ही ट्रांसपोर्ट ने हाथ उठाया। दोनों ही उठाओ। अच्छा। महिलायें। अच्छा। इनकी निशानी बता रही है। बाबा की अभी एक बात प्रैक्टिकल में लाना रह गई है, वह ग्रुप कहाँ भी इकट्ठा करो। मानों जोन में इक्ट्ठा करो या दो तीन ज़ोन जो नजदीक हैं उसमें जो वी.आई.पी स्नेही, आया गया वह नहीं लेकिन स्नेही है कनेक्शन में है और रिलेशन रख रहा है, रिलेशन यह है, जो रोज़ मुरली सुनने नहीं भी आता है, तो फोन में भी सुनता रहे, वरदान सुने, स्लोगन सुने, और जो लास्ट में मुरली का सार होता है, वह चलते फिरते फोन में भी सुने, कनेक्शन रखे। ऐसे नहीं 6 मास के बाद बुलाओ तो आ गया। कनेक्शन में रहे तो रिलेशन पक्का होगा। कनेक्शन ऐसा होता है जो खींचता है। जब वर्गीकरण होगा तब आयेगा, एक साल के बाद उसको रिलेशन नहीं कहा जाता। नजदीक का रिलेशन हो, अपनी प्रेजन्ट मार्क तो डाले। फोन में ही डाले, लेकिन मैं हूँ, यह प्रेजन्ट मार्क तो डाले। और जितना हो सके उतना ज़ोन या दो तीन ज़ोन मिलके, जहाँ नजदीक पड़ता हो आने जाने में, 6 मास में 3 मास में एक संगठन तो करो। और एक दो में पहले अपने अपने ज़ोन में करो, दो तीन नजदीक वाले मिलके करो और फिर एक बारी सबको इकट्ठा एक स्थान पर करें तो परिचय भी हो जावे ना, कौन कौन अनुभव कर रहा है, मानों डाक्टर्स हैं, अभी देखें तो इतने बड़े बड़े डाक्टर्स भी अभ्यास कर रहे हैं तो प्रभाव तो पड़ता है ना। ऐसे ही सभी वर्ग वालों को एक दो को देख करके प्रभाव पड़ता है। यह भी चल रहे हैं, यह भी चल रहे हैं और एक दो का अनुभव सुनते हैं तो भी प्रभाव पड़ता है। तो अभी दूसरा टर्न आपका आवे उसमें यह रिजल्ट बताना। कितने बार संगठन किया, कहाँ कहाँ किया, कितने आये, उसकी रिजल्ट। यह तो सहज है ना। सहज है या मुश्किल है? सब वर्ग करेंगे ना। दूसरे भी सुनेंगे। अच्छा।

डबल विदेशी भाई बहिनें:- (80 देशों से आये हैं) अच्छा है, यह जो प्रोग्राम बनाया है, मधुबन में सबका संगठन हो, यह बापदादा को बहुत पसन्द है क्योंकि मधुबन में आने से परिवार कितना बड़ा है! सेवायें चारों ओर कैसे हो रही हैं! भारत वाले फारेन की सेवा से लाभ उठाते कि फारेन में यह कर रहे हैं, हम भी करें और फारेन वाले इन्डिया के समाचार सुनकर अपने स्थान में जहाँ हो सकता है, वहाँ फायदा लेते हैं और फारेन के फारेन में मिलना, मुश्किल है, मधुबन में डबल फायदा है। बापदादा से मिलना भी हो जाता और परिवार से मिलना भी हो जाता। तो अभी कुछ समय से कायदे प्रमाण मधुबन में मीटिंग या छोटे छोटे संगठन यह बापदादा को बहुत पसन्द आया और प्लैन भी अच्छे-

अच्छे बनाते रहे हो और प्रैक्टिकल में भी कर रहे हो, इसकी भी हर साल वृद्धि देखक्र बापदादा चारों ओर के डबल फारेनर्स को बधाईयां देते हैं, बधाईयां देते हैं। और अभी जितना-जितना संगठन होता रहा है ना, तो उससे एक दो का अनुभव सुनने से कईयों को अनुभव द्वारा भी बल मिलता है। मानों कोई दिलशिकस्त हो जाता है तो दूसरे का अनुभव सुनता, तो यह सदा खुशमिजाज रहता है इसकी शक्ल कभी मुरझाये नहीं, दिलखुश। तो एक दो का अनुभव सुनने से उल्हास में आ जाते। एक दो का अनुभव कम नहीं होता है, हर एक को ड्रामानुसार कोई न कोई विशेषता बाप द्वारा मिली हुई है। तो वह अनुभव सुनने से उमंग आता है, यह कर सकता है तो मैं क्यों नहीं कर सकता! कभी भी दिल छोटी नहीं करना। बड़ी दिल, बड़ा बाबा। छोटा बाबा है क्या, बड़े ते बड़ा बाबा है, तो बच्चों की दिल सदा बड़ी। बापदादा का स्लोगन है बड़ी दिल सच्ची दिल, साफ दिल तो हर मुराद हांसिल। जो भी किचड़ा आवे ना, किचड़े की दुनिया है ना, तो कभी वायुमण्डल में किचड़ा उड़के आ जाता है लेकिन किचड़ा अपने पास नहीं रखो। जैसे स्थूल कमरे में सोते हो और किचड़ा हो जाए तो क्या होता है, सफाई नहीं करो तो मच्छर हो जाते हैं, फिर बीमारियां होती हैं, तो यह भी अगर मन में कोई भी बात रख ली, निकाला नहीं तो वह वृद्धि को पाती रहती। बस बाबा, मेरा बाबा कहो तो हाजिर बाबा, बंधा हुआ है। बच्चा, बाप का बच्चा, भगवान का बच्चा, याद करे मेरा बाबा और बाबा हाज़िर नहीं हो, यह हो नहीं सकता। आपके पास बाप को बांधने की रस्सी है! क्या है? दिल का प्यार। कईयों को बाप से प्यार है, नहीं है यह नहीं कहेंगे, लेकिन दो प्रकार का प्यार है - एक है नॉलेज के आधार से, मैं आत्मा हूँ, शरीर तो हूँ ही नहीं और आत्मा का बाप परमात्मा ही है और परमात्मा ज्योति के सिवाए और कोई सबका परमात्मा हो ही नहीं सकता। तो बाप बाप तो है, ज्योति स्वरूप है, सहयोग देता है, लेकिन हर समय दिल के स्नेह से मेरा बाबा निकले ऑटोमेटिकली। साथी बनाया जाता है समय के लिए, आईवेल के लिए साथी काम में आता है, तो आपने बाप को कम्बाइन्ड रखा है, साथी बनाया है तो समय पर साथ लो। स्नेह से याद करो, एक है नॉलेज के आधार से स्नेह, एक है दिल के प्यार से स्नेह। तो चेक करो दिल का प्यार है? प्यार वाले को भूलना मुश्किल है। रिवाज़ी चीज़ देखो, सुगर वालों को मीठा मना है, और उसका प्यार है मीठे से, तो मीठा याद आता है, भूलता है? डाक्टर की दवाई करेंगे लेकिन मीठा खायेंगे। तो चीज़ से प्यार है तो कहने से भी नहीं छोड़ते हैं और यह तो बाप है, सर्व प्राप्ति का अनुभव कराने वाला है। सभी सुन रहे हैं ना। भले निमित्त फारेनर्स हैं लेकिन सभी सुन रहे हैं, तो अभी चेक करो कि दिल का प्यार है? खुदा को दोस्त बनाया है? दोस्त किसलिए बनाते हैं? बाप से भी दोस्त से ज्यादा प्यार होता है। तो खुदा दोस्त बनाया है ना! कोई भी बात आवे, बाबा आप सम्भालो। छोटे बच्चे बन जाओ, बड़े नहीं बनो। तो बाप ले लेगा। प्यार की रस्सी से ऐसा बांधके रखो जो हिल नहीं सके। समझा! सभी ने समझा ना! कई बार कहते हैं बाबा आज मुझे बाबा भूल गया। बापदादा को सुनके कितना आश्चर्य लगता होगा! भूल गया! 63 जन्म भूले, अभी भी भूल गये। एक जन्म और छोटा सा जन्म! 21 फुल जन्म भूल गये, अभी भी भूलना रहा हुआ है क्या? इसीलिए अभी माया की चतुराई को समझ जाओ। माया की कभी-कभी खातिरी भी कर देते हैं। कहते हैं हम समय पर तैयार हो जायेंगे। अभी तो टाइम पड़ा है ना थोड़ा! अभी टूलेट का बोर्ड नहीं लगा है ना! हम हो जायेंगे और माया भी सहारा देकरके, खातिरी देकरके चाय पानी पीती रहती है। बाप को फालो फादर करने के बजाए, माया को फालो कर लेते हैं। पुरुषार्थी हैं ना, सम्पूर्ण थोड़ेही बने हैं, यह तो होता ही है ना! यह है माया के फालोअर बनना। तो अभी बापदादा कभी भी चक्र लगाने आये तो सदा शक्ल देखे तो कैसी शक्ल देखे! कभी कभी शक्ल अच्छी नहीं होती है। सोच में, सोच बहुत करते हैं। क्या करूं, यह करूं, नहीं करूं, फायदा होगा, ठीक होगा, सोचते बहुत हैं। बाप को फालो करो, ब्रह्मा बाप पहुंच गया ना! ज्यादा सोचते क्यों हो? सिर्फ फालो फादर। व्यर्थ संकल्प आते हैं, लहर आ जाती है। यह सिर्फ फारेनर्स को नहीं सुना रहे हैं, सबको सुना रहे हैं।

(विदेश के डेविड भाई से) बापदादा ने देखा भी और जाना भी कि बच्चे को उमंग-उत्साह बहुत है। अभी उमंग-उत्साह को प्रैक्टिकल में लाने में सहयोगी बन करके सहयोग लेते रहेंगे, सहयोग देते रहेंगे, तो आगे जा सकते हो। उमंग उत्साह कभी ढीला नहीं करना, बातें आयेंगी। लेकिन उमंग उत्साह के पंख ढीले नहीं करना। उड़ते रहना। पंख है उड़ने के लिए। उमंग-उल्हास जरा भी कम हुआ तो ऊंचा उड़ नहीं सकते। बात चली जाती है लेकिन खुशी नहीं जाये, उमंग उत्साह नहीं जाये। बाकी बापदादा ने देखा उमंग अच्छा है अब सदा कायम रखना। जम्प दे सकते हो।

फिलीपीन्स की सहानी बहन से - यह तो पुरानी है। अच्छे हैं। सेवा करके साथ लाई है। अच्छे हैं, सुना ना

- उमंग-उत्साह कब नहीं छोड़ना। उड़ते रहना। कोई भी बात आये आप उड़ जाओ, बात नीचे रह जायेगी, आप ऊपर हो जायेंगी। अच्छा।

चारों ओर के दिलखुश, दिल सच्ची, दिल साफ वालों को हर संकल्प, मुराद हांसिल। इसका अर्थ है जो भी संकल्प किया उसकी सफलता प्राप्त होना। तो ऐसे तीनों विशेषता, बड़ी दिल, साफ दिल और सच्ची दिल वाले, ऐसे चारों ओर के बच्चों को बापदादा देख पदमगुणा से भी ज्यादा खुश होते हैं और ऑटोमेटिक गीत बजता है, वाह! वाह मेरे बच्चे वाह! सदा मुबारक के पात्र बच्चे वाह! सदा बाप को साथी बनाके चलने वाले, हाथ में हाथ मिलाके, हाथ है श्रीमत, तो सदा हाथ में हाथ मिलाके उड़ने वाले, चलना तो खत्म हुआ, उड़ने वाले, श्रीमत को हर कदम में ब्रह्मा बाप को फालो करने वाले और सोचो नहीं, करूं नहीं करूं, ठीक होगा, नहीं होगा, पता नहीं पसन्द आयेगा, नहीं आयेगा। फालो करो, ब्रह्मा बाप ने क्या किया, जो बाप ने किया वह राइट है, सोचने की जरूरत नहीं। फालो करना तो सहज है ना। सोचने की क्या जरूरत। फिर माथा भारी हो जाता है। फिर कहते हैं आज मुझे पता नहीं क्या हुआ है, भारी भारी हो गया है। क्योंकि कोई न कोई बात पर सोचने लग जाते हैं।

तो सभी चारों ओर के बच्चों को बापदादा के दिल की दुआयें और पदमगुणा बधाईयां हो। जो शिव रात्रि पर अपनी सेवा में रहेंगे, उन्हों को अभी से शिवरात्रि आपके बर्थ डे की दुआयें और मुबारक दे रहे हैं और आने वाले अथवा जो पत्र ईमेल भेजते हैं उन्हों का सेकण्ड से भी कम समय में बापदादा के पास पहुंच जाता है। उन्हों को भी और बापदादा की प्यासी आत्मायें, बांधेलियां जो मार को भी गले का हार बना देती हैं, ऐसी आत्माओं को भी यादप्यार और नये-नये स्नेही आत्मायें जो अभी निकल रही हैं, लेकिन कम। स्नेही और सहयोगी डबल होना चाहिए। तो चारों ओर के सभी युवा, वृद्ध, बच्चे, मातायें, पाण्डव, सभी को इनएडवांस आपके, बाप के बर्थ डे की मुबारक हो। अच्छा।

दादियों से:- सभी नम्बरवन हैं ना! कभी भी नम्बरवार में नहीं आना, नम्बरवन। बाप के बनके नम्बरवार हो गये तो क्या बड़ी बात है! नम्बरवन। नम्बरवन आओ लेकिन निमित्त और निर्माण बन नम्बरवन। (निर्मलशान्ता दादी की याद दी है)

दादी शान्तामणि से:- हिम्मत में नम्बरवन है, इसीलिए बापदादा हिम्मते बच्चे मददे बाप, खुश होते हैं।

रमेश भाई से:- (रमेश भाई का आज 75 वां जन्म दिन है) जन्म दिन की मुबारक हो। अच्छा है। इस जन्म दिन पर कुछ न कुछ बापदादा को देना है, जो भी जो समझो, अच्छा।

डबल विदेशी बड़ी बहिनों से:- देखो ड्रामानुसार जो निमित्त बने हुए हैं, सब भारत के ही हैं। (जयन्ती बहन से) इसका भी भारत में जन्म हुआ, डायरेक्ट ब्रह्मा बाप द्वारा भारत में जन्म हुआ। पहले पहले सेवास्थान पर बाबा ने भेजा। तो सब देखो, क्योंकि आपका फाउण्डेशन पक्का है ना, पालना भी तो ली है ना। चाहे पीछे आई लेकिन पालना डायरेक्ट ली है, यह भाग्य है। आप (जयन्ती बहन) और रजनी, रजनी का भी भाग्य है। फोन पर भी मुरली सुनती थी। (मुरली भाई) पार्ट दोनों बजाये लेकिन इस तरफ चला तो बहुत मजबूत है। (गायत्री बहन ने भी याद भेजी है)

(सभी बड़ी बहनों से) अच्छा है संगठन में शोभता है। और जब आप सब आते हो तो अच्छा लगता है ना। कई फायदे हैं, बाप से मिलना, आपस में लेन देन करना और सर्विस की नवीनता लाना। यह बहुत अच्छा है क्योंकि अपने-अपने यहाँ सेवा तो करते हो लेकिन एक दो के अनुभव सुनने से उमंग आता है। बापदादा खुश है।

सरला दीदी से: ठीक है ना। हिम्मत अच्छी रखी है, मेहनत की है, फल निकल आयेगा। अच्छा है।

डाक्टर अशोक मेहता तथा रथ की (दादी गुल्जार की) सेवा करने वाली सभी बहिनों से:-

अच्छा है, रथ को तैयार कर दिया, इसकी मुबारक हो। सभी दिल से दुआयें दे रहे हैं आपको। अच्छा है। और डाक्टर्स की भी सेवा हो जाती है। वह भी समीप आ रहे हैं। बहुत अच्छा। यह सब सेवा बहुत अच्छी करती हैं, मुबारक हो। अच्छा। मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

विदाई के समय :- हर एक बाप का बच्चा बाप को प्यारे ते प्यारा है। इसीलिए सिर्फ विधिपूर्वक सभी को तो बिठा नहीं सकते, लेकिन आप सभी स्टेज पर भी हो, स्टेज से भी नजदीक दिल में बैठे हो। थोड़ा सा रखना पड़ता है थोड़ा। लेकिन एक एक बाप को प्यारा है, एक दो से प्यारा है। तो बापदादा की नज़र सिर्फ नजदीक नहीं जाती है, लास्ट तक जा रही है। एक एक समझे हम बाबा के सामने बैठे हैं। बापदादा सम्मुख सामने बैठने की दृष्टि दे रहा है। अच्छा।

''बर्थ डे पर फास्ट सो फर्स्ट डिवीजन में आने की गिफ्ट लेने के लिए हर श्वांस, संकल्प समर्थ हो, दिल बड़ी और सच्ची हो तो हर जरूरत पूरी होगी''

आज जीरो बाप अपने हीरो बच्चों से मिलने आये हैं। आज का दिन आप सभी भी बाप का और बाप के साथ अपना भी बर्थ डे मनाने आये हैं। तो बापदादा सर्व बच्चों को चाहे सम्मुख बैठे हैं, चाहे दूर बैठे दिल के नजदीक बैठे हैं, चारों ओर के बच्चों को सर्व सम्बन्ध से मुबारक दे रहे हैं। उसमें भी विशेष तीन मुबारक बाप, शिक्षक और सतगुरू के रूप की तीन बधाईयां पालना, पढ़ाई और वरदानों की चारों ओर के बच्चों को विशेष दे रहे हैं। सभी बच्चों को मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

आज इस विशेष जन्म को भक्त भी मनाते हैं लेकिन आप बच्चे जानते हो कि यह बर्थ डे बाप और बच्चों के अविनाशी स्नेह का जन्म दिन है। आदि से लेके बाप और बच्चे साथ हैं, साथ में विश्व परिवर्तन के कार्य में भी बाप बच्चों के साथ है, क्योंकि बहुत-बहुत बाप और बच्चों का स्नेह है। अभी भी साथ हैं और अपने घर जाना है तो भी साथ जाना है। बाप बच्चों के सिवाए नहीं जा सकता और बच्चे बाप के सिवाए नहीं जा सकते क्योंकि दिल के स्नेह का साथ है। घर के बाद जब राज्य में आयेंगे तो भी ब्रह्मा बाप के साथ-साथ राज्य करेंगे। तो सर्व जन्मों से यह जन्म सबसे प्यारा और न्यारा है। इस जन्म की जो वैल्यु है वह सारे कल्प में 84 जन्म में नहीं है, ऐसा स्नेही और साथ वाला विशेष यह हीरे तुल्य जन्म है। तो आप सभी अपना जन्म दिन मनाने आये हो या बाप का मनाने आये हो! कि बाप बच्चों का मनाने आये हैं और बच्चे बाप का मनाने आये हैं? चारों ओर भक्त भी शिव जयन्ती वा शिवरात्रि कहके मनाते हैं, बड़े प्यार से मनाते हैं बापदादा भक्तों को देख करके भक्तों को भी भक्ति का फल देते हैं। लेकिन आपका मनाना और भक्तों का मनाना फर्क है। वह रात्रि मनाते हैं और आप अमृतवेला मनाते हैं, अमृतवेला श्रेष्ठ वेला है। अमृतवेले ही बापदादा हर एक बच्चे को वरदानों से झोली भर देते हैं। सभी की वरदानों से झोली भरी हुई है ना! रोज़ वरदान वरदाता बाप से मिलता ही है। कितने वरदान आप एक एक बच्चे को बापदादा द्वारा मिले हैं, वह वरदानों से झोली भरी हुई है ना। तो सभी बड़े उमंग-उत्साह से पहुंच गये हैं। बापदादा भी बच्चों को देख बहुत-बहुत खुश हो रहे हैं और गीत गाते रहते वाह बच्चे वाह! बच्चे कहते वाह बाबा वाह! और बाप कहते वाह बच्चे वाह! क्योंकि जो भी बाप के बच्चे बने हैं वह सभी कोटों में कोई आत्मायें हैं। विश्व में कितनी कोट आत्मायें हैं लेकिन उनमें से आप बच्चों ने जिसको बाप कहते हैं लक्की और लवली बच्चे हैं उन कोटों में से कोई आप बच्चे हो। नशा है कि हमें कल्प कल्प के कोटों में कोई बच्चे हैं। कितने भी बड़े-बड़े मर्तबे वाले आत्मायें वर्तमान समय भी हैं लेकिन बाप को पहचान बाप का बर्थ डे मनाने वाले चारों ओर के पहचानने वाले बच्चे कोटों में कोई हैं। तो यह खुशी है कि हम कोटों में भी कोई हैं। नशा है! हाथ उठाओ। अविनाशी नशा है ना! कभी कभी वाला तो नहीं? सदा है और सदा ही रहेगा। माया पेपर तो लेती है, अनुभव है ना! माया का भी परमात्म बच्चों से ज्यादा प्यार है। लेकिन बच्चे जानते हैं कि माया का परमात्म बच्चों से आदि से अब तक सम्बन्ध है। माया और परमात्म बच्चे दोनों का आपस में कनेक्शन है, माया का काम है आना और आप बच्चों का काम क्या है? माया को दूर से भगाना। आने नहीं देना कि आने भी देते हो? नहीं। दूर से ही भगाओ। आने देते तो फिर उसकी आदत पड़ जाती है आने की। वह भी समझती है आने तो देते हैं ना, चलो। लेकिन बाप देखते हैं कि कई कई बच्चे माया को आने तो देते ही लेकिन खातिरी भी कर लेते, चाय पानी भी पिला लेते, पता है, कौन सी खातिरी करते हैं? माया के प्रभाव में आके यही सोचते कि अभी तो टूलेट का बोर्ड नहीं लगा है, अभी तो समय पड़ा है। पुरुषार्थ कर रहे हैं, पहुंच जायेंगे। तो माया भी समझती है एक तो आने दिया, दूसरा यह तो हमारे को साथ दे रहे हैं, खातिरी कर रहे हैं, तो जो माया को पहचान लेते हैं क्योंकि कोई कोई बच्चे पहचानने में भी गलती कर लेते हैं, माया की मत है वा बाप की मत है, न पहचानने के कारण माया के प्रभाव में आ जाते हैं। लेकिन बापदादा

अपने लक्की महावीर विजयी बच्चों को कहते हैं आने नहीं दो, अब आवे और फिर भगाओ, इसमें समय नहीं लगाओ क्योंकि समय कम है और आपका जो वायदा है, विश्व परिवर्तक बन विश्व सेवक बन विश्व की आत्माओं को बाप का परिचय दे मुक्ति का वर्सा दिलायेंगे, वह कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ है। उस कार्य को समाप्त करने में समय लगाना, अगर माया को भगाने में समय लगायेंगे तो विश्व परिवर्तक का जो वायदा है वह पूरा कैसे करेंगे! बाप के साथी हैं ना, जन्म से ही वायदा किया है, साथ रहेंगे अब भी, साथ चलेंगे..इसलिए अभी जो बाप से शक्तियां मिली हैं उस शक्तियों के आधार से माया को दूर से भगाओ। इसमें टाइम नहीं लगाओ। देखो, 70 वर्ष पुरुषार्थ करते रहे हो, अभी माया का आना और भगाना, अभी इसका समय नहीं है क्योंकि जानते भी हो, नॉलेजफुल तो हो ना। सारे ड्रामा की नॉलेज है, इसीलिए नॉलेजफुल बच्चे अभी समय किसमें लगाना है, दो खजाने बहुत जमा करने हैं। कौन से दो खजाने? एक संकल्प और दूसरा समय। दोनों खजाने महान हैं और आप सब जानते हो क्योंकि नॉलेजफुल बाप के नॉलेजफुल बच्चे हो। मास्टर नॉलेजफुल हैं ना। फुल? पुल नहीं, कोई कोई नॉलेजपुल हैं, नॉलेजफुल नहीं हैं। आप कौन हो? नॉलेजफुल हो, हाथ उठाओ। नॉलेजफुल कि नॉलेजपुल। सभी नॉलेजफुल हैं? हाथ उठाया, अच्छा। वाह! फुल नॉलेज आ गई है। माया को भगाने की नॉलेज है? पीछे वालों को है? अच्छा। झण्डियां तो हिला रहे हैं। माताओं को है? मातायें नॉलेजफुल हैं? डबल फारेनर्स, डबल फारेनर्स भी झण्डियां हिला रहे हैं। अच्छा, देखो कितना अच्छा दृश्य लगता है। झण्डियां तो अच्छी लग रही हैं। तो नॉलेजफुल अर्थात् माया को दूर से भगाने वाले। तो ऐसे हो? क्योंकि बापदादा ने पहले ही कह दिया है कि खजाने जमा करने की बैंक सिर्फ इस समय संगमयुग में है फिर सारा कल्प जमा करने की बैंक नहीं मिलेगी। जो अब जमा किया, वह काम में लगता रहेगा। लेकिन जमा करने की बैंक अब संगमयुग पर खुलती है। इसीलिए क्या कहते हो आप, सभी को सन्देश में सुनाते हो ना, अब नहीं तो कब नहीं। तो आप सबको याद है ना! अब नहीं तो कब नहीं। सदा याद रहता है यह? क्योंकि संगमयुग का जन्म सबसे है छोटा सा लेकिन अमूल्य जन्म है। इस जन्म का मूल्य सारा कल्प चलता है। तो चेक करते हो, हमारा जमा का खाता कितना है? जितना चाहते हो उतना जमा होता है? क्योंकि बापदादा ने पहले ही कह दिया है कि अभी चलने का समय समाप्त हुआ। उड़ने का समय है। पुरुषार्थ का समय पूरा हुआ लेकिन अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है। वह भी थोड़ा है। इसलिए बापदादा डबल विदेशियों को टाइटिल दिया है डबल तीव्र पुरुषार्थी। बोलो, डबल तीव्र पुरुषार्थी हो, हाथ उठाओ। डबल तीव्र पुरुषार्थी, पास। अच्छा। बापदादा तो जन्म की मुबारक के साथ आपको बधाई भी देते हैं। पदम पदम गुणा बधाईयां हो, बधाईयां हो, बधाईयां हो।

बापदादा ने देखा जो बापदादा ने होमवर्क दिया था, ओ.के. का। वह कई बच्चों ने अटेन्शन दिया है। लेकिन 100 मार्क्स बहुत थोड़ों के हैं। 50 परसेन्ट वाले ज्यादा हैं। लेकिन बापदादा यही चाहते हैं, सुनाये क्या चाहते हैं? बापदादा की यही हर एक आशाओं के दीपक, आशायें सम्पन्न करने वाले महावीर बच्चों की यही बाप की आशा है कि समय अनुसार अगर अब से बहुतकाल का चार्ट तीव्र पुरुषार्थ का जमा नहीं किया तो तीन शब्द बापदादा समय प्रति समय याद दिलाता है एक अचानक, दूसरा एवररेडी और तीसरा बहुत समय का खाता जमा क्योंकि बापदादा चाहते हैं कि अपने राज्य में, अभी तो खुशी है ना अपना राज्य आया कि आया। जैसे अभी सन्देश देते हो बाप आया है, ऐसे यह भी खुशखबरी सुनाते हो कि अपना दैवी राज्य सुख शान्तिमय राज्य आया कि आया। जब सबको यह सन्देश देते हो तो अपना पुरुषार्थ भी तीव्र बहुत समय का जमा करने वाला अपने राज्य में अन्त तक फर्स्ट जन्म से 21 जन्म फुल राज्य भाग्य के अधिकारी बनें। यह हिसाब बहुतकाल से स्मृति में रखो क्योंकि मजा नये घर में है। अगर दो तीन जन्म के बाद आये, दो तीन मास मकान को हो जाएं तो क्या कहेंगे, नया है या 3 मास हो गया है। तो बापदादा चाहते हैं कि एक एक बापदादा का लाडला बच्चा वाह वाह बच्चा, बाप के दिलतख्तनशीन बच्चा, पहले जन्म में ब्रह्मा बाप के साथी होके आये। पसन्द है! पसन्द है? पसन्द है? अच्छा। तो क्या करना पड़ेगा? करना भी तो पड़ेगा ना। पसन्द तो है, बाप को भी पसन्द है लेकिन करना क्या पड़ेगा? अब से, चलो बीती सो बीती, बापदादा माफ कर देंगे, बीती। अब से बर्थ

डे की सौगात बाप को क्या देंगे? कुछ तो सौगात देंगे ना बाप को। बाप का जन्म दिन मनाने आये हो, तो बाप को सौगात क्या देंगे? जो बाप की आशा है हर एक बच्चे में, लास्ट में फास्ट हो सकते हैं। जो पहले बारी आये हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा।

तो बापदादा सभी लास्ट आने वाले बच्चों को, पहले बारी आने की पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं। लेकिन एक भाग्य भी बता रहे हैं, भाग्य बनाने की मार्जिन है क्योंकि टूलेट का बोर्ड नहीं लगा है। अगर कोई लास्ट भी फास्ट पुरुषार्थ करे लास्ट सो फास्ट और फास्ट सो फर्स्ट डिवीजन में आ सकते हैं, फर्स्ट नम्बर नहीं, वह तो प्रसिद्ध हो गये हैं, लेकिन फर्स्ट डिवीजन में आ सकते हैं। पसन्द है? आने वाले नये बच्चों को पसन्द है? चांस है, बापदादा सीट दे देंगे लेकिन कुछ करना भी तो पड़ेगा। एक-एक श्वांस, एक-एक संकल्प अटेन्शन, हर श्वांस, हर संकल्प समर्थ हो। व्यर्थ न हो क्योंकि आप सबका चाहे पहले वालों का, चाहे पीछे वालों का लेकिन टाइटिल क्या है? समर्थ बच्चे हैं, कमजोर बच्चे नहीं। बापदादा यादप्यार क्या देते हैं? रोज़ का यादप्यार लाडले, सिकीलधे, दिलतख्तनशीन बच्चे, इसलिए बाप यह गोल्डन चांस दे रहा है लेकिन वाले लो। बाप देगा, बंधा हुआ है। है कोई तीव्र पुरुषार्थी। चांस है। टूलेट का बोर्ड लग गया फिर फिनिश। लेकिन बापदादा को जन्म की सौगात क्या देगी? जन्म उत्सव मनाने आये हो ना! बापदादा ने तो आप बच्चों के जन्म दिन पर आप सब बच्चों को विशष सौगात दी है कि 90 परसेन्ट आपका तीव्र पुरुषार्थ आज से अन्त तक अगर है तो 10 परसेन्ट बापदादा बढ़ा के देगा। मंजूर है। अभी व्यर्थ खत्म। जैसे देखो सतयुग के देवतायें आते हैं ना, तो उन्हों को पता नहीं यहाँ की भाषा क्या बोलते हैं। पुरुषार्थ शब्द कहेंगे ना, तो वो कहेंगे पुरुषार्थ क्या, क्योंकि प्रालब्ध वाले हैं ना। ऐसे आप तीव्र पुरुषार्थियों को स्वप्न में वा संकल्प में वा प्रैक्टिकल कर्म में व्यर्थ क्या होता है, उसकी समाप्ति हो। है हिम्मत? 10 परसेन्ट बाप ग्रेस में देंगे। है मंजूर। हाथ उठाओ। कितना परसेन्ट पक्का? 100 परसेन्ट, नहीं 101 परसेन्ट, क्योंकि बापदादा को बच्चों के बिना, बच्चों के साथ के बिना अच्छा नहीं लगता। बाप समझते हैं जब मेरा बाबा कह दिया, बाबा ने कह दिया मेरा बच्चा, तो बाप समान तो बनना पड़े। अभी दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। आप लोगों ने किताब छपाया है ना। सफलता की चाबी है दृढ़ संकल्प। तो संकल्प को कामन नहीं करो। आप हो कौन? अगर यहाँ का प्रेजीडेंट रिवाजी चलन चले तो अच्छा लगेगा, और आप कौन हो? आप तो तीन तख्त के निवासी हो। सबसे बड़ा तख्त बापदादा का दिलतख्त। तो दिलतख्त वाले पहले जन्म के साथी तो बनेंगे। भले तख्त पर एक बैठेगा लेकिन रॉयल फैमिली राज्य अधिकारी तो बन सकते हो। तो साथ निभाने वाले, घर तक तो साथ चलेंगे। बापदादा कैसे भी ले जायेंगे। वाया ले जाये या डायरेक्ट ले जाये लेकिन ले तो जायेंगे। तो क्या फिर घर में बैठ जायेंगे, ब्रह्मा बाप चला जायेगा और आप बैठ जायेंगे, अच्छा लगेगा? राजयोगी हो ना! क्या टाइटिल देते हो अपने को और दूसरे को भी क्या सिखाते हो? राजयोग या प्रजा योग? चाहे रॉयल प्रजा भी हो लेकिन प्रजायोगी तो नहीं हो। राजयोगी हो। तो सभी को बाप की आप सब बच्चों के प्रति दी हुई सौगात याद रहेगी? कब तक? अन्त तक। बापदादा ने देखा पुरुषार्थ बहुत करते हैं, बापदादा जब देखते हैं बच्चे मेहनत बहुत कर रहे हैं तो बच्चों की मेहनत देखकर बाप को अच्छा नहीं लगता है। इसीलिए मुहब्बत में रहो तो मेहनत खत्म हो जायेगी। मेरा बाबा, तो और मेरा खत्म। जब मेरा बाबा कहा तो अनेक मेरा उसमें खत्म हो गया ना। एक खिलौना लाते हो ना एक में एक, एक में एक होता है। एक में 10-12 समा जाते हैं, खिलौना बताते हो तो एक मेरा बाबा, मेरा बाबा कहने वाले हो ना। मेरा बाबा है ना! महारथियों का बाबा तो नहीं। मेरा बाबा। जब मेरा बाबा है तो हद का मेरा तेरे में समा लो। मेरे के बजाए तेरा कहो, कितना फर्क है। मेरा और तेरा कितना फर्क है? मे और ते। एक शब्द का फर्क है। तो पक्का है ना मेरा बाबा। पक्का है, कितना परसेन्ट? 100 परसेन्ट, 100 एक? ऐसे एक अंगुली उठाओ। जो 101 कहते हैं, वह उठाओ। बापदादा देख रहे हैं। टी.वी. में भी देख रहे हैं।

तो अभी शिवरात्रि, शिवजयन्ती मनाते हैं तो इसमें विशेष तीन बातें मनाते हैं। कमाल तो बापदादा, यह विधियां, यह उत्सव मनाने वाले जो कापी की है, उसको भी बधाईयां दे रहे हैं। विशेष 3 बातें मनाते हैं एक तो व्रत पालन करते

हैं। आप लोगों को कापी किया है लेकिन अल्पकाल का। आप लोग भी जब से बाप के बने तो दो व्रत धारण किये। एक पवित्रता का, सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं ब्रह्माचारी। कई बच्चे क्या करते? मुख्य बड़े बड़े विकारों का व्रत तो रख देते लेकिन छोटे छोटे जो हैं ना उसको छोड़ देते हैं लेकिन छोटे महान बलि हो जायेंगे। छोटे कम नहीं होते। समय पर धोखा देने वाले छोटे होते हैं। जैसे चूहा होता है ना है तो छोटा, लेकिन काटने में नम्बरवन है। फूंक भी देता है तो काटता भी है, जो पता ही नहीं पड़े। तो छोटे छोटे विकार, कई बच्चे क्रोध को समझते हैं यह तो होता ही है, करना ही पड़ता है। तो क्या उसको सम्पूर्ण आत्मा कहेंगे? बाल बच्चों सहित छोटे मोटे सहित व्रत धारण किया कि हम सदा के लिए पवित्र रहेंगे। किया है ना वायदा? कि एक ब्रह्मचर्य का व्रत लिया है? आपका टाइटिल क्या है? सम्पूर्ण निर्विकारी मर्यादा पुरुषोत्तम, यही टाइटिल है ना? कि थोड़ी थोड़ी मर्यादा कम। तो जो समझते हैं कि हमने मेरा बाबा कहा, मेरा बाबा में सबने हाथ उठाया, जब मेरा बाबा कहा तो बाप समान तो बनना पड़ेगा ना। बस एक मात्रा का फर्क करो, जहाँ मेरा आवे ना वहाँ तेरा याद रखो। एक शब्द का फर्क याद रखने से तीन तख्त के निवासी बनेंगे। तो एक व्रत सदा के लिए पवित्रता, मर्यादा पुरुषोत्तम का आपने सदा के लिए धारण किया वह एक दिन के लिए करते हैं, कापी तो की है लेकिन आटे में नमक समान की है। फिर भी की तो है। बुद्धिवान तो हैं ना! और दूसरा व्रत रखते हैं खानपान का। तो आप सबने भी शुद्ध भोजन का व्रत रखा है ना। कापी तो की है ना। आपने भी पूरा किया है, या कभी थक जाते तो कहते अच्छा कुछ खा लो। ऐसे तो नहीं? थक जाओ, या तंग हो, यूथ वाले क्या करते हैं? जो कुमार हैं, वह हाथ उठाओ। कुमार। अच्छा। बहुत अच्छा। कुमारियां हाथ उठाओ। फारेनर्स में कुमारियां, लाइट वाली कुमारियां हैं, (सिर पर छोटा बल्ब लगाया है) कुमारों ने पूरा व्रत निभाया है कि कभी थक जाते हैं? कुमार जो आते ही अभी भी विधि पूर्वक खानपान का व्रत निभाते हैं, वह हाथ उठाओ। पास हैं, अच्छा मुबारक हैं। आपको पदमगुणा मुबारक हैं। मेहनत तो थोड़ी लगती है लेकिन बाप के प्यार में यह मेहनत नहीं मुहब्बत है। तो देखो कापी तो की है ना। व्रत रखते हैं एक दिन के लिए। और आप व्रत रखते हो जीवन के लिए। एक जीवन का व्रत सदा आपेही चलता है। फिर मेहनत नहीं करनी पड़ती। एक जन्म छोटा सा इसमें मेहनत जरूर है, त्याग है। त्याग का भाग्य बनता है और साथ में क्या करते हैं? जागरण। आपने कौन सा जागरण किया है? वह नींद का त्याग करते हैं, आपने भी अज्ञान की नींद का त्याग किया है कि अज्ञान की नींद को, बिना समय के नींद को आने नहीं देंगे। झुटके नहीं खायेंगे। ऐसे ऐसे नहीं। ऐसे। लिया है ना व्रत यह भी। कईयों की आदत होती है ऐसे ऐसे करने की। बापदादा कहते हैं त्याग किया, दृढ़ संकल्प किया तो फिर फिर दृढ़ संकल्प ढीला क्यों करते हो? स्क्रू टाइट करना नहीं आता है? इसको टाइट करने का स्क्रू ड्राइवर है प्रतिज्ञा। अभी जो कार्य रहा हुआ है, कौन सा रहा हुआ है? बोलो। प्रत्यक्षता का। इसका ही पुरुषार्थ कर रहे हो ना। मेरा बाबा आ गया, यह झण्डा क्यों लहराते हो? कोई भी कार्य करते हो, झण्डा लहराते हो। आज भी झण्डा लहरायेंगे ना। किसका झण्डा लहरायेंगे? बापदादा का, सेवा का, बर्थ डे का झण्डा लहरायेंगे। जैसे झण्डा लहराते हो तो जब तक पूरा खुले नहीं, तब तक खोलते रहते हो। समाप्ति झण्डे की तब तक होती है जब तक फूल नहीं बरसा है। तो आप भी प्रत्यक्षता क्या चाहते हो? बाप की प्रत्यक्षता हो। तो जितनी जागरण की, व्रत लेने की, प्रतिज्ञा पक्की करेंगे तो प्रत्यक्षता जल्दी से जल्दी होगी। तो प्रत्यक्षता चाहते हो ना! तो समय को समीप लाने वाले कौन? आप सब हो ना! समय को समीप लाने वाले आप सच्चे सेवाधारी बच्चे हो। विश्व परिवर्तक बच्चे हो। तो बर्थ डे की सौगात मंजूर है! देना भी लेना भी, दोनों बताई। सिर्फ देनी नहीं है, लेनी भी है। हाथ उठाओ जो दोनों करेंगे। जो दोनों करेंगे? अच्छा। बहुत अच्छा। अच्छा। यह आपका चित्र इसमें आ रहा है। (टी.वी.में) तो जो कुछ थोड़ा फेल होगा ना उसको यह चित्र भेज देंगे। फिर से हाथ उठाओ। यहाँ निकल रहा है। अच्छा। अच्छा है, तो मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

बापदादा के पास चारों ओर से पदम पदमगुणा मुबारकें पहुंच गई हैं। हर एक दिल में कहता, वा पत्र में लिखता वा ईमेल करता, तो हमारी मुबारक सबसे पहले हो। तो बापदादा कहते हैं कि बापदादा ने सबकी मुबारक पहले पहले

स्वीकार की है। नम्बर नहीं लगाया है, सबकी इकट्ठी दिल की मुबारक स्वीकार कर ली। देखो दूर वाले जो देख रहे हैं वह भी ताली बजा रहे हैं। और चारों ओर मुबारक, मुबारक के गीत बज रहे हैं दिल में। यह गीत नहीं दिल के गीत बिना मेहनत के खुशी हुई और स्टार्ट हो जाते हैं। खुशी दिल के गीतों की चाबी है। वाह बाबा, मीठा बाबा कहा, यह चाबी है। है ना चाबी? कभी कभी चाबी नहीं। सदा खुश। बापदादा को कोई भी बच्चे का चेहरा, बोल या कर्म थोड़ा भी चिंतन वाला चिंता वाला, व्यर्थ संकल्प वाला, दुविधा वाला चेहरा देखते हैं ना तो अच्छा नहीं लगता। भगवान के बच्चे अगर सदा खुश नहीं रहेंगे, तो कौन रहेंगे! आप ही हो ना। चेहरा कभी भी चिंता वाला नहीं, शुभचिंतन। जब चिंता आवे ना किसी भी प्रकार की, तो बाप मेरे कम्बाइण्ड है, चिंता बाप को दे दो, शुभचिंतक आप बन जाओ। क्योंकि बापदादा सदा हर्षित रहते हैं ना तो बच्चे मुरझाये हुए हों, किसके बच्चे हैं? भगवान के। चेहरा कभी भी, चाहे पहाड़ आ जाए लेकिन पहाड़ को भी आप रुई बना सकते हो। बाप के साथ अपने को जोड़ लो तो क्या हो जायेगा? जो पहाड़ है वह रुई हो जायेगा क्योंकि सर्वशक्तिवान को साथ कर दिया ना। आप भले कमजोर हो लेकिन सर्वशक्तिवान आपके साथ कम्बाइण्ड है तो समय पर काम में लगाओ। कहने तक नहीं काम में लगाओ। तो सदा खुशनुमा चेहरा और दिल सदा खुशनसीब। बापदादा चैलेन्ज करे कि अगर खुशनसीब, खुशनुमा चेहरा देखना हो तो भगवान के सेन्टरों पर देखो, करें चैलेन्ज। करें चैलेन्ज? कभी मुरझाना नहीं पड़ेगा। क्यों मुरझायें? कोई कमी हो तो मुरझाओ। क्या कमी है? खुशी की खुराक, मानों आपको कमी है कोई भी, हेल्थ की वेल्थ की, तो खुशी के लिए क्या कहते हैं? खुशी जैसा कोई खजाना नहीं। तो वेल्थ हुआ ना। है वेल्थ आपके पास। खुशी है? हाथ उठाओ। खुशी है ना! तो वेल्थ है। और खुशी जैसा कोई भोजन नहीं, खुशी जैसी कोई खुराक ही नहीं है चाहे 36 प्रकार की भोजन हो लेकिन खुशी नहीं तो सूखा। और खुशी है तो सूखी रोटी 36 प्रकार का सुख देगी और बाप का वायदा भी है जो सच्ची दिल, साफ दिल, बड़ी दिल। तीन बातें याद रखो सच्ची दिल, साफ दिल, बड़ी दिल यह तीनों बातें अगर याद रहें, तो कोई भी समय दुनिया की हालतें कैसी भी हों लेकिन तीन ही बातें याद हैं तो आप सबको दाल रोटी बाप खिलायेगा। दो चार सब्जी नहीं खिलायेगा। दाल रोटी खिलायेगा। दाल रोटी खाओ प्रभु के गुण गाओ। अनुभव किया है ना! पुराने जो पहले पहले आये हैं उन्होंने अनुभव कर लिया है। कभी भूखे रहे? और ही जो गुड़ है ना उसको बोर्नवीटा बनाके बापदादा हाथ से खिलाता था। और बापदादा के हाथ से रोटी खाते सबका पेट भर गया। बोर्नवीटा बनाने आता है, नहीं आता? कैसी भी हालत हो यह गुड़ सब्जी नहीं हो, दाल नहीं हो, यह बोर्नवीटा बहुत सुख देता है, बनाने सीख जाओ। सभी यहाँ सीख के जाना। आईवेल में यह बोर्नवीटा बहुत काम में आयेगा। लेकिन चार बातें याद करना। ऐसे नहीं एक भी बात कम होगी तो ढूंढना पड़ेगा, सहज नहीं मिलेगा। इसलिए चेक करो चार ही बातें हैं - सच्चाई, तन की मन की, धन की, सम्बन्ध सम्पर्क की, दिल की सच्चाई, दिल बड़ी। दिल बड़ी होती है तो जो भी इच्छा होती है, जरूरत होती है वह पूर्ण हो ही जाती है। करके देखो। जहाँ दिल बड़ी है ना वहाँ सब इच्छायें हो जाती हैं। दिल छोटी करेंगे तो सब क्रियेशन छोटी हो जाती। बाप राज़ी तो क्या कमी है। तो पुरुषार्थ करो। तो फिर मुबारक की तालियां बजाओ।

सेवा का टर्न कर्नाटक ज़ोन का है, 8 हजार कर्नाटक से आये हैं:- अच्छा। टीचर्स भी काफी है। सभी टीचर्स को बापदादा खास बर्थ डे की मुबारक दे रहे हैं। क्यों खास दे रहे हैं? क्यों? क्योंकि ऐसे योग्य बनाया है जो यज्ञ सेवा के योग्य हो सके क्योंकि यज्ञ सेवा का चाहे 10 दिन है चाहे 11 दिन हैं लेकिन अगर यज्ञ सेवा अपने विधि पूर्वक, विधान पूर्वक किया तो यज्ञ की सेवा के 11 दिन 11 जन्म प्राप्त होता है। इसलिए यज्ञ सेवा का पुण्य वर्तमान समय जैसे अभी आपको खुशी हो रही है ना, है ना खुशी एकस्ट्रा खुशी। मधुबन में पहुंचना अर्थात् एकस्ट्रा खुशी का खजाना मिलना। तो ऐसे योग्य बनाकर लाये हैं, पुरुषार्थ कराया है इसीलिए टीचर्स को मुबारक हो। और मातायें, मातायें हाथ उठाओ, ज़ोन वाली, मातायें भी बहुत हैं। माताओं को भी मुबारक है क्यों? क्योंकि मातायें मधुबन तो सम्भालते हैं लेकिन सेन्टर्स भी सम्भालती हैं। बापदादा आदि से कहते हैं कि जहाँ सेन्टर पर मातायें हैं वहाँ भण्डारा और भण्डारी सदा भरती रहती है। अच्छा उन्हों को विशेष मुबारक। और पाण्डव, जो अधरकुमार हैं वह हाथ उठाओ। अधरकुमार,

देखो आपकी भी एक विशेषता है, जैसे माताओं की विशेषता है वैसे अधरकुमारों की भी विशेषता है। क्यों? क्या विशेषता है? क्योंकि जो दोनों आते हैं एक दो के साथी हैं कोई विघ्न नहीं है, एक मत हैं। नहीं तो दो मत में फिर भी खिटखिट होती है लेकिन जब दोनों एक मत हो जाते हैं तो अधरकुमार सेवा में बहुत आगे जाते हैं। समय निकाल सकते हैं। यूथ भी समय निकालते हैं लेकिन अधरकुमार डबल काम करते हैं। कौन सा डबल काम करते हैं? एक जो विश्व की सेवा है, उसमें समय ज्यादा दे सकते हैं और दूसरा अपने धन को भी जितना चाहें उतना सफल कर सकते हैं क्योंकि दोनों राज़ी हैं। तो अधरकुमार जितना अपना जमा करना चाहें, सफल करना चाहें, उतना कर सकते हैं क्यों कारण? कोई विघ्न नहीं। मन का विघ्न और बात है लेकिन सम्बन्ध का विघ्न नहीं। इसीलिए आप लोगों का भी यज्ञ में विशेष पार्ट है। और अधरकुमार कुमारियों को देख वृद्धि बहुत जल्दी होती है। प्रैक्टिकल देखते हैं ना कि सब वर्ग वाले आते हैं, परिवार में भी रहते हैं, सब कुछ करते हुए भी अपना भाग्य बना सकते हैं, पहले जो वायुमण्डल था कि घरबार छुड़ाते हैं, डर था और अभी समझते हैं कि डबल काम कर सकते हैं और मदद मिलती है। समझा। अच्छा।

80 देशों के 1200 डबल विदेशी आये हैं:- डबल फारेनर नहीं कहो, डबल तीव्र पुरुषार्थी। पसन्द है ना टाइटिल। डबल फारेनर्स तो कामन है। वह तो बहुत डबल फारेनर हैं। बापदादा को फारेनर्स के लिए खुशी होती है कि फारेनर्स मधुबन का श्रृंगार बन गये हैं। देखो, इण्डिया के भिन्न भिन्न देशों से आते हैं तो फारेनर्स कम क्यों हो, इसमें भी अच्छी रेस की है। 80 देश तो आ गये हैं। तो बापदादा एक बात में मैजारिटी को देख करके खुश है, कि जो भी आते हैं वह अभी एक कल्चर वाले हो गये हैं। सभी एक ब्राह्मण कल्चर वाले हैं। हैं ना! हाथ उठाओ। अभी विदेश की कल्चर वाले नहीं सब ब्राह्मण कल्चर वाले। आये थे, तो भिन्न भिन्न कल्चर वाले आये थे लेकिन कल्चर को भी पार कर लिया, यह बड़ी दीवार थी लेकिन इस बड़ी दीवार को क्रास कर लिया है, अभी लगता ही नहीं है कि यह कोई अलग हैं। अभी उठके देखे टी.वी. में सब ब्राह्मण कल्चर वाले। अच्छा लगता है ना एक ही कल्चर। जैसे शुरू में बच्चे आये थे तो भिन्न भिन्न वृक्ष की टालियां आई थी अपने अपने घरों से अपने वालों के साथ आये थे। लेकिन बापदादा ने शुरू में ही कहा कि आप भिन्न भिन्न वृक्ष की डालियां आई हो लेकिन यहाँ एक चंदन के बृक्ष मे समा जायेंगी। एक चंनद का वृक्ष बनेगा। आदि में आने वाले बच्चे आदि रत्न एक चंदन का वृक्ष बनें तब तो चंदन की खुशबू फैलाई। विदेश तक भी पहुंची ना। तब तो आये। तो विदेशी भी भिन्न भिन्न कल्चर में आये लेकिन अभी एक कल्चर। पसन्द है ना! पसन्द है हाथ उठाओ। कभी मुश्किल तो नहीं लगता। हाँ काम काज में रंगीन ड्रेस पहनते हो वह तो एलाउ है, बापदादा को फारेनर्स की एक बात और भी अच्छी लगती है, कौन सी? जो सेवा के निमित्त हैं, सेन्टर सम्भालते हैं, उन्हों की विशेषता है। खाना भी अपना तैयार करते, क्लास भी कराते, जिज्ञासु भी सम्भालते और बाहर का जॉब भी करते, भारत के बच्चे जब शुरू में गये, तो क्या देखा? विशेषता देखी वहाँ ही क्लास पूरा हुआ, सात दिन का आटा गूंद के रखेंगे, ब्रेड बनाके रखेंगे, क्लास पूरा हुआ जो कुछ दूध में डालने की भिन्न भिन्न चीजें अच्छी मिलती है वह खाके और भागे। तो सब काम फुर्त बनके किया और वृद्धि की, पहले सिर्फ एक लण्डन था, लण्डन वाले हाथ उठाओ। लण्डन वाले, एक से अनेक हो गये ना। इसीलिए बापदादा ने टाइटिल दिया है, डबल पुरुषार्थी। और फारेन की सेवा ने और धर्म वाले भी तैयार किये हैं। क्रिश्चियन तो हैं ही लेकिन मुस्लिम देश में भी कितने छिपे हुए बच्चे निकले हैं और आगे बढ़ रहे हैं। और तरीके से कर रहे हैं। बापदादा ने बच्ची को याद किया था। क्या नाम था? जो सेन्टर खोल रही है - (वजीहा बहन)। और नैरोबी वाले भी अच्छी कर रहे हैं। वह भी निकाल रहे हैं। तो टाइटिल पसन्द है ना। डबल पुरुषार्थी। हैं? डबल पुरुषार्थ है। अच्छा। निमित्त बनी हुई टीचर्स ने मेहनत अच्छी की है। इसलिए बापदादा सभी निमित्त टीचर्स को भी विशेष बधाई दे रहे हैं। अभी तो मेहनत का फल खा रहे हैं। पहले भी सुनाया है कि बापदादा का विश्व कल्याणकारी का टाइटिल विदेश सेवा से हुआ है। तो विशेष अलग अलग देश से पधारे हुए बच्चों को अपने देश वासियों सहित जो ब्राह्मण परिवार के हैं, उस सहित पदम पदमगुणा मुबारक बर्थ डे की हो। और विशेष बापदादा

को यह पसन्द है कि सब इकट्ठे होके विशेष मीटिंग करते हैं, आर.सी.ओ. एन सी ओ जो भी हैं आपस में इकट्ठे होके सारे वर्ष का प्लैन बनाते हैं और मधुबन के वायुमण्डल में बापदादा और विशेष निमित्त ब्राह्मणों की शुभ भावना शुभ कामना लेके जाते हैं तो इसकी रिजल्ट बहुत अच्छी है। बापदादा जो चाहता था, कभी चाहता था, लेकिन अभी वह रिजल्ट सामने आ रही है। इसकी भी मुबारक हो। तो बापदादा वाह बच्चे वाह! लवली बच्चे वाह! लक्की बच्चे वाह!, वाह वाह का गीत गाके मुबारक दे रहे हैं।

वर्ग वाले जो भी आये हों, वर्ग वाले, जो वर्ग वाले अपनी मीटिंग कर रहे हैं ना। मीटिंग भले करो, मीटिंग करना चाहिए। क्योंकि बापदादा ने जो कहा है वह अभी किया नहीं है। इसलिए मीटिंग करनी चाहिए और जैसे बापदादा ने कहा कोई भी स्थान पर इकट्ठे करो, मालूम तो पड़े कि वर्गीकरण के कनेक्शन वाले सहयोगी स्नेही कितने निकले हैं, और कौन से निकले हैं? बाकी अच्छा है चला रहे हो, चलाते रहो। अच्छा।

चारों ओर के बापदादा के दिलतख्तनशीन बच्चों को, चारों ओर के तीव्र पुरुषार्थी बच्चों को, चारों ओर के बापदादा ने जो गिफ्ट दी, उस गिफ्ट को स्वीकार करने वाले और जो बच्चों ने बापदादा को गिफ्ट दी, संकल्प से, उस संकल्प को सदा दृढ़ करने वाले ऐसे दृढ़ पुरुषार्थी, प्रतिज्ञा कर प्रत्यक्षता करने वाले सर्व बच्चों को बापदादा का बहुत-बहुत दिल का दुलार और दिल का यादप्यार स्वीकार हो और सभी बच्चों को बार बार बधाई, बधाई, बधाई।

दादियों से:- आपस में बैठे, सभी ने अपने अपने विचार दिये, विचार तो भिन्न भिन्न होंगे, लेकिन विचारों को समझ, रिगार्ड दे, एक दो में स्पष्ट करना। बिना स्पष्ट किये अन्दर नहीं रखें। अन्दर रखने से किचड़ा हो जाता है। कोई भी चीज़ अगर अन्दर रखो और सफाई नहीं करो तो क्या होता है? तो आप निमित्त जो बच्चे हैं, उनको बापदादा कहते है मुरब्बी बच्चे, पाण्डव भी हैं लेकिन जो निमित्त हैं वह मुरब्बी बच्चे, मुरब्बी बच्चों का संगठन बहुत जल्दी सभी को बहुत उमंग उत्साह में लाता है। बापदादा देख रहा है सभी ने अच्छा संकल्प किया है, कि हमें सभी को नचाना है। जो बापदादा ने चार बातें कही ना, वह एक एक में लानी हैं। अगर चार बातें मैजारिटी में आ गई, तो समय आया कि आया। तो निमित्त आप हो, सब समझें कि यह 10-12 नहीं, एक हैं। और बापदादा देखते हैं कि सभी को दिल में यह संकल्प है, ऐसी कोई बात नहीं है कि नहीं है। लेकिन इसी संकल्प को बढ़ाते जाओ। और आपके सब साथी हैं। अच्छा। (मोहिनी बहन, मुन्नी बहन इन्दौर ज़ोन का चक्कर लगाकर आई हैं) कहाँ भी कोई भी महारथी चक्कर लगाये तो रिफ्रेश तो होते ही हैं, और भी होते रहेंगे, अच्छा है।

(जानकी दादी के सिर पर बापदादा ने हाथ रखा) बापदादा का हाथ सभी के ऊपर आता है। यह विशेष निमित्त है, यह ग्रुप निमित्त है इसलिए विशेष है। सिर कभी भारी होता ही नहीं है, बाबा कम्बाइन्ड है ना। (भागीरथ के मस्तक पर हम गंगायें हैं) यह पाण्डव भी गंगायें हैं, तब तो सेवा करते हैं। अच्छा।

एल एण्ड टी के वाइस प्रेजीडेंट - मखीज़ा भाई तथा उनके परिवार से:- बापदादा ने देखा कि जो संकल्प किया उसको पूर्ण करने की हिम्मत अच्छी रखी और हिम्मत वालों को बाप की एकस्ट्रा मदद मिलती है। सुना, हिम्मत रखी ना। हो गया ना। अभी हर बात में हिम्मत नहीं हारो। क्या करें, नहीं। करना ही है। क्या करें कहते हैं ना तो और विघ्न पड़ते हैं, करना ही है तो सब हट जायेंगे। जैसे मच्छर आते हैं तो धूप जगाते हैं तो मच्छर भाग जाते हैं। तो यह माया की बातें आती हैं लेकिन आप हिम्मत का धूप जगाओ तो मच्छर क्या करेंगे? भाग जायेंगे। यह हिम्मत वाली है, सहयोग की पात्र बनी है। तो मदद आपकी हिम्मत इसकी। बापदादा समझते हैं कि पुरुषार्थ में आगे बढ़ेंगे, दोनों एक दो को साथ देने वाले हो, इस विशेषता ने यहाँ तक पहुंचाया, अच्छे हैं। अच्छा।

मुन्नी बहन के भाई-भाभी से:- मुन्नी बहन के भाई बहन हो वह ठीक है लेकिन बापदादा कहते हैं लकी हो, लवली भी हो, लकी भी हो। अपना भाग्य बना दिया। देखो, (बच्चे को देखकर) यह कितना अच्छा शक्ल है, फोटो

निकालें, ऐसा ही रखना। अच्छा किया। इसके मददगार बनना माना बाप के कार्य में मददगार बनना। यज्ञ सेवा कितना पुण्य है, कितनों का पुण्य होता है, बहुत लकी हो। बहुत अच्छा।

डाक्टर अशोक मेहता से:- बापदादा ने देखा हॉस्पिटल में भी चक्कर लगाने आते हैं, तो हिम्मत आप निमित्त वालों की हिम्मत अच्छी है, इसलिए आपको आफर आती है, जो हिम्मत वाले बनते हैं उन्हों को मदद आटोमेटिकली मिलती है तो आपको आफर आती है यह हिम्मत की निशानी है। अच्छा है। (युगल - शिरिन बहन, बेटी-सोनल बहन) आपके दिल की मजबूती ने इनको चलाया है। निमित्त बनी हो। परिवार को चलाया। और कभी पुरुषार्थ में विघ्न नहीं आता। विघ्न को भगाने वाली हो, यह हिम्मत वाले हैं, बहुत हिम्मत है। थोड़ों की हिम्मत से आफर आती है, यह बापदादा को बहुत अच्छा लगता है। आपेही आफर आवे, तो यह हिम्मत का फल है। और आप साथी हैं। कुछ न कुछ करते रहते हो ना। यह इसमें साथी हैं। परिवार ही लकी है।

(दादी गुल्जार की सेवा में जो बहिनें निमित्त रही उनको बापदादा ने स्टेज पर बुलाया) जिन्होंने भी रात जागकर सेवा की, उन सबको मुबारक। रथ को तैयार किया ना। बहुत अच्छा। गुप्त हो, थोड़ा प्रत्यक्ष हो जाओ। साथी बनो।

बापदादा ने अपने हस्तों से ध्वज फहराया

आज के जन्म दिन की मुबारक तो बापदादा ने दे ही दी है, यह झण्डा सदा ऊंचा रहे, और सब आत्माओं के दिल में लहराये, यही आप सबके दिल का संकल्प है, और यही सन्देश सभी तरफ देते हो कि अभी बाप आया है और वर्सा लेने के लिए बाप के पास आ जाओ। यह सन्देश देते देते आखिर वह दिन आयेगा जो सब कहेंगे हमारा बाबा आ गया। वर्सा देने आ गया। और आप सभी को अपने हिम्मत के दृष्टि द्वारा मुक्ति का वर्सा दिलायेंगे तो आप सबके दिलों में झण्डा लहराना है, अभी वह दिन भी आया कि आया। ओम् शान्ति।

डबल विदेशी बहिनों से:- बापदादा आपके संगठन को देख खुश है। (डा.निर्मला दीदी को ज्ञान सरोवर में मनोहर दादी के स्थान पर स्थाई रूप से नियुक्त किया गया है) इसने जिम्मेवारी का ताज पहन लिया, हिम्मत रखी उसके लिए विशेष मुबारक। (बापदादा ने सिर पर हाथ रखा)। हिम्मत बहुत अच्छी रखी।

आप लोगों की जो रीति है ना मिलने की, वह बापदादा को अच्छी लगती है और आपके संगठन को देखके जो गायत्री और दूसरी जूडी है ना, इनको भी बापदादा ने याद किया। गायत्री ने अच्छी हिम्मत दिखाई, लौकिक परिवार को और आसपास जो भी सुनते हैं उनको एक्जैम्पुल दिखाया तो समय पर आप कैसे मददगार बन सकते हैं, और बच्चा (अंकल) भी बहुत योगयुक्त है, और बच्चे को खास खास बापदादा शक्तियों की किरणें देते हुए यादप्यार दे रहे हैं। सारे परिवार को यादप्यार। (पहली बार शिव जयन्ती पर नहीं हैं) इसलिए बापदादा ने उन्हों को याद किया है।

मीटिंग का रूप बदलता जा रहा है, अच्छे ते अच्छा हो रहा है। इन्डिया वाले भी मिक्स हो रहे हैं यह बहुत अच्छा। आप लोगों ने हिम्मत रखी तो मददगार हो रहे हैं और होते रहेंगे इसलिए चलाते चलो। तो बापदादा खास जो निमित्त बने हैं उन्हों को मुबारक दे रहे हैं। बढ़ते रहो, बढ़ते रहेंगे।

(लण्डन के महेश भाई ने खास याद दी है) समय समय पर डायरेक्शन प्रमाण जो सफल करता है उसको सफलता मिलती है। तो निश्चयबुद्धि अच्छा परिवार है और सदा आगे बढ़ते रहेंगे। पालना भी तो कितनी अच्छी है, तो पालना का रिटर्न दे रहा है। टोली भेज देना।

''होली की विशेष सौगात फरिश्ता ड्रेस रोज बीच-बीच में धारण करना और पुराने संस्कारों की होली जलाना''

आज होलीएस्ट बाप अपने होली बच्चों से होली मनाने आये हैं। सभी बच्चे होली बच्चे हैं। आप सब भी होली मनाने आये हैं। सोचो, आप होली आत्माओं के ऊपर कौन सा रंग लगा जो होली बन गये! रंग तो अनेक हैं लेकिन आपके ऊपर कौन सा रंग लगा? सबसे श्रेष्ठ रंग कौन सा है, जिससे आप होली बन गये? सबसे बड़े ते बड़ा रंग है परमात्म संग का रंग। तो परमात्म संग का रंग लगने से सहज होली बन गये क्योंकि परमात्म संग अविनाशी संग का रंग है और रंग तो थोड़े समय के लिए होता लेकिन परमात्म संग का रंग लगने से सहज ही होली अर्थात् पवित्र बन गये। आत्मा का रंग अपवित्रता से पवित्र बन गया क्योंकि आप सबने परमात्मा को अपना कम्पैनियन बना लिया, कम्पनी बना लिया इसलिए कम्बाइन्ड हो गये। यह कम्बाइन्ड स्वरूप प्यारा लगता है ना! यह कम्बाइन्ड रूप कभी भी अलग नहीं हो सकता। अनुभव है ना! सदा कम्बाइन्ड रहते हो ना! अकेले नहीं। माया अकेले करने की कोशिश करती है लेकिन जो सदा कम्बाइन्ड रहने वाले हैं वह कभी भी अलग हो नहीं सकता क्योंकि माया अलग करके फिर पुराने संस्कार को इमर्ज करती है और पुराने संस्कार इमर्ज हो जाते हैं तो शुद्ध संस्कार मर्ज हो जाते हैं। पुराने संस्कार है अलबेलापन और आलस्य, यह भिन्न-भिन्न रूप में इमर्ज होने से कम्बाइन्ड रूप अलग हो जाता है। तो हर एक अपने को चेक करो कि सदा कम्बाइन्ड रहते हैं वा कभी अकेले भी हो जाते हैं? माया के अनेक स्वरूपों को तो जान गये हो ना! वह चतुराई से अपना रंग लगा देती है। अलग होना अर्थात् माया के रंग में रंगना। यह अलबेलापन, आलस्य बहुत भिन्न-भिन्न रूप से आता है। उसको पहचानने के लिए माया अपने तरफ आकर्षित कर देती है और बच्चे भी यह अलबेलापन और आलस्य जो रावण का खजाना है, यह बाप का खजाना नही है, रावण के खजाने को बड़े नशे से कहते हैं कि मैं चाहता नहीं हूँ, चाहती नहीं हूँ लेकिन मेरा संस्कार है। संस्कार मेरा कहने लगते हैं। क्या यह परमात्म खजाना है? या रावण का खजाना है? उसको मेरा संस्कार कहना सोचो, राइट है? मेरा बना देना, यह माया की चतुराई है। बाप का खजाना प्यारा है या यह रावण का खजाना प्यारा है? कामन रीति से बच्चे अपने को छुड़ाने के लिए कह देते हैं मेरा संस्कार है, चाहती नहीं हूँ। तो सोचो क्या यह मेरा है! बाप कहते हैं कि रावण के खजाने को अपना बनाने से धीरे-धीरे जो शुभ संस्कार हैं वह समाप्त होते जाते हैं। परमात्म संग का रंग ढीला होता जाता है और माया का रंग इमर्ज हो जाता है। तो चलते-चलते अपने को ही चेक करना है, कौन सा रंग चढ़ा हुआ है? लोग भी होली में क्या करते हैं? पहले बुराई को जलाते हैं फिर रंग लगाते हैं, मनाते हैं। तो आपके ऊपर बापदादा ने संग का रंग तो लगाया लेकिन साथ में ज्ञान का रंग, शक्तियों का रंग, गुणों का रंग, वह लगाता रहता है।

तो सभी के ऊपर यह रूहानी रंग चढ़ा हुआ है ना! चढ़ा है? हाथ उठाओ। रूहानी रंग चढ़ गया, उतरने वाला तो नहीं है ना! जिसके ऊपर रूहानी रंग चढ़ गया, अविनाशी रंग चढ़ गया, उसके ऊपर और कोई रंग लग नहीं सकता। इस रंग से कितने होली बन गये हो? जो सारे कल्प में आप जैसा होली पवित्र और कोई बन नहीं सकता। आपकी पवित्रता प्रभु के संग का रंग, परमात्म कम्बाइन्ड रहने का अनुभव सबसे न्यारा और प्यारा है। और जो भी होली, पवित्र बनते हैं तो उन्हों का शरीर पवित्र नहीं बनता, आत्मा पवित्र बनती है लेकिन आप ऐसे होली बनते हो, पवित्र बनते हो जो आपका शरीर और आत्मा दोनों पवित्र रहते हैं। और पवित्रता को सुख, शान्ति, प्रेम, आनंद की जननी कहा जाता है। जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख शान्ति साथ में है ही है क्योंकि जहाँ जननी होती वहाँ बच्चे होते हैं क्योंकि बाप आके आपको ऐसा होली बनाता है जो आपके जड़ चित्र कलियुग के लास्ट जन्म में भी आप अपने चित्र देखते हो कितने विधि पूर्वक उन्हों की पूजा होती है, यह पवित्रता की विशेषता है और कितने भी महान आत्मायें, धर्म आत्मायें पवित्र बने हैं लेकिन मन्दिर किसका नहीं बनता है। ऐसे विधि

पूर्वक पूजा किसकी भी नहीं होती है और लास्ट जन्म तक आपके चित्र भी दुआयें देते रहते हैं। थोड़े समय का सुख शान्ति अनुभव कराते हैं। तो आपकी होली और दुनिया वालों की होली कितना फर्क है! भले मनोरंजन के लिए आप भी थोड़ा बहुत मनाते हो लेकिन सच्ची होली परमात्म संग के रंग की और कम्बाइन्ड स्वरूप की यथार्थ होली आप मनाते हो। होली को लोग भी भिन्न-भिन्न रूप से मनाते हैं, वैसे आप जानते हो कि होली शब्द का भी रहस्य है, जो आप ही जानते हो, आप ही मनाते हो। होली का अर्थ है, हो ली, बीत चुका सो बीत चुका। तो आप सबने जो पुरानी जीवन, पुरानी बातें, पुराने संस्कार, पुराने व्यर्थ संकल्प को हो ली कर दी ना। बीती सो बीती करना अर्थात् हो ली। तो ऐसे किया है? कि अभी भी कभी गलती से पुराने संस्कार आ जाते हैं? जब हमारा जन्म ही नया है, आप सभी मरजीवा बने हो ना! बने हो? मरजीवा बने हो? हाथ उठाओ। अच्छा। नया जन्म हो गया। तो पुराना जन्म कैसे याद आता? पुराना, पुराना हो गया। अगर बीती बातें या संकल्प, संस्कार इमर्ज होता है तो क्या कहेंगे? होली मनाई? हो ली किया नहीं। परमात्म संग का रंग अच्छी तरह से लगा नहीं। परमात्म संग का रंग लगना अर्थात् पुराना जन्म भूल जाना। पुरानी बातें भूल जाना। क्योंकि मरजीवा हो गये ना। जैसे शरीर से एक जन्म छोड़कर दूसरा लेते हो तो क्या पुराना जन्म याद रहता है? तो आप सभी अभी ब्राह्मण जन्म धारण करने वाले हो। तो पिछले जन्म के संस्कार जिसको कहते हो गलती से मेरे संस्कार हैं, आपके हैं? हैं, ब्राह्मण जीवन के संस्कार हैं यह? कभी अलबेलापन, कभी रॉयल आलस्य, आलस्य के बहुत भिन्न-भिन्न रूप हैं। कभी इस पर क्लास करना। आलस्य कितने प्रकार के हैं और कितने रॉयल रूप से आते हैं!

तो ब्राह्मण जीवन अर्थात् नया जीवन इसमें पुराना कुछ हो नहीं सकता। तो आज होली मनाने आये हो ना! तो होली अर्थात् हो ली, तो आज होली मनाना अर्थात् पुराने संस्कार की होली जलाना। जलाने के बाद ही मनाना होता है। तो अभी आपके मनाने का स्वरूप है। जला दिया, अभी मनाना है। प्रभु के संग के रंग का मजा लेने वाले हो। कम्बाइन्ड रहने का अनुभव करने वाले हो क्यों? होलीएस्ट बाप ने आपके ऊपर होली बनने का, पवित्र बनने का रंग लगाया है।

तो आज कौन सी होली मना रहे हो? आज विशेष कोई भी पुराने संस्कार को आने नहीं देना है, यह होली मनानी है। मना सकते हो या कभी-कभी आ जायेंगे? यह रॉयल शब्द कि मैं करने नहीं चाहती थी, चाहता था लेकिन मेरे संस्कार हैं। यह शब्द आज दृढ़ संकल्प की विधि से समाप्त कर लो। ऐसी होली आज सदा के लिए मनाने की हिम्मत रखते हो? कि कभी-कभी मनायेंगे? जो समझते हैं कि आज से पुराने संस्कार की होली, हो ली, बीती सो बीती, जन्म नया है, वह पुराना जन्म खत्म। ऐसी हिम्मत रखने वाले आप बाप के मीठे-मीठे लाडले सिकीलधे बच्चे हो ना! तो यह संकल्प दृढ़, संकल्प नहीं यह दृढ़ संकल्प करने की हिम्मत है? हाथ उठाओ। देखो, सभी ने हिम्मत रखी है। चलो थोड़े रह भी गये, लेकिन आप सब तो साथी हो ना। पक्के साथी, दो हाथ उठाओ। यह फोटो निकालो सबका। अच्छा। डबल विदेशी भी उठा रहे हैं।

तो बापदादा आपको पदम पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं, होली को हो ली मनाने की। अभी गलती से भी अपने मुख से यह शब्द नहीं निकालना। मेरा संस्कार, रावण के संस्कार को मेरा कहते हो, कमाल है! रावण को दुश्मन कहा जाता है, दुश्मन का खजाना अपना बनाना यह तो आश्चर्य की बात है! आपको भी आश्चर्य लग रहा है ना कि क्या कहते हैं! गलती से कह देते हो। कह देते हैं फिर अन्दर में दिल खाती भी है, महसूस भी करते हैं, बाप से बातें भी करते, माफी भी लेते हैं। बाबा कल से नहीं करूंगी, करूंगा। फिर भी कर देते हैं। अभी बापदादा क्या करे? देखता रहे? अभी इस शब्द की होली जला लो। देखो जलाने में भी एक बहुत अच्छी बात बताते हैं कोकी को धागा बांध के पकाते हैं, तो जब कोकी पक जाती है और निकालते हैं तो कोकी पक जाती लेकिन धागा नहीं जलता है। यह निशानी भी आपने पहला पाठ जो पढ़ा है कि आत्मा अविनाशी है और शरीर विनाशी है। तो बापदादा अपने यह त्योहार या शास्त्र बनाने वाले, है तो बाप के बच्चे ही लेकिन आप

हो सिकीलधे, लेकिन बापदादा देखते हैं कि उन्हों की भी कमाल कम नहीं है। आटे में नमक है लेकिन बनाया बड़ा रमणीक है। हर त्योहार का आप देखो यादगार बनाया है, लेकिन कई बातें जो सूक्ष्म है उसको स्थूल रूप दे दिया है। लेकिन यादगार तो बनाया है ना! भक्ति में भी कम तो नहीं किया, भक्ति ने द्वापर कलियुग में फिर भी कुछ न कुछ स्मृति की बातें रखी। अति विकारी बनने से बचाया। तो बापदादा यह सामग्री, त्योहार या शास्त्र बनाने वालों को भी उनका फल देता है। फिर भी भक्ति में कुछ तो याद करते हैं, विकारों से थोड़े टाइम के लिए बच जाते हैं।

तो आपने आज कौन सी होली मनाई? कौन सी होली मनाई? हो ली, सब कहो हो ली। ऐसे करो हो ली। पक्का है ना! मनाया? मनाया? अच्छा। फिर कल माया आयेगी, क्योंकि माया भी सुन रही है लेकिन आप ऐसे नहीं करना। (अपनी ओर नहीं बुलाना) मजा है ना, इसमें मजा है ना। मजे में रहना।

बाप को याद रखना तो बाप हमें कितना रूहानी रंग डाल रहा है, जिससे आप होलीहंस बन गये। होलीहंस अर्थात् निर्णय शक्ति वाले होली हंस। कोई भी काम करो ना, तो एक सीट फिक्स कर लो, पहले उस सीट पर सेट हो फिर निर्णय करो, वह सीट जानते हो, वह सीट है त्रिकालदर्शी की सीट। पहले त्रिकालदर्शी की सीट पर सेट हो तीनों कालों को देखो, सिर्फ वर्तमान नहीं, आदि मध्य अन्त, तीनों कालों को देखो, तीनों काल में फायदा है या नुकसान? कई बच्चे बड़े चतुर हैं। चतुराई सुनाऊं? क्या कहते हैं, ऐसा काम को चलाना था ना, इसीलिए काम चला लिया बाकी मैं समझती थी, समझता हूँ करना नहीं चाहिए लेकिन कर लिया। लेकिन चलो कर लिया तो कर्म का फल तो मिलेगा ना! तो चतुराई नहीं करना, बाप को भी बहुत रिझाते हैं। गलती करते हैं ना फिर बापदादा को ऐसी ऐसी बातें सुनाते हैं - बाबा आप तो रहमदिल हो ना! आप तो क्षमा के सागर हो ना! बाप को भी याद कराते हैं तो आप कौन हो! आपने कहा है ना, मेरे को सुनाके खत्म कर दो। लेकिन महसूसता से सुनाके खत्म कर लो। एक अक्षर पक्का करते हो, सुना तो देते हो लेकिन पहले दृढ़ संकल्प से स्व को परिवर्तन करके फिर सुनाओ। रिझाते बहुत हैं, आपने कहा है ना! बाप को भी याद दिलाते हैं आपने यह कहा है ना, आपने यह कहा है ना। बड़ी चतुराई करते हैं। अभी चतुराई नहीं करना। हिम्मत रखना। करना ही है, गे गे नहीं करना।

बापदादा सारे दिन में गे गे के गीत बहुत सुनते हैं। करेंगे, दिखायेंगे, बनेंगे, लेकिन स्पीड क्या? गे गे वाले बाप के साथ चलेंगे? बाप तो एवररेडी है और गे गे वाले एवररेडी तो नहीं हुए। तो बाप के साथ कैसे चलेंगे? देखते रहेंगे, बाप के साथ जा रहे हैं। बाप को एक-एक बच्चे से पदमगुणा प्यार है। बाप नहीं चाहते कि मेरे बच्चे और साथ नहीं चलें। जब घर लौटने का समय आ गया है तो क्या घर नहीं चलेंगे? क्योंकि घर जाके फिर राज्य में आना है। घर नहीं चलेंगे साथ में तो ब्रह्मा बाप के साथ राज्य में भी नहीं आयेंगे, पीछे आयेंगे। तो आपका वायदा क्या है? साथ चलेंगे, या आ जायेंगे.. इसमें भी गे गे लगायेंगे। पहुंच जायेंगे, देखना बाबा जरूर पहुंच जायेंगे। तो यह भाषा अभी समाप्त करो।

आज बापदादा ने वतन में भी होली मनाई, किसके साथ? आप तो अभी मनायेंगे। एडवांस पार्टी वालों के साथ होली मनाई। एडवांस पार्टी है ना, नाम ही एडवांस पार्टी है। तो बापदादा ने एडवांस होली मनाई। जानते हो क्या होली मनाई? सभी एडवांस पार्टी वाले नये वा पुराने, आजकल के गये हुए महारथियों को भी आप याद करते हो ना, उन्हों को भी इमर्ज किया क्योंकि अभी जाने वाले जो भी हैं उन्होंने बचपन से लेके यानी काफी समय से अपना सेवा का पार्ट बजाया। आप भी उन साथियों को याद तो करते हो ना! जगह तो भरनी पड़ती है ना। तो आज वतन में मम्मा और दीदी और दादी, त्रिमूर्ति को विशेष सभी के संगठन के बीच खड़ा किया और साथी तो थे लेकिन इन तीनों को विशेष पार्ट से खड़ा किया और इन्हों को याद दिलाया, याद है भी। लेकिन इन्हों को गुप्त रूप में सेवा करनी पड़ती है। अमृतवेले यह भी वतन में इमर्ज होते हैं और सेवा पर जाते हैं। सेवा जो विशेष आत्मायें हैं, उन्होंने छोड़ी नहीं है। वतन में अमृतवेले इन्हों का फिक्स है आना, अपने असली ब्राह्मण जीवन में इमर्ज होना और चारों ओर कोई न कोई सेवा अर्थ मन्सा सेवा, मन्सा से मन और बुद्धि द्वारा आत्माओं के मन और

बुद्धि को आकर्षण करने की विशेष सेवा करते हैं। तो बापदादा ने आज इन त्रिमूर्ति से पूछा कि आप क्या कर रहे हो?

बाप जानता तो है फिर भी पूछता तो है ना। तो इन्होंने कहा कि हम दो प्रकार से प्रेरणा देते हैं, एक हलचल मचाने वालों को भी और दूसरा नये सृष्टि के निमित्त बनने वालों को भी क्योंकि हम इन्तजार कर रहे हैं तो मम्मा ने कहा कि हमें तो बहुत टाइम हो गया है इन्तजार करते। तो हमारी सखियों से पूछना कि क्या अभी तक इन्तजार कराना है या कुछ इंतजाम करना है! तो मम्मा की या दादी दीदी की सखियां तो बहुत बैठी हैं, सखे भी बैठे हैं। साथ रहने वाले भाई भी हैं, बहिनें भी हैं तो उन्हों का प्रश्न है तो इन्तजार करना हमारा काम है आपका एडवांस स्टेज वालों का क्या पार्ट है? हम तो इन्तजार कर रहे हैं आपका काम है इन्तजाम करना। हमारा काम है इन्तजार करना। तो कब डेट फिक्स करेंगे? आप सब बाबा के बच्चे जब समान सम्पूर्ण बनेंगे तब इन्तजाम होगा। तो दीदी ने कहा तो मेरी तरफ से एक प्रश्न सभी से पूछो। दीदी ने क्या कहा? तो आप सभी जानते भी हो कहते भी हो एवररेडी। तो सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने में एवररेडी हो? और दादी ने क्या कहा? आज रूहरिहान चल रही थी। दादी ने कहा तो मेरे से जब भी कोई मिलता था तो देखा, सब कहते भी थे मेरे को तो दादी आपको तो कर्मातीत, कर्मातीत बनना है यही तात लगी हुई है। हम भी तो साथ में चलेंगे ना। तो अभी भी मैं अपने साथियों को यही कहती हूँ कि कर्मातीत बनना ही है कब? कब को अब में कब बदली करेंगे? तो बाप तो मुस्कराते रहते हैं। तो आज पहले इन्हों की रूहरिहान चल रही थी और भी सभी उन्हों को साथ देते थे, मम्मा यह बहुत अच्छा कहा, दीदी आप थोड़ा फोर्स भरो ना और दादी को कहते थे तो दादी आपने तो सभी को साथ दिया। बाबा के अव्यक्त होते जो आपने पार्ट बजाया, हम सभी के दिलों में दादी की यह बात याद है, तो और साथी जो उन्हों के थे, तो कहा दादी अभी आपकी बात को याद करके चलो, बाप अव्यक्त है, शिव बाबा निराकार है, वह अव्यक्त फरिश्ता है। लेकिन दादी तो साकार में थी, अभी आपने जो सोचा था वह करके तो दिखावे। दादी जैसी जिम्मेवारी तो लेके दिखावे। मतलब तो आज दिल खोल के रूहरिहान कर रहे थे। सुना। अभी क्या करना है?

होली तो मनाई ना! कल की बातें भी गई, तो अगले जन्म की बातें क्या सोचना। तो सभी चिटचैट कर रहे थे ना तो बापदादा ने होली मनाना शुरू कर दी। सभी सफेद ड्रेस में थी और वतन में तो फरिश्ते रूप में थी। तो बापदादा ने अचानक ही बताया नहीं कि होली मना रहे हैं लेकिन सभी अर्ध चन्द्रमा के रूप में बैठे हुए थे, खड़े नहीं थे। बैठे हुए थे, 4-5 लाइने थी और कायदेसिर बैठे थे छोटे फिर बड़े, फिर और बड़े। तो बापदादा ने क्या किया? अचानक ही 7 रंगों के हीरे, जानते हो ना, उसको पाउडर किया। पाउडर के रूप में सभी के ऊपर डाला तो एक तो फरिश्ता ड्रेस थी चमक रही थी और उसके ऊपर 7 रंगों के पाउडर गिराया, फैल गया। तो आप इमर्ज करो तो चमकते हुए ड्रेस में जब 7 रंगों का पाउडर फैल गया होगा तो कैसी ड्रेस लगती होगी? सतयुग में भी ऐसी ड्रेस नहीं मिलेगी। तो सभी चमक गये। और यह ड्रेस चमक गई ना तो दीदी नशे में चली गई। जैसे यहाँ नशे में जाती थी ना तो नशे में जाकर डांस करने लगे सभी। एक दो को पकड़ करके। फिर बाबा ने जो मधुबन में आप गेवर (मिठाई) बनाते हो ना, तो वतन में गेवर इमर्ज कराये। मधुबन से तो आये नहीं थे, तो गेवर सभी को खिलाया। तो सभी ने बहुत मौज से मनाया। तो आप भी फरिश्ता ड्रेस जैसे भिन्न-भिन्न ड्रेस बदली करते हो ना, वैसे बीच-बीच में सारे दिन में ऐसे फरिश्ता ड्रेस बदली करके टेस्ट लो यह भी। बस बापदादा इमर्ज करो, 5 मिनट के लिए, 10 मिनट के लिए इमर्ज करो मैं फरिश्ते रूप में हूँ, वस्त्र बदली किया, साधारण से फरिश्ते रूप की ड्रेस पहनी और बापदादा कभी ज्ञान की, कभी शक्तियों की, कभी गुणों का रंग डाल रहे हैं। फरिश्ता ड्रेस में फरिश्ता बनके 5-10 मिनट अनुभव करो फिर वस्त्र बदली कर दो। कर्मयोगी हैं ना। तो यह दिन में जब भी टाइम मिले, फरिश्ते की ड्रेस पहन लो। और बाप द्वारा यह रंग लग रहे हैं यह अनुभव अभी से प्रैक्टिस करेंगे ना फरिश्ता ड्रेस की। तो ड्रेस पहनने से नशा चढ़ेगा और मदद मिलेगी फरिश्ता बनने में। तो होली की यह सौगात बापदादा चारों ओर के बच्चों को दे रहे हैं। ड्रेस पहनते ट्रायल करते रहना, भूलना

नहीं। फरिश्ता ड्रेस होली की सौगात दे रहे हैं। तो बीच-बीच में यह अभ्यास करना। सहज है ना! ड्रेस बदलना तो आता है ना। आता है? आता है ना! जैसे यह ड्रेस बदलते हो ना, रोज़ बदलते हो ना। तो फरिश्ता ड्रेस भी बदलके देखो। कितनी सुन्दर, कितनी चमकती हुई है। सुना।

आज वतन का समाचार सुनाया। आप सब भी याद करते हो ना! एडवांस पार्टी के अपने सभी, क्योंकि कोई न कोई स्थान से भिन्न-भिन्न गये हुए हैं। तो गये हुए को याद तो करते हो ना! बापदादा भी अमृतवेले विशेष एडवांस पार्टी से सेवा कराते हैं क्योंकि सारी दुनिया तो सोई हुई होती है और यह ड्रेस बदलके वतन में आ जाते हैं। सुना। अभी क्या करेंगे? यह ड्रिल भूलना नहीं। वस्त्र बदली करना, दिन में जितना बार फरिश्ता ड्रेस में बैठ सको, चाहे 3 मिनट बैठो लेकिन बैठो जरूर, बदली करो जरूर, अभी से संस्कार डालो, फरिश्ता बनने के बिना देवता बन नहीं सकते। अच्छा।

अच्छा। पहले सभी चारों ओर के बच्चों को भी बापदादा देख रहे हैं कि दूर बैठे भी साइंस के साधन द्वारा मैजारिटी स्थानों में सेन्टर्स पर वह भी बापदादा को देखते रहते हैं, आप टोली खाते हो ना तो वह भी टोली बांटते हैं। तो सभी को बापदादा भी देख रहे हैं कि कैसे दूर बैठे नजदीक का अनुभव कर रहे हैं। तो चारों ओर के बच्चों को जो सदा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है, इस संकल्प को धारण किया हुआ है और दृढ़ता का बल समय प्रति समय इस संकल्प को देते रहते हैं, ऐसे चारों ओर के शुभ संकल्प धारण करने वाले, साथ-साथ बाप की आशाओं को पूर्ण करने वाले आशाओं के सितारे, साथ-साथ दादी के बोल, कर्मातीत होना ही है, होना ही है, होना ही है...और मम्मा के यह बोल कि सदा जो करना है सो आज करो, कल पर नहीं छोड़ो, और दीदी के यह बोल अब घर चलना है, यह कानों में गूंजना चाहिए। बार-बार अब घर चलना है। तो धुन लगा दो – कर्मातीत होना है, अब घर चलना है। यह बोल बार-बार स्मृति में लाने वाले समर्थ आत्माओं को बापदादा का होली बच्चों को होली की मुबारक हो, और साथ में सभी को बापदादा पहले ही मधुबन के गेवर के पहले सभी मुख खोलो और गेवर खाओ, खाया, तो सभी को बहुत-बहुत पदमगुणा बापदादा और एडवांस पार्टी के सर्व बच्चों का यादप्यार और बाप की नमस्ते।

यू.पी. बनारस और पश्चिम नेपाल की सेवा का टर्न है:- यू.पी. के साथ, मोहिनी बहन उठो। अच्छा है, यू.पी. में विशेषता क्या है? जब आदि में सेन्टर खुले तो यू.पी. का सेन्टर विशेष था। बापदादा मम्मा पहले पहले यू.पी. के सेन्टर पर रहे हैं। और यू.पी. में ज्ञान नदियों का भी सम्मेलन है। बड़े में बड़ी गंगा नदी, जमुना दिल्ली में है और यू.पी. में गंगा नदी है, गंगा नदी का गायन क्या है? पतित पावनी। तो यू.पी. वालों को सदा यही लगन होगी पतित पावनी बन, पतित आत्माओं को कुछ न कुछ अंचली देने की। अभी यू.पी. में सेन्टर बढ़ रहे हैं ना। बढ़े हैं? आदि में तो रौनक रही है। समर्पण युगल यू.पी. से आरम्भ हुए। तो अभी भी यू.पी. कोई नया कार्य करके दिखाओ। यह फंक्शन, यह सम्मेलन यह तो होंगे, होते रहेंगे लेकिन कोई नया कुछ करके दिखाओ। सभी ज़ोन सोचते हैं कुछ करके दिखायें। दिल्ली वाले भी सोच रहे हैं ना! अच्छा है। कुछ न कुछ करते रहो, जो ब्राह्मण संसार में कोई न कोई खबर छपती रहे, आपकी भी तो अखबारे हैं ना। तो कोई नया समाचार अखबारों में आना चाहिए। बाकी यज्ञ सेवा में यू.पी. भी कम नहीं है। अच्छी संख्या आई है। बापदादा खुश है। टीचर्स भी काफी हैं लेकिन कौन सी टीचर्स? बापदादा का जानती हो कि ऐसी टीचर्स जो अपने फीचर्स चलन और चेहरे से सभी को फ्युचर दिखाये। अभी का फ्यूचर क्या है? फरिश्ता। भविष्य का फ्युचर देवता। तो हर एक टीचर अभी का फ्युचर जो फरिश्ता है, चलो देवता तो भविष्य में बनेंगे लेकिन जो लास्ट घड़ी का स्वरूप है फरिश्ता, वह फीचर्स अर्थात् चलन और चेहरे से स्पष्ट दिखाई दे। जैसे शुरू-शुरू में जब आप सेवा में गये, 14 वर्ष तपस्या और बापदादा माँ की पालना का साथ लिया, तो पहले शुरू में जब सेवा में गये तो आप कोई कोई सेवाधारी आत्माओं का जिज्ञासु को कभी लाइट का ताज और कभी मस्तक में चमकता हुआ बिन्दू, यह दिखाई देता था और परखने की शक्ति आप में बहुत तीव्र थी, कोई भी

आसुरी स्वभाव वाला आता था, क्योंकि कुमारियां नाम था ना लेकिन उसकी चाल नहीं चलती थी, इतनी ताकत थी जो वह स्वयं पांव पर गिरकर कहते थे कि हमने क्या सोचा और आप कौन हो! यह पवित्रता का जो चमत्कार था वह प्रत्यक्ष चलन में, स्वप्न तक था। अपवित्रता का स्वप्न मात्र भी नहीं था, था, है नहीं कहते हैं था। अब फिर से अपने साथियों में यह लाइट माइट की दृढ़ता लाते रहो। इज़ी नहीं। समझते तो हो सभी, टीचर्स निमित्त हो ना बाबा की तरफ से और बापदादा को टीचर्स छोटी चाहे बड़ी उनके लिए दिल में बहुत प्यार है क्योंकि बाप के कार्य में सहयोगी हो। निमित्त हो, सहयोगी हो। चारों ओर सभी स्टूडेन्ट के सामने साकार रूप में आप टीचर्स हो। अव्यक्त रूप में बापदादा है और एडवांस पार्टी भी आपको सकाश देती रहती है, जब अमृतवेले वतन में आते हैं तो सखियों को भी याद करती है, सेन्टर्स को भी याद करती है। तो यू.पी. सबसे नम्बरवन बनना है, बन रहे हैं। कमाल करेंगे। करनी ही है।

स्पार्क और साइंस इंजीनियर विंग की मीटिंग है:- अच्छा मीटिंग्स तो आप लोग करते रहते हो और अच्छा उमंग उत्साह से करते हो यह बापदादा देखता और सुनता भी रहता है। धारणा के प्लैन भी बनाते रहते हो। बापदादा ने समाचार सुना। सभी अपनी स्व उन्नति और सेवा के प्लैन नये नये भी बनाते रहते हो। अभी यही लक्ष्य रखना है कि दुनिया वालों को अभी दिलासा देने की आवश्यकता है। वह बिचारे सरकमस्टांश को देख भयभीत हो रहे हैं। डर फैल रहा है। तो ऐसे समय पर आपको विशेष तो सारी आत्मायें आपकी हैं, लेकिन विशेष आप अपने वर्ग को दिलासा दिलाओ कि आप अगर मेडीटेशन का कोर्स करेंगे तो आपका यह डर वा टेन्शन समाप्त हो जायेगा और ज्ञान नहीं दो पहले, लेकिन मेडीटेशन करो और कराओ, उसका निमन्त्रण दो, टेन्शन फ्री लाइफ का अनुभव करने का प्रोग्राम ज्यादा करो। करते हो लेकिन अभी ज्यादा करो उन्हों को आध्यात्मिक शक्ति का अनुभव कराओ। सिर्फ भाषण नहीं लेकिन अनुभव कराओ भले छोटे छोटे ग्रुप को कराओ। बड़े ग्रुप को कराओ लेकिन अनुभव कराओ। अनुभव वाला व्यक्ति कभी रह नहीं सकता। और अनुभव की अथॉरिटी नम्बरवन है। अनुभव वाला किसी के बहकावे में नहीं आ सकता। समस्या में घबरा नहीं सकता क्योंकि मेडीटेशन से शक्ति अनुभव होती है। तो मेडीटेशन की टैम्पटेशन ज्यादा अनुभव कराओ। बाकी प्रोग्राम तो करते रहते हो। वह तो चलते रहेंगे और चलाओ लेकिन यह विशेष ध्यान दो। कोई भी आता है, कोर्स करता है, लेकिन कोर्स के बीच में अनुभव किया या सिर्फ नॉलेज ली। अनुभव जरूर कराओ। किसी भी बात का, चाहे ज्ञान के हिसाब से परमात्म ज्ञान है, यह अनुभव हो, योग द्वारा अपने में शक्तियों की अनुभूति हो, हिम्मत आवे, कोई भी बात की समस्याओं को हल करने की हिम्मत आवे और धारणा की हिम्मत आवे, नहीं तो धारणा सुन करके घबरा जाता है। पहले प्राप्ति सुनाओ, प्राप्ति क्या होती है प्राप्तियों की आकर्षण से सभी शुरू कर देते हैं। परमात्मा का परिचय भी देते हो तो पहले प्राप्तियां क्या होती है वह सुनाओ तो प्राप्तियों के आधार से आकर्षित होते हैं। क्या मिलेगा, क्या बनेगा, कैसे समस्यायें आपके लिए सहज हो जायेंगी, ऐसी ऐसी अनुभव की बातें सुनाओ। बाकी आपस में मिलते हो, बापदादा के पास रिपोर्ट आती है, बापदादा खुश है कि यह भी संगठन में मेल होता है, ब्राह्मणों को भी रिफ्रेशमेंट मिलती है। मिलते हैं ना आपस में, कुछ न कुछ राय तो देते ही हैं। तो दोनों वर्ग अच्छा कर रहे हो और आगे भी करते रहेंगे। यह बापदादा को खुशी है। अच्छा।

डबल विदेशी भाई बहिनें 80 देशों से आये हैं:- इस बारी जो डबल फारेनर्स ने भिन्न भिन्न प्रोग्राम बनाये हैं युगलों का, टीचर्स का... युगल हाथ उठाओ जो युगल आये हैं। बापदादा ने देखा युगल तैयार तो अच्छे हो गये हैं। लेकिन बाबा की जो आशा है उसको पूर्ण नहीं किया है। कौन सी आशा है? कोई महामण्डलेश्वर को चरणों में झुकाओ क्योंकि आप लोग सहज उनको फेल कर सकते हो। आप कहते हो हो नहीं सकता और हमने सहज किया है। अपने अनुभव की अथॉरिटी से उन्हों को झुका सकते हो तभी गीता का भगवान भी सिद्ध होगा। युगलों में यह ताकत है वह जब ढीले हो जायेंगे ना फिर सब बातें मानने लगेंगे। तो बापदादा को अच्छा लगता है, युगल बहुत कमाल कर सकते हैं, क्यों? अभी भी किया है, जब

से युगल-युगल चलते रहते हो, पुराने भी हो गये हो तो यह देख करके सुन करके कितनी संख्या बढ़ गई है। एक काम तो किया है, उमंग उत्साह लोगों में बढ़ाया है कि हम भी कर सकते हैं, छोड़ना नहीं पड़ेगा, डरते हैं ना छोड़ने से। लेकिन आपने छोड़ा नहीं, बनाया है। कुछ छोड़ा है? सफेद ड्रेस पहनी, रंगीन पहनने की मना नहीं है लेकिन स्कूल की भी तो ड्रेस होती है ना। बाकी तो कोई मना नहीं है। तो युगल बहुत कमाल, चैलेन्ज कर सकते हैं। ऐसा प्रोग्राम बनाओ। देखें कौन से युगल तैयार होते हैं। पहले तो ट्रायल करो, कोई ऐसा कनेक्शन वाला हो, उससे ट्रॉयल करके देखो। फिर एक ढीला हुआ तो और भी बन जायेंगे। तो अच्छा लगता है बापदादा को, युगलों का सम्मेलन अच्छा लगता है। अच्छा -

अभी फारेन की ट्रेनिंग वाली टीचर्स उठो:- अच्छा टीचर्स समझती हो कि ट्रेनिंग मिलना अच्छा है? जो समझते हैं कि यह जरूरी है, अच्छा है वह ऐसे हाथ उठाओ। तो मुबारक है, निमित्त टीचर्स को। क्योकि मेहनत अच्छी की है और डायरेक्ट सेवा यह करेंगी और पुण्य आप निमित्त वालों को मिल जायेगा। यह अच्छा है, नई नई टीचर्स बनती जाती हैं यह भी ड्रामा में पार्ट है। फारेन में देखो कितने नये नये सेन्टर्स खुलते रहते हैं तो बहुत खुशी की बात है, कि ट्रेनिंग लेके आप जो आने वाले हैं उन्हों को भी जल्दी से जल्दी उड़ाने के निमित्त बनेंगे। बापदादा सभी फारेनर्स को एक तो मुबारक देते ही हैं कि जॉब भी करते और सेन्टर भी सम्भालते, सब ताली बजाओ। वैसे टीचर बनके सेन्टर चलाना यह भी बहुत बड़ा भाग्य है, कॉमन चीज़ नहीं है क्योंकि टीचर बनना अर्थात् वर्तमान बाप की गद्दी के मालिक बनना, वह है मुरली सुनाना। मुरली द्वारा आत्माओं को रिफ्रेश करना। बापदादा टीचर्स को गुरूभाई कहते हैं क्योंकि मुरली सुनाने के तख्त के अधिकारी बनते हो। निमित्त बनते हो। फायदा भी है और कायदा भी है। दोनों है। लेकिन बापदादा खुश है कि आप अपने रूचि से टाइम निकालके आये हो। ट्रेनिंग करना यह बापदादा को बहुत पसन्द आता है। तो बहुत अच्छा किया जो इतने सबने ट्रेनिंग किया। निमित्त हो और निमित्त का फल बहुत बड़ा पुण्य का खाता जमा होना है। निमित्त भाव नहीं छोड़ना, मैं नहीं लाना। मैं यह सांप है, काला सांप। हप कर लेता है। निमित्त हूँ, करावनहार करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है। और कम्बाइन्ड रहना। अकेले नहीं बनना। अकेले बने, माया को दरवाजा खोला। बापदादा खुश है, मुबारक दे रहे हैं। अच्छा। सभी फारेनर्स कुछ न कुछ हर साल करते रहो। अच्छा है। सर्विस के प्लैन भी बनाते रहते हैं। एक दो को उमंग उत्साह बढ़ाते रहना, यह सबसे बड़ी सेवा है। बापदादा ने देखा कि निमित्त टीचर्स जिन्होंने ट्रेनिंग कराया वह उठो। यह भी अच्छा। (चारले भाई से) भाई सबमें चांस लेते हैं यह बहुत अच्छा। बापदादा आपके सेवा की रिजल्ट देख करके खुश है। सभी की सूरत से उमंग उत्साह लग रहा है, यह बहुत अच्छा है।

अच्छा। अभी सभी को होली की सौगात क्या देनी है, वह याद है? याद है ना! बापदादा का एक एक बच्चे से स्पेशल प्यार है, ऐसे नहीं कि सिर्फ निमित्त बनने वालों से लेकिन एक-एक बच्चा कोटों में कोई तो है ही, लास्ट नम्बर भी कोटो में कोई है। तो जो कोटो में कोई है वह तो महान हो गया ना। लेकिन कैसा भी कोई हो लास्ट हो, उसके प्रति भी सदा उसको आगे बढ़ाने के लिए एक तो एक दो को स्वमान की दृष्टि से देखो, हर एक का स्वमान है, लास्ट नम्बर का भी स्वमान है, कोटो में कोई है। प्रेजीडेंट से तो अच्छा है। पहचाना तो है, मेरा बाबा तो कहता है। तो स्वमान में रहो और सम्मान दो। एकता, लास्ट नम्बर भी एक बाबा का बच्चा है। बाबा को सामने लाओ, उसकी गलती को सामने नहीं लाओ। परिवार का है, उसमें उमंग लाओ, उत्साह लाओ, चलो गलतियां भी करते हैं, बापदादा को मालूम है क्या क्या गलतियां करते हैं, वह छिपती नहीं हैं, लेकिन हर एक अपने आपसे पूछे मैं ब्रह्माकुमारी, ब्रह्माकुमार बना क्यों, लक्ष्य क्या? जो लक्ष्य रखके आये, सिर्फ अपने को बचाने का नहीं, दालरोटी मिल रही है, संगठन अच्छा है, ब्राह्मण जीवन में खिटराग से सेफ हो गये..., इस लक्ष्य से नहीं आये। लक्ष्य बहुत अच्छा ले आये लेकिन अभी कहाँ कहाँ लक्ष्य और लक्षण में अन्तर आ गया है। बापदादा को सब पता है सिर्फ नाम नहीं लेते, कभी वह भी समय आयेगा। जो करता है, बापदादा ने देखा कि मैजारिटी संगदोष में बहुत आते

हैं। दिल भी खाती है, करना नहीं चाहिए लेकिन संग का रंग, बाप के संग का रंग कम लगा है इसीलिए वह रंग लग जाता है। बापदादा फिर भी सभी बच्चों को प्यार देकर कहते हैं कि अपना वर्तमान और भविष्य निर्विघ्न बनाओ। संगदोष में नहीं आओ। संगदोष में आ जाते हैं, टैम्पटेशन है, संगदोष में नहीं आओ। हद की प्राप्तियों के आकर्षण में नहीं आओ क्योंकि बापदादा को तरस पड़ता है कि कहता है मेरा बाबा, कहता है मेरा बाबा और करता क्या है? इसलिए आज होली का दिन है ऐसी ऐसी बातें समझदार बनके जला दो। फिर भी टूलेट के बोर्ड से आगे बदल जाओ, बापदादा मदद करेगा लेकिन सच्ची दिल को। साफ दिल मुराद हांसिल, करके देखो दिल से। सच्ची दिल और मुराद हांसिल नहीं हो, हो नहीं सकता। होली में रंग लगाते हैं ना उल्टा सुल्टा भी लगा देते हैं। तो आज होली मनाओ, उल्टे रंग को बाप के रंग में रंग लो। अच्छा। आज होली है ना तो बापदादा ने भी कह दिया है, तरस पड़ता है। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादियों से:- आज एडवांस पार्टी ने गेवर इमर्ज किया। आपको भी खिलाया। दीदी तो बहुत उमंग में थी, दादी भी। जिम्मेवार रही है ना। तो अभी भी जिम्मेवारी तो याद आती है। अच्छा है।

निर्मलशान्ता दादी से:- अपनी सूरत से बाप की मूर्त दिखाती रहती हो। आपको देख के सभी को ब्रह्मा बाप याद आता है। अच्छा है। अपनी तबियत को सम्भालके चला रही हो बहुत अच्छा। (परदादी का होली पर अलौकिक बर्थ डे है) बर्थ डे है, सारे पुण्य जमा किया है। अच्छा परदादी का बर्थ डे है। (बापदादा ने फूलों की माला पहनाई, खुश बहुत रहती है) यही पुरानों की विशेषता है, आदि रत्न हैं ना तो घबराते नहीं हैं, खुश रहते हैं।

शान्तामणि दादी से:- कोई न कोई सेवा करते रहते। चाहे मुरली सुनाने की, चाहे सभी से मिलने की करती रहती हो और करती भी रहेंगी। मूर्तियां हैं यह भी।

बृजमोहन भाई से:- दिल्ली का प्रोग्राम जो बनाया है वह अच्छा बना है और अच्छा रहेगा।

रमेश भाई से:- आपस में जो मिलते हो वह बहुत अच्छा है, क्योंकि अटेन्शन रहता है अपने पुरुषार्थ का भी और सेवा का भी। जो प्वाइंटस निकालते हो वह अच्छा है। बापदादा खुश है।

वी.आई.पी ग्रुप के साथ:- आप सभी स्नेही तो हैं ही, सहयोगी भी हैं। स्नेह है ना बाप से और स्नेही समय प्रति समय सहयोगी भी हैं। अब क्या बनना है? स्नेही हो, सहयोगी हो, अभी क्या बनना है? (बच्चा बनना है) अच्छा बच्चा बनना है कि हैं! बच्चा है या बनना है? क्या कहेंगे? बच्चा हैं? तो समान बाप बनना है। तो अच्छा है दिल से निकलता है ना मेरा बाबा। अभी धीरे धीरे अपने को इस सेवा में और थोड़ा पार्ट बढ़ाओ। अपना अपना काम तो करना है, वह ठीक है, बाबा को पहचाना यह भी ठीक है, अभी सेवा में, चाहे यज्ञ सेवा, चाहे बाहर वालों की सेवा, इस सेवा के पार्ट को ज्यादा बढ़ाओ। थोड़ा समय ज्यादा देना पड़ेगा। क्योंकि आप लोगों को देखके औरों में आपका अनुभव सुनके उमंग आता है। डर उतर जाता है। तो आप सेवा करो। (कनुप्रिया बहन, जो आस्था चैनल पर प्रोग्राम देती हैं) इसको तो भाग्य मिल गया है, घर बैठे भाग्य मिला है। कितनी आत्माओं को रास्ता बताती हो, वाणी द्वारा सेवा तो करती हो, अच्छा है।

अच्छा। कुछ भी हो लेकिन बाबा के हो। इस स्मृति में आगे बढ़ते जाओ और चेक करो तो दिनप्रतिदिन आगे बढ़ रहे हैं कि वहाँ के वहाँ हैं क्योंकि उन्नति चाहिए ना। तो दिनप्रतिदिन आगे क्या बढ़े, एडीशन क्या हुआ, यह चेक करो। अच्छा।

''बापदादा द्वारा मिले हुए खजानों को स्वयं में समाकर कार्य में लगाओ, अनुभव की अथॉरिटी बनो''

आज चारों ओर के सर्व खजाने जमा करने वाले सम्पन्न बच्चों को देख रहे हैं। साथ-साथ हर एक बच्चे ने कहाँ तक सर्व खजाने जमा किया है, उसकी रिजल्ट देख रहे थे। खजाने तो बापदादा द्वारा बहुत अविनाशी प्राप्त हुए हैं। सबसे पहले बड़े ते बड़ा खजाना है ज्ञान धन, जिससे मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति हुई है। पुरानी देह और पुरानी दुनिया से मुक्त जीवनमुक्त स्थिति और मुक्तिधाम में जाने की, सभी बच्चों को प्राप्त है। साथ में एक ज्ञान का खजाना नहीं लेकिन योग का भी खजाना है जिससे सर्व शक्तियों की प्राप्ति होती है। साथ-साथ धारणा करने का खजाना, जिससे सर्व गुणों की प्राप्ति होती है। साथ साथ सेवा का खजाना जिससे दुआओं का खजाना, खुशी का खजाना प्राप्त होता है। साथ-साथ सबसे बड़े ते बड़ा खजाना वर्तमान संगमयुग का है, समय का है क्योंकि सारे कल्प में यह संगम का समय अमूल्य खजाना है। इस संगम के समय का एक एक संकल्प वा एक एक घड़ी बहुत अमूल्य है क्योंकि संगम समय पर ही बापदादा और बच्चों का मधुर मिलन होता है और कोई भी युग में परमात्म बाप और परमात्म बच्चों का मिलन नहीं होता। साथ-साथ संगम समय ही है जिसमें बापदादा द्वारा सर्व खजाने प्राप्त होते हैं। खजाना जमा होने का समय संगमयुग ही है और कोई भी युग में जमा का खाता, जमा करने की बैंक ही नहीं है। सिर्फ एक संगमयुग है जिसमें जितना खजाने जमा करने चाहो उतना कर सकते हो और इस संगम समय का जो महत्व है वह यही है कि एक जन्म में अनेक जन्मों के लिए खजाना जमा कर सकते हैं। इसलिए यह छोटे से युग का बहुत महत्व है और खजाने भी बापदादा द्वारा प्राप्त सभी बच्चों को होता है। बाप सभी को देते हैं लेकिन खजाने को जमा करने में हर एक बच्चा अपने पुरुषार्थ अनुसार करता है। बाप देने वाला भी एक है और एक जैसा सबको देता है, एक ही समय पर देता है लेकिन धारण करने में क्या देखा कि बाप ने एक जैसा दिया लेकिन धारण करने में हर एक का अपना अपना पुरुषार्थ रहा क्योंकि खजाने को धारण करने के लिए एक तो अपने पुरुषार्थ से प्रालब्ध बना सकते हैं, दूसरा सदा स्वयं सन्तुष्ट रहना और सर्व को सन्तुष्ट करना, सन्तुष्टता की विशेषता से खजाना जमा कर सकते हो और तीसरा सेवा से क्योंकि सेवा से सर्व आत्माओं को खुशी की प्राप्ति होती है तो खुशी का खजाना प्राप्त कर सकते हो। अपना पुरुषार्थ और सर्व को सन्तुष्ट करने का पुरुषार्थ और तीसरा सेवा का पुरुषार्थ। इन तीनों प्रकार से खजाने जमा कर सकते हो। खजाने जमा करने में विशेष सम्बन्ध-सम्पर्क में आने में एक तो निमित्त भाव, निर्माण भाव, नि:स्वार्थ भाव, हर आत्मा प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखने की आवश्यकता है। अगर सेवा में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में यह सब है तो पुण्य का खाता और दुआओं का खाता बहुत सहज जमा कर सकता है।

तो बापदादा सबके पोतामेल देख रहे थे तो क्या देखा? चारों ओर के बच्चों में नम्बरवार देखा। बाप एक है, एक ही समय पर देते हैं लेकिन जमा करने में तीन प्रकार के बच्चे देखे - एक बच्चे तो जमा हुआ खजाना खाया, जमा भी किया और खाके खत्म कर देते हैं। दूसरे खाया, जमा किया और जमा करने में अटेन्शन देके बढ़ाया भी। खजाने बढ़ाने का साधन क्या है? बढ़ाने का साधन है जो खजाने मिले वह समय पर जो परिस्थिति आती है उस परिस्थिति अनुसार कार्य में लगाना। जो कार्य में लगाते हैं स्थिति द्वारा परिस्थिति को बदल सकते हैं उसका जमा होता है। जो कार्य में नहीं लगाते तो जमा नहीं होता है। तो हर एक अपने आपसे पूछो कि समय पर अपने प्रति वा दूसरों के प्रति कार्य में लगाते हो! जितना कार्य में लगायेंगे उतना बढ़ता जायेगा क्योंकि कार्य में लगाने से अनुभव होता जाता है। तो अनुभव की अथॉरिटी एड होती जाती है। तो चेक करो अपने आपसे पूछो कि यह सारे खजाने जमा हैं? और बढ़ाने का साधन समय पर कार्य में लगाते हैं? अनुभव की अथॉरिटी बढ़ती जाती है? क्योंकि अथॉरिटीज़ में सबसे ज्यादा अनुभव की अथॉरिटी सबसे ज्यादा गाई जाती है। तो हर एक को अपना खाता बढ़ाना है। चेक करना है क्योंकि अभी समय है चेक करके अभी भी खजाने बढ़ा सकते हो। अभी चांस है फिर चांस भी खत्म हो जायेगा। चाहेंगे खजाना बढ़ायें लेकिन बढ़ा नहीं सकेंगे।

बापदादा ने देखा खजाना मिलता है, खुशी-खुशी से अपने में समाने का प्रयत्न भी करते हैं लेकिन खजाना जब मिलता है, मुरली द्वारा ही खजाने मिलते हैं तो दो प्रकार के बच्चे हैं - एक सुनने वाले और दूसरे हैं समाने वाले। कई बच्चे सुनके बहुत खुश होते हैं लेकिन सुनना और समाना, दोनों में बहुत फर्क है। समाने वाले अनुभवी बनते जाते हैं क्योंकि समाया हुआ समय पर कार्य में लगाते, खजाने को बढ़ाते रहते हैं। सुनने वाले वर्णन करते हैं, बहुत अच्छा सुनाया, बहुत अच्छी बात बोली बाबा ने, लेकिन समाने के बिना समय पर काम में नहीं ला सकते हैं। तो आप सभी चेक करो समाने वाले हैं,

थोड़ा भी अगर कम होगा, भरपूर नहीं होगा तो हलचल होगी। लेकिन समाया हुआ फुल होगा तो हलचल नहीं होगी। इसलिए आज बापदादा ने सबके खजाने चेक किया। सुनाया ना - कि तीन प्रकार के बच्चे हैं, अभी अपने आपको चेक करो मैं कौन? खजाने को बढ़ाना अर्थात् समय पर कार्य में लगाना। जितना कार्य में लगाते जाते उतना खजाना बढ़ता जाता है क्योंकि जो भी खजाना है, खजाने का मालिक खजाने को कार्य में लाता है। खजाना अपने को कार्य में नहीं लगाता। तो आप सभी को सर्व खजाने बाप ने वर्से में दिया है। तो बाप के खजाने को अपना खजाना बनाना यह हर एक को अपना अटेन्शन देना है क्योंकि जितना खजाना भरपूर होगा उतना ही भरपूर अवस्था में अचल अडोल होंगे।

बापदादा यही चाहता है कि एक एक बच्चा सम्पन्न हो, कम नहीं हो क्योंकि यह चांस बाप द्वारा अविनाशी खाता जमा होना, यह सिर्फ अभी हो सकता है। इसीलिए कहा हुआ भी है अभी नहीं तो कभी नहीं। यह संगम समय के लिए ही गायन है। भविष्य में तो जो जमा किया है उसका फल प्राप्त करेंगे लेकिन प्राप्ति का समय सिर्फ अब है। तो हर एक को अपना खाता देखना है। जिसका जितना भण्डारा भरपूर है उसके नयनों से, चलन से, चेहरे से मालूम होता है, उसकी चलन और चेहरा ऐसे लगेगा, जैसे खिला हुआ गुलाब का पुष्प। बापदादा हर एक के चलन और चेहरे से देखता रहता कि कितना हर्षित, कितना खुशमिजाज़ रहता है! नयनों से रुहानियत, चेहरे से मुस्कराहट और कर्म से हर एक गुण सभी को अनुभव होता है। तो हर एक अपने आपको चेक करे।

बापदादा की हर एक बच्चे में यही शुभ भावना है कि हर एक बच्चा अनेक आत्माओं को ऐसा खजानों से सम्पन्न बनावे। आज विश्व की आत्मायें सभी यही चाहती हैं कि कुछ न कुछ आध्यात्मिक शक्ति मिल जाए। और आध्यात्मिक शक्ति के दाता आप ब्राह्मण आत्मायें ही हैं क्योंकि होलीएस्ट, हाइएस्ट और रिचेस्ट आप आत्मायें ही हैं। होलीएस्ट भी सब आत्माओं से ज्यादा आप हो। आप आत्माओं की पूजा जैसे विधिपूर्वक होती है, वैसे और किसकी भी नहीं होती। अभी लास्ट जन्म में भी आप आत्माओं की पूजा और कोई भी धर्मपिता वा महान आत्मायें जो निमित्त बनी हैं उन्हों की नहीं है। विधिपूर्वक पूजा भले यादगार बनाते हैं लेकिन विधिपूर्वक पूजा नहीं होती। और आप जैसा खजाना रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड, आप ब्राह्मण आत्माओं का एक जन्म का खजाना गैरन्टी 21 जन्म चलना ही है क्योंकि बाप द्वारा, बाप का वर्सा मिला है। तो जैसे बाप अविनाशी है, वैसे ही बाप द्वारा मिला हुआ खजाना भी अविनाशी हो जाता है। इसलिए रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड, होलीएस्ट इन दी वर्ल्ड।

तो सभी अपने को ऐसे विशेष सेवाधारी समझते हो ना! आज के समय अनुसार विश्व की आत्माओं को आवश्यकता किस चीज़ की है, जानते हो ना! आज विश्व को खुशी, शक्ति और स्नेह की आवश्यकता है। आत्मिक स्नेह चाहते हैं लेकिन आप ब्राह्मण आत्मायें अभी समय अनुसार दाता बनो। मन्सा से शक्तियां दो, वाचा से ज्ञान दो और कर्मणा से गुणदान दो। ब्रह्मा बाप ने अन्त में तीन शब्द सभी बच्चों को सौगात में दिये, याद है ना - इन तीन शब्दों को अगर सेवा में लगाओ तो बहुत आत्माओं को सन्तुष्ट कर सकते हो। वह तीन शब्द हैं - निराकारी, निरहंकारी और निर्विकारी। तो मन्सा द्वारा निराकारी, वाचा द्वारा निरहंकारी और कर्मणा द्वारा निर्विकारी। यह तीनों शब्द सेवा में लगाओ। अभी विश्व को आपके शक्ति द्वारा थोड़ा सा दिल का आनंद, सुख की प्राप्ति हो, सब निराश हैं और आप विश्व के लिए आशाओं के सितारे हो और बापदादा सभी बच्चों को बाप के आशाओं के सितारे देखते हैं। सिर्फ उम्मीदों के सितारे नहीं लेकिन आशायें पूर्ण करने वाले आशाओं के सितारे हो।

बापदादा के पास बच्चों का स्नेह सदा पहुंचता है और सबसे सहज पुरुषार्थ कौन सा है? भिन्न भिन्न पुरुषार्थ हैं लेकिन सबसे सहज पुरुषार्थ स्नेह है। स्नेह में मेहनत भी मुहब्बत के रूप में बदल जाती है। तो बाप के स्नेही बनना अर्थात् सहज पुरुषार्थ करना। स्नेह में आप सभी अपने को स्नेही समझते हैं, कभी कभी नहीं, सदा स्नेही। जो अपने को सदा स्नेह के सागर में समाये हुए समझते हैं, सदा और स्नेह के सागर में समाया हुआ। डुबकी लगाने वाले नहीं, समाये हुए। समझते हैं, स्नेह के सागर में समाये हुए, जो अपने को ऐसे समझते हैं वह हाथ उठाओ। सदा? सदा शब्द को अण्डरलाइन करो। हाथ उठाओ, सदा, सदा? हाथ तो अच्छा उठाया है। बापदादा हाथ को देखके खुश होते हैं क्योंकि हिम्मत रखते हैं। अगर कुछ कम भी होगा तो याद तो आयेगा कि हाथ उठाया है क्योंकि बापदादा का एक एक बच्चे से अति स्नेह है। क्यों? क्योंकि बापदादा जानते हैं कि यह एक एक आत्मा अनेक बार स्नेही बनी है, अभी भी बनी है और हर कल्प यही आत्मायें स्नेही बनेंगी। नशा है, खुशी है कि हम ही हर कल्प के अधिकारी आत्मायें हैं?

बापदादा ऐसे अधिकारी आत्माओं को देख दिल की दुआयें दे रहे हैं। सदा अथक बन उड़ते चलो। कभी भी अगर

कोई परिस्थिति आती है तो स्व-स्थिति को नीचे ऊपर नहीं करो। स्व-स्थिति के आगे परिस्थिति कुछ नहीं कर सकती। अच्छा। पहली बारी कौन आये हैं, वह हाथ उठाओ। बहुत आते हैं। बापदादा को एक एक बच्चे को देख नाज़ है वाह मेरे बच्चे वाह! जैसे आप दिल में गीत गाते हो ना, आटोमेटिक वाह बाबा वाह! मेरा बाबा वाह! ऐसे ही बाप भी बच्चों के प्रति यही गीत गाते कि वाह हर एक बच्चा वाह! क्योंकि बाप को भी कल्प के बाद आप बच्चे मिलते हो और एक एक विश्व के आगे महान है। तो बाप भी गीत गाते हैं वाह बच्चे वाह! वाह वाह हो ना! वाह! वाह! बच्चे हो ना! वाह! वाह! बच्चे, हाथ उठाओ।

तो सदा यही याद रखो हम वाह वाह! बच्चे हैं। चाहे पुरुषार्थी हैं लेकिन हैं वाह! वाह! बच्चे, बाप के वाह! वाह! बच्चे, बाप के साथ ही चलेंगे। रह तो नहीं जायेंगे ना! बाप तो कहते हैं हर एक बच्चे को स्नेह की गोदी में साथ ले जायें। तो तैयार हो! तैयार हैं? रास्ते में रुक तो नहीं जायेंगे? साथ चलेंगे क्योंकि वायदा है, वायदा तो निभाने वाले हो।

तो अभी बापदादा यही चाहते हैं कि फरिश्ता रूप अपना इमर्ज करो। चलते फिरते फरिश्ता ड्रेस वाले अनुभव कराओ। बापदादा ने ड्रिल सुनाई ना। वस्त्र बदली करने की आदत तो है ना! तो जैसे शरीर की ड्रेस बदली करते हो, ऐसे ही आत्मा का स्वरूप फरिश्ता, बार-बार अनुभव करो। फरिश्ता की ड्रेस पसन्द है ना! जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त फरिश्ता रूप में वतन में बैठे हैं ऐसे बाप समान आप सब भी चलते फिरते फरिश्ते रूप में अनुभव करो क्योंकि फरिश्ता रूप होगा तभी देवता बनेंगे। जैसे बाप के तीन रूप याद रहते हैं ना। बाप शिक्षक और सतगुरू, ऐसे अपने भी तीन रूप याद करो - ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता। यह तीन रूप पक्के हैं ना! कभी ब्राह्मण की ड्रेस पहनो, कभी फरिश्ते की, कभी देवता की। इस तीनों रूप में स्वत: ही त्रिकालदर्शी के सीट में बैठ साक्षी होके हर कार्य करते रहेंगे। तो सभी से बापदादा यही चाहते हैं कि सदा बाप के साथ रहो, अकेले नहीं बनो। साथ रहेंगे तब साथ चलेंगे। अगर अभी कभी कभी रहेंगे तो साथ कैसे चलेंगे! स्नेही, स्नेही को कभी भूल नहीं सकता। सारे दिन में यह अभ्यास करते रहो। अभी अभी ब्राह्मण, अभी अभी फरिश्ता, अभी अभी देवता। अच्छा।

चारों ओर के सर्व बच्चों को जो सदा खजाने से सम्पन्न हैं, सदा अपनी चलन और चेहरे से सेवाधारी हैं क्योंकि आप सबका वायदा है कि हम विश्व परिवर्तक बन विश्व का परिवर्तन करेंगे, तो चलते फिरते भी सेवाधारी सेवा में तत्पर रहते हैं। ऐसे विश्व सेवाधारी विश्व परिवर्तक हर एक को बाप के खजानों से भरपूर करने वाले बापदादा के चारों ओर के बच्चों को बापदादा का यादप्यार और दिल से दुआयें और नमस्ते। अच्छा।

सेवा का टर्न महाराष्ट्र, ज़ोन का है:- (सभी ने नो प्राबलम का ताज पहना हुआ है) अच्छा किया है सभी ने अपने ऊपर ताज लगा दिया है। जैसे ताजधारी नो प्राबलम लगाया है तो सभी के तरफ से बापदादा यही दुआ दे रहे हैं कि सदा नो प्राबलम भव। ऐसे हर एक मन-वाणी-कर्म संगठन में ऐसे ही सदा नो प्राबलम रहने वाले। प्राबलम सेकण्ड में परिवर्तन हो जाए। प्राबलम के रूप में आये और सम्पन्न स्वरूप में बदल जाये। अच्छा है, सीन देख रहे हो कितनी अच्छी है। संकल्प और श्वांस में नो प्राबलम। तो सभी के तरफ से जो ताजधारी बने हैं उन्हों को बधाई दो, ताली बजाओ। सभी बड़ी स्क्रीन में देखो, देखो कितना अच्छा लगता है। बापदादा एक एक बच्चे को जिन्होंने संकल्प किया है नो प्राबलम अर्थात् बाप समान सदा रहेंगे, इसीलिए बापदादा पदमगुणा बधाईयां दे रहे हैं। अच्छा। नाम ही महाराष्ट्र है। तो महाराष्ट्र अर्थात् महान स्वरूप द्वारा महान सेवा करने वाले। अभी महाराष्ट्र ने कोई बड़ा प्रोग्राम नहीं किया है, बहुत समय हो गया है, कोई विशेष इन्वेन्शन कर महान सेवा का पार्ट बजाने में, बापदादा को याद है कि महाराष्ट्र ने प्रदर्शनी निकालने का अच्छा पार्ट बजाया जो अभी तक भी प्रदर्शनी द्वारा सेवा हो रही है। तो जैसे यह विशेष भाई रमेश बच्चा निमित्त बना, निमित्त बना अभी तक वह यादगार है। ऐसी कोई इन्वेन्शन अभी महाराष्ट्र को करना है। करना है? कोई नई बात करो। जैसे दिल्ली वालों ने हिम्मत रखी है ना, तो सभी को सन्देश दे दें। बड़े मैदान में सन्देश तो दे दें। चाहे अखबार द्वारा चाहे टी.वी. द्वारा मीडिया द्वारा सन्देश देना ही है, उल्हना नहीं रह जाए। ऐसे कुछ न कुछ करते रहो क्योंकि बिचारी आत्मायें अभी समझती हैं कि आध्यात्मिकता आवश्यक है, शान्ति चाहिए लेकिन विचारों को साधन नहीं मिलता। कोई उमंग उल्हास दिलाने वाला नहीं मिला है, इसलिए हर एक ज़ोन को कुछ न कुछ करते रहना चाहिए। मधुबन में जैसे कोई न कोई प्रोग्राम चलता रहता है ऐसे कोई न कोई प्रोग्राम चलते रहना चाहिए। चाहे ब्राह्मणों का प्रोग्राम, चाहे सन्देश देने का प्रोग्राम, चाहे अपने उन्नति का नया नया प्रोग्राम क्योंकि कोई भी नया प्रोग्राम निकलता है तो बापदादा ने देखा है देश विदेश रूचि से करते हैं।

अच्छा है। करते रहते हो और करते चलो। अच्छा। अभी कोई नया प्लैन बनायेंगे ना? कितने टाइम में बनायेंगे? कितना मास चाहिए तैयारी में? आपस में मीटिंग करना, तारीख फिक्स करना क्योंकि देहली और बाम्बे दोनों स्थानों में महारथी सर्विसएबुल अच्छे अच्छे हैं और अभी हर एक ज़ोन में भी देखा है कि सर्विसएबुल बच्चे बढ़ते जाते हैं। सर्विस के प्लैन करने वाले अथॉरिटीज़ बहुत हैं। चाहे छोटा ज़ोन है, चाहे बड़ा लेकिन सर्विसएबुल बन गये हैं इसीलिए अभी धूम मचाओ। एक ऐसा प्रोग्राम बनाओ जो सभी ज़ोन में एक साथ हो और मीडिया द्वारा एनाउन्स हो, फलाने फलाने स्थान पर एक ही प्रोग्राम चल रहा है, हर एक ज़ोन में और अखबार में डाला जाए तो इस इस स्थान में प्रोग्राम हो रहा है। सारे स्थानों की एड्रेस और टॉपिक, टॉपिक एक ही हो। एक ही समय हो, एक ही टॉपिक हो, जहाँ भी जायें यही टॉपिक देखें। यह हो सकता है ना! हो सकता है? विदेश में भी इसी तारीख पर यही प्रोग्राम। तो चारों ओर एक हो। (इस वर्ष की थीम रखी गयी है - परमात्मा के वरदानों को प्राप्त करना) यह टॉपिक तो अच्छी है, कुछ भी आपस में फाइनल करो। आपस में मिलके डेट, टापिक और एडवरटाइज कैसे हो, यह बनाके दो। जो भी टापिक रखेंगे, पहले से ही बापदादा को पसन्द है। अच्छा है क्योंकि अभी इच्छुक हैं, पहले सुनते थे तो दूर भागते थे, अभी चाहते हैं कि कुछ सुनें। वी.आई.पी भी इन्ट्रेस्ट लेते हैं। अभी एक ही आवाज फैले। चारों ओर जहाँ भी जायें तो सुनें यही। अच्छा। अच्छा है, चारों ओर देखा जाता है कि वृद्धि भी अच्छी हो रही है, ब्राह्मण बढ़ रहे हैं। अभी नम्बरवार हैं लेकिन बापदादा यही चाहते कि नम्बरवन बनें। नम्बरवार नहीं नम्बरवन। अच्छा है। महाराष्ट्र कोई नई इन्वेन्शन निकालके सेवा में एक नवीनता का आवाज फैलायेगा। अच्छा है। बापदादा को बहुत बहुत महारथी सर्विसएबुल बच्चे दिखाई दे रहे हैं। टीचर्स भी अच्छे अन्दाज में अपना अपना सेवाकेन्द्र सम्भाल रही हैं इसकी मुबारक हो और पदमगुणा बापदादा दुआयें दे रहे हैं। अच्छा।

धार्मिक विंग, स्पोर्ट विंग:- अच्छा। यह झण्डी हिला रहे हैं। अच्छा है। अभी खेल वाले ऐसा कोई खेल निकालो जो खेल खेल में सन्देश मिल जाए। जैसे आजकल इन्डिया खेल में नम्बर ले रहा है, ऐसे आध्यात्मिक खेल ऐसे निकालो जैसे समाचार में आया था तो अमेरिका में पंतग उड़ाने के बहाने से सर्विस अच्छी हो गई और अभी भी गवर्मेन्ट चाहती है कि इस विधि से लोगों को सन्देश मिल जाए। ऐसे ही ऐसा कोई खेल तैयार करो जो चारों ओर खेल में सन्देश मिल जाए। समझा। ऐसा खेल तैयार करो।

आजकल ट्रांसपोर्ट तो इन्डिया में ट्रांसपोर्ट की हालत बहुत खराब है, रोज़ एक्सीडेंट होते रहते हैं तो एक्सीडेंट से बचे कैसे, करने वाले, उसके लिए कोई ऐसे तैयार करो जो चलाने वाले सावधान रहें। ऐसी कोई विधि निकालो जो चलाने वाले को सिखाने से सुनाने से उन्हों का मन शीतल हो जाए, एकाग्र हो जाए। इसको थोड़ा विस्तार से चारों ओर सेवा करना पड़ेगा क्योंकि आजकल इसकी आवश्यकता है। और बढ़ता ही जाता है। तो ऐसे बढ़ने वाले कार्य को परिवर्तन का प्रैक्टिकल स्वरूप दिखाओ गवर्मेन्ट को। तो इस कार्य करने से कैसे फर्क हुआ है। आजकल प्रैक्टिकल देखने चाहते हैं। तो ऐसा ग्रुप तैयार करो जो चलाने वाले ड्राइवर ऐसा कोई कर्तव्य करके दिखावे, गवर्मेन्ट के आगे एक्जैम्पुल तैयार करके दिखाओ। तभी सभी का अटेन्शन जायेगा। कोर्स कराते हो, प्रोग्राम भी करते हो लेकिन ऐसा ग्रुप तैयार करके दिखाओ जो एक्सीडेंट करने वाले परिवर्तन हो गये। जैसे शराब पीने वाले बदलके दिखाते हो ना ऐसे एक्सीडेंट करने वाले परिवर्तन हो करके दिखायें ऐसा ग्रुप गवर्मेन्ट के आगे लाओ। अभी बापदादा ने देखा गांव वाले जो सब्जियां वगैरा पैदा करते हैं वह बिना खराब चीजें (हानिकारक दवाईयाँ व खाद आदि) डालने के योगबल द्वारा सब्जियां तैयार करते हैं और गवर्मेन्ट को प्रैक्टिकल मिसाल दिखाते हैं। बापदादा ने सुना यहाँ आबू में भी प्रैक्टिस की है तो यह ऐसा ऐसा प्रूफ गवर्मेन्ट को दिखाना चाहिए। जो गवर्मेन्ट की प्राबलम है ना उसमें उन्हों को सहयोग मिले। फायदा मिले। ऐसे हर एक विंग प्रैक्टिकल प्रूफ तैयार करो। सुनते हैं कि ऐसा हो रहा है लेकिन प्रैक्टिकल प्रूफ वाला ग्रुप जो है वह गवर्मेन्ट के आगे लाओ। हर एक वर्ग ने सेवा अच्छी की है, सेवा की वृद्धि हुई है और सब बिजी भी हो गये हैं लेकिन अभी बापदादा हर एक गवर्मेन्ट के डिपार्टमेंन्ट में प्रूफ दिखाने चाहते हैं। एक एक मिनिस्ट्री में कोई न कोई सबूत होना चाहिए। जैसे हार्ट का प्रूफ है ना। कईयों की हार्ट बिना आपरेशन के, बिना दवाईयों के ठीक हुआ है, ऐसे हर एक वर्ग अपना प्रूफ दिखाये। अच्छा। ऐसा खेल तैयार करना। बापदादा भी देखेगा।

बापदादा देखेगा कौन सा वर्ग ऐसा ग्रुप तैयार करके बाप के आगे रिपोर्ट देंगे। हर एक मिनिस्ट्री में होना चाहिए। अगर एक एक मिनिस्ट्री में प्रूफ होगा तो आटोमेटिकली यह खबर एक दो से पहुंचती है। और गवर्मेन्ट के पास हर एक डिपार्टमेंट में सेवा के लिए पैसे भी बहुत हैं लेकिन प्रैक्टिकल में यूज़ नहीं होता है। सहयोग दे सकते हैं। लेकिन प्रूफ चाहिए। जैसे गांव

वालों को गवर्मेन्ट ने मदद देकरके सैलवेशन दी है। हर एक वर्ग वाले ऐसे दिखायें। दो चार गांव तो तैयार किये हैं ना। अच्छा।

डबल विदेशी:- यूथ ग्रुप भी है हाथ उठाओ। अच्छा। डबल विदेशियों ने मधुबन में अपनी और अपने साथियों की उन्नति के प्रोग्राम अच्छे बनाये हैं और रिजल्ट भी बापदादा ने सुने। तो सभी अच्छा मधुबन के वायुमण्डल में रिफ्रेश होके जाते हैं और टीचर्स भी अच्छी प्यार से मेहनत कर रही हैं। तो डबल विदेशी स्वयं भी लाभ ले रहे हैं और औरों को भी लाभ दिला रहे हैं। यह समाचार बापदादा ने सुना है और रिजल्ट भी सुनी है। अच्छा है। अभी बापदादा डबल विदेशियों द्वारा चाहे यूथ, चाहे टीचर्स, चाहे बच्चों का भी जो करते रहते हैं वह सुना। लेकिन अभी विदेशियों द्वारा एक प्रोग्राम ऐसा भारत में हो जो वी.आई.पी हर शहर के विशेष विशेष सम्बन्ध सम्पर्क वाले वी.आई.पी का इन्डिया में प्रोग्राम हो। वी.आई.पी का। हर एक देश में कोई न कोई वी.आई.पी तो होते हैं, तो विशेष जो मुख्य देश है, उनमें जो भी सम्पर्क वाले वी.आई.पी हैं, ब्राह्मण नहीं वी.आई.पी, ब्राह्मणों का तो बनाया है, वह भी अच्छा है। एक तरफ ब्राह्मणों का चले एक तरफ वी.आई.पी का चले। जो मीडिया में आवे कि देश विदेश के सम्पर्क वाले भी लाभ ले रहे हैं। बाकी तो सेवा अच्छी बढ़ा रहे हैं, हर टर्न में अनेक देशों के ब्राह्मण इकट्ठे होते हैं यह भी एक ब्राह्मण परिवार के लिए शोभा है। इससे सिद्ध होता है तो विश्व की आत्माओं का इन्ट्रेस्ट है। जैसे अभी मिडिलइस्ट वालों में आवाज अच्छा फैल रहा है। चाहे दूसरे धर्म वाले हैं लेकिन इन्ट्रेस्ट अच्छा है ऐसे वी.आई.पीज का भी ग्रुप इकट्ठा लाओ तो बहुत अच्छा है। ठीक है ना। अच्छा है। इसने पान का बीड़ा उठाया है, आओ। (डा.निर्मला दीदी को बापदादा ने स्टेज पर बुलाया) बहुत अच्छा। देश विदेश इन्डिया में भी और विदेश में भी दोनों तरफ अटेन्शन दे अपनी जिम्मेवारी सम्भाली है, इसलिए बापदादा को विदेश के ब्राह्मणों के ऊपर नाज़ है, विदेश और देश दोनों की जिम्मेवारी सम्भाली है। बापदादा खुश है। अच्छा। अभी विदेश वाले हर एक देश में एक ही समय पर एक टॉपिक, सारे विदेश के मुख्य शहरों में फैल जाए कि ब्रह्माकुमारियों का प्रोग्राम हर देश में एक ही समय पर हो रहा है। यह भी आपस में मिल करके प्रोग्राम बनाना। देश में भी विदेश में भी। पसन्द है ना! अच्छा। विदेश वाले बापदादा को एक बात में अच्छे लगते हैं, कौन सी बात में मैजारिटी, मिक्स तो होते ही हैं लेकिन मैजारिटी अपने दिल में कोई भी बात अगर नियम के विरूध होती है तो स्पष्ट बोलने में स्पष्ट कह देते हैं। ज्यादा टाइम दिल में नहीं रखते हैं, दिल से निकल ही जाता है। इसलिए जो भी बात है वह ज्यादा समय दिल में नहीं रखना। कोई भी कमजोरी को अगर ज्यादा समय दिल में रखते हैं तो फिर संस्कार बन जाते हैं, नेचर बन जाती है। इसलिए यह संस्कार अच्छा है, जो भी कमजोरी आवे वह जल्दी सुनाके परिवर्तन कर लो। और करने में कोई कोई बहुत अच्छे बच्चे हैं जो अपना हाल स्पष्ट सुना देते हैं। तो यह बहुत अच्छी बात है। मिक्स तो होता है लेकिन मैजारिटी। बाकी तो उन्नति हो रही है और उन्नति होती रहेगी। अच्छा। बापदादा खुश है। अच्छा।

दादियों से:- अच्छा चल रहा है और आगे भी अच्छा चलता रहेगा। आपस में मिलते रहो और एक दो के संस्कार को जान, उससे मदद ले आगे उड़ते रहो क्योंकि हर एक में विशेषता अपनी अपनी है, उस विशेषता से काम लेते रहो। ऐसा कोई भी नहीं है निमित्त बने हुए, जिसमें कोई विशेषता नहीं हो लेकिन उसकी विशेषता अनुसार उस एक दो को सहयोग दे आगे स्वयं भी बढ़ते चलो, संगठन को भी बढ़ाते चलो। ठीक है ना। अच्छा है। हर एक की विशेषता को तो जानते हो और हर एक को अपनी अपनी विशेषता को सेवा में लगाना चाहिए। ऐसा कोई भी नहीं है जिसमें कोई विशेषता नहीं हो लेकिन उसकी विशेषता को आगे रखके उससे ही काम लो। बाकी चलना ही है, सफलता तो सदा के लिए बनी हुई है। और हर एक का अपना अपना पार्ट भी नूंधा हुआ है, सफलता है ही है। आप निमित्त बने, अभी यह इतने सब हैं, एक एक को सफलता का वरदान मिला हुआ है। अपनी विशेषता को संगठित रूप में कार्य में लगाओ। सफलता में एक दो को सहयोग देकरके वायुमण्डल में सफलता फैलाओ। अच्छा है, बापदादा खुश है। खुश है लेकिन अभी संगठन को पक्का करो। आप लोग तो ठीक हैं लेकिन संगठन को और थोड़ा मजबूत करो, उसके लिए कोई प्लैन बनाओ। अभी टाइम बनाओ, यह जरूरी है। जैसे सभी को रिफ्रेश करना जरूरी है तो यह संगठन भी जरूरी है। वह तारीख ऐसी मुकरर करो जो सभी निमित्त जाने आने वालों को उस डेट का पता हो, और कोई भी उस दिन में प्रोग्राम और नहीं बनावे तभी चलेगा। चलो मास में दो बार तो करो। लक्ष्य रखेंगे ना, चाहे बहिनें आपस में करो चाहे बड़ी मीटिंग करो लेकिन फिक्स करो। प्रोग्राम ही इसी विधि से बनाओ। सुनाया ना कि अपना अपना प्रोग्राम बना देते हैं आने जाने का तो फिर मिस हो जाता है। आने जाने का प्रोग्राम उसी विधि से बनाओ। फिर ठीक हो जायेगा।

तीनों बड़े भाईयों से:- आप लोग जो निमित्त हो चाहे भाई चाहे बहनें, जो भी निमित्त है, परिवार निर्विघ्न रहे उसके लिए कुछ टाइम फिक्स करो। अमृतवेले बाप को तो अपना टाइम देते हो और सेवा के प्रति भी टाइम देते हो और खास परिवार की उन्नति के लिए और यज्ञ की कारोबार आगे आगे बढ़ती जाए, गवर्मेन्ट द्वारा चाहे आपस में निर्विघ्न होता जाए उसके लिए अमृतवेले 10 मिनट हर एक को देना है। कोई भी सरकमस्टांश सभी के योग से सभी के समय देने से ठीक हो सकता है। सभी का एक ही संकल्प हो तभी होगा। अच्छा है बड़ी दिल रखो, आता जायेगा, सोचेंगे ना यह करूं, नहीं करूं, नहीं करूं करूं में टाइम नही गंवाओ। आजकल समय है, अगर आप सभी शुभ भावना का एक संकल्प रखो कि होना ही है तो हो सकता है। यह वरदान है। कायदेसिर भी और दिल बड़ी भी, सिर्फ कायदा नहीं दिल बड़ी रख करके फिर कायदा। सभी का एक ही संकल्प हो, होना है, क्यों-क्या नहीं, होना ही है। तो इस विधि से सब सहज हो जायेगा। बस 10 मिनट, आप सब निमित्त बनी हुई आत्माओं को खास टाइम निर्विघ्न, परिवार निर्विघ्न के प्रति 10 मिनट योग करना है तो सहज हो जायेगा। अभी समय है सहज हो सकता है। सिर्फ हो जायेगा, हो जायेगा...।

दिल्ली में होने वाले प्रोग्राम का समाचार आशा बहन बापदादा को सुना रही हैं: हिम्मत अच्छी रखी है बापदादा खुश है। प्रोग्राम के टाइम हर एक दिल्ली वाला ऐसे समझे हमको मन्सा सहयोग देना है। और वायब्रेशन फैलाने हैं चाहे सेन्टर पर रहे लेकिन समझे हम सेवा पर हैं वह घण्टे अपने को कहाँ भी हो लेकिन समझे हमारी सेवा है तो अच्छा हो जायेगा। (सब कह रहे हैं आपकी कृपा दृष्टि रहे) आप सभी कृपा दृष्टि रखो।

गायत्री बहन से:- आपको बापदादा और सभी का यादप्यार पहुंचता रहा। इसका दिल तो यहाँ था और शरीर वहाँ था।

जर्मनी में रिट्रीट का स्थान बनाना है:- अच्छा है, दिखाओ किसी को, बन जाये तो अच्छा है।

मेहमानों से:- आप मेहमान हैं या महान बन गये? मेहमान तो नहीं समझते ना। महान बनने वाले हैं। महान बनना ही है। यहाँ आना सम्बन्ध में आना अर्थात् आगे बढ़ते ही जायेंगे। आशीर्वाद है ही।

देखो आप यहाँ तक पहुंच गये हो तो किसने भेजा यहाँ, ड्रामा ने आपको यहाँ तक पहुंचाया। अभी यहाँ का देखा, तो दिल में क्या उठता है! हमें सेवा करनी है। आप भी सारे परिवार के साथी हो ना कि साक्षी हो। साक्षी नहीं साथी। तो साथी क्या करते हैं? सहयोग देते हैं। तो सभी कौन हो? स्नेही हो, सहयोगी हो, लकी हो। बापदादा को भी आप सभी को देख खुशी है, क्या खुशी है? कि बिछुड़े हुए बच्चे मिल गये। अभी भूलना नहीं। अपना घर है ना। आपको महसूस हुआ कि अपने घर में आये हैं! तो अपना घर कभी भूलता है? तो भूलेंगे नहीं, आते रहेंगे। जो मिला है वह बांटने के बिना रह नहीं सकते। ठीक है। यह सेवा करते रहते अच्छा है।

जो ऐसे ऐसे हो ना, अपने ही शहर में ऐसा ग्रुप तैयार कर सकते हैं। होना ही है सिर्फ निमित्त बनना। सभी एक दो से लकी हो। यहाँ आना अर्थात् आशीर्वाद मिलना। जो भी सेवा कर सकते हैं, करते चलो।

बीच बीच में सेवा करते रहते हो, यह अच्छा है। आखिर सभी को सन्देश पहुंच जायेगा। निमित्त तो कोई बनेगा। बहुत अच्छा किया। आ गये बहुत अच्छा।

मिडिलइस्ट के भाई बहिनों से:- (अरेबिक भाषा में यह कोर्स कराती है) बहुत अच्छा, बापदादा की दिल से दुआयें मिलती रहती हैं। और इसने भी अच्छा सर्विस का सबूत दिया। जो विशेषता है उस विशेषता को कार्य में लगाया, लगाती रहो। यह वरदान है। ऐसे ऐसे आत्मायें तैयार हो जाएं तो आवाज फैलता जायेगा। बहुत अच्छा। (छोटे बच्चे से) यह भी याद करता है! बाप को याद करता है! यह साथी है। हैण्ड अच्छा है, बाप का सन्देश देने के योग्य आत्मा हो। बहुत कर सकती हो और भी ज्यादा कर सकती हो। यह भी साथी बहुत अच्छा है। एक दो को साथ देते चलो।

''कारण शब्द से मुक्त रह चलन और चेहरे से मुक्ति देने वाले मुक्तिदाता बनो, सेवा के उमंग-उत्साह के साथ सदा बेहद की वैराग्य वृत्ति में रहो''

आज बापदादा चारों ओर के बच्चे जो डबल मालिक हैं, उन हर एक बच्चे को देख रहे हैं। एक तो बाप के सर्व खजानों के मालिक हैं और दूसरा स्वराज्य के मालिक हैं। दोनों मालिकपन हर बच्चे को बाप द्वारा मिला हुआ है। बालक भी हैं और मालिक भी हैं। मेरा बाबा कहा और बाप ने भी मेरा बच्चा कहा, तो बालक और मालिक दोनों अनुभव है।

आज बहुत-बहुत बच्चे आये हैं, इस वर्ष का लास्ट टर्न है। तो आज बापदादा ने हर एक का पुरुषार्थ चेक किया। तो बताओ क्या देखा होगा? हर एक अपने से पूछे मेरा पुरुषार्थ क्या? बापदादा सभी बच्चों को देख खुश भी हुए लेकिन एक आश बाप की है, बतायें वह क्या है! बाप की आश को पूर्ण करेंगे ना! एक ही आश थी बतायें! हाथ उठाओ जो आश पूर्ण करेंगे। बहुत अच्छा। छोटी सी आश है, वह है आज से एक शब्द बदली करो, कौन सा शब्द? जो बार-बार नीचे ले आता है वह शब्द है - ''कारण''। इस कारण शब्द को परिवर्तन कर निवारण शब्द सदा धारण करो क्योंकि आपकी सेवा भी अभी कौन सी है? विश्व के आत्माओं की सबकी समस्या का कारण, निवारण कर, निवारण करते ही निर्वाणधाम में ले जाना है क्योंकि आप सभी मुक्तिदाता हो। तो जब औरों को भी मुक्ति दिलाने वाले हो तो स्वयं भी कारण को निवारण करेंगे तब औरों को मुक्ति दिला सकेंगे। निर्वाण में भेज सकेंगे। तो यह एक शब्द का अन्तर करना मुश्किल है कि सहज है? सोचो।

आज बापदादा जो भी आये हैं वा अपने अपने स्थान पर देख रहे हैं, सुन रहे हैं, उन सभी से एक शब्द का परिवर्तन चाहते हैं क्योंकि कारण नीचे ले आता है। कारण में तो आधाकल्प रहे, अभी निवारण करने का समय है। निवारण और निर्वाण, मुक्ति। तो हिम्मत है आज बाप को देने की। लास्ट टर्न है ना, सभी उमंग-उत्साह से आये हैं और बापदादा एक एक को मुबारक दे रहे हैं। सोने की, खाना खाने की मुश्किल भी है लेकिन सब स्नेह से, स्नेह के प्लेन ने आप सबको मधुबन में पहुंचा दिया है। बापदादा हर एक का स्नेह देख, हर एक को पदमगुणा दिल का स्नेह दे रहे हैं। लेकिन स्नेह में आप क्या करते हो? जिससे स्नेह होता है ना, उसको स्नेह में सौगात भी दी जाती है। तो आज बापदादा सौगात में यह कारण शब्द लेना चाहते हैं। यह आश बापदादा की पूर्ण करनी है ना! फिर हाथ उठाओ, यहाँ ही छोड़कर जाना है। यहाँ गेट से निकलो तो कारण शब्द समाप्त हो। गलती से आ भी जाए तो बाप को दी हुई चीज़ अमानत है। तो अमानत में क्या किया जाता है? वापस लिया जाता है? तो सभी ने दृढ़ संकल्प किया? किया? किया? हाथ उठाओ फिर से। फिर वाले हाथ हिलाओ। अच्छा। बहुत अच्छा। क्योंकि अभी समय अनुसार आपके पास क्यू लगेगी। किसलिए क्यू लगेगी? हे मुक्तिदाता मुक्ति दो। तो देने वाले मुक्तिदाता पहले आप इस एक शब्द से मुक्त बनेंगे तब तो मुक्ति दे सकेंगे।

बापदादा यही चाहते हैं कि अभी इस वर्ष का होमवर्क यही रहे कि मुझे मुक्त बन मुक्ति दिलाना है क्योंकि समस्यायें दिनप्रतिदिन बहुत बढ़नी है। तो समस्या समाधान रूप में बदल जाए। मेहनत और समय समस्या मिटाने में नहीं लगे। क्या आपको अपने भक्तों की और समय की पुकार सुनाई नहीं देती! तो अभी समय अनुसार क्या परिवर्तन करना आवश्यक है? क्योंकि अभी हर एक को अनुभवी मूर्त बन कोई न कोई अनुभव कराने की आवश्यकता है। तो बाबा अभी चाहता है कि आप सबका चेहरा, चलन ऐसा स्पष्ट दिखाई दे कि यह मुक्तिदाता के बच्चे मुक्ति देने वाले हैं। आपके मस्तक से चमकते हुए सितारे का अनुभव हो। सिर्फ सुनाने से नहीं लेकिन चेहरे से ही अनुभव हो क्योंकि अनुभव नजदीक ले आता है। तो यह अनुभव चेहरे और चलन से दिखाओ। जैसे देखो साइन्स के साधन अनुभव कराते हैं ना, अभी गर्मी की सीजन है तो गर्मी का और सर्दी का अनुभव करा रहे हैं ना। जब साइन्स के साधन अनुभवी बनाते हैं तो क्या साइलेन्स की पावर, शक्ति का अनुभव नहीं करा सकती! तो बापदादा अभी बच्चों से यही चाहते हैं कि

अनुभव की स्थिति में स्थित रह नयनों से, मस्तक से कोई न कोई शक्ति का अनुभव कराओ। सुनी हुई बात, सुनने के समय अच्छी लगती है लेकिन फिर कोई समस्या आती तो भूल भी जाते हैं। लेकिन अनुभव जीवन भर तक भूलता नहीं है।

बापदादा ने एक कारण देखा। रिजल्ट भी देखी, एक रिजल्ट देख बहुत-बहुत मुबारक दी। कौन सी रिजल्ट? आज तक सेवा का उमंग-उत्साह अच्छा है। तो बापदादा मुबारक भी देते हैं, सेवा बढ़ाते भी हैं और प्लैन भी अच्छे बनाते हैं, रिजल्ट भी यथा शक्ति मिलती है लेकिन एक बात अनुभव कराने के लिए अपने में अटेन्शन देना पड़ेगा। जैसे सेवा आपकी अभी प्रसिद्ध होती जाती है। खुश भी होते रहते हैं और आजकल इन्ट्रेस्ट भी बढ़ता जाता है। अभी बाकी अनुभव कराने की विधि क्या है? वह है उमंग-उत्साह सहित, जितना उमंग उतना ही समय अनुसार अभी बेहद की वैराग्य वृत्ति भी चाहिए। पुरुषार्थ में कोई समस्या रूप बनता है तो उसका कारण है बेहद के वैराग्य वृत्ति में कमी। अब बेहद का वैराग्य चाहिए। बेहद का वैराग्य सदाकाल चलता है। अगर समय पर होता है तो समय नम्बरवन हो जाता है और आप नम्बर टू में हो जाते हो। समय ने आपको वैराग्य दिलाया। बेहद का वैराग्य सदाकाल होता है। एक तरफ उमंग-उत्साह, खुशी और दूसरे तरफ बेहद का वैराग्य। बेहद का वैराग्य सदा न रहने का कारण? बापदादा ने देखा कि कारण है देह अभिमान। देह शब्द सब तरफ आता है - जैसे देह के सम्बन्ध, देह के पदार्थ, देह के संस्कार, देह शब्द सबमें आता है और विशेष देह अभिमान किस बात में आता है? देही अभिमान से देह अभिमान में ले ही आता है, वह अब तक बापदादा ने चेक किया कि मूल कारण पुराने संस्कार नीचे ले आते हैं। संस्कार मिटाये हैं लेकिन कोई न कोई संस्कार नेचर के रूप में अभी भी काम कर लेता है। जैसे देह अभिमान की नेचर नेचरल हो गई है ऐसे देही अभिमानी की नेचर नेचरल नहीं हुई है। कहते हैं हमने खत्म किया है लेकिन एकदम बीज को भस्म नहीं किया है। इसलिए समय आने पर फिर वह देहभान के संस्कार इमर्ज हो जाते हैं। तो अभी आवश्यकता है इस देह भान की नेचर को पावरफुल देही अभिमानी की शक्ति से वंश सहित नाश करने की क्योंकि बच्चे कहते हैं चाहते नहीं हैं लेकिन कभी कभी निकल आता है। क्यों निकलता? अंश है तो वंश होके निकल जाता। तो अभी आवश्यकता है शक्ति स्वरूप बनने का, आधार है अपने आपको चेक करो कि किसी भी स्वरूप में अंशमात्र भी पुराना देह भान का संस्कार रहा हुआ तो नहीं है? और वह खत्म होगा बेहद की वैराग्य वृत्ति से। सर्विस देख सुन बापदादा खुश है लेकिन अब बाप की यही चाहना है कि जैसे सर्विस की फलक, झलक अब लोगों को दिखाई देती है। अनुभव होता है सेवा का, ऐसे बेहद की वैराग्य वृत्ति का प्रभाव हो क्योंकि आजकल सेवा द्वारा आपकी प्रशन्सा बढ़ेगी, आपकी प्रकृति दासी होगी। आपको अनुभव करेंगे, साधन बढ़ेंगे लेकिन बेहद की वैराग्य वृत्ति से साधन और साधना का बैलेन्स रहेगा। जैसे आप लोगों को प्रवृत्ति में रहने वालों को दृष्टान्त देते हो कि सब कुछ करते कर्मयोगी कमल पुष्प के समान रहो। ऐसे आप सभी को भी सेवा करते, साधन मिलते, साधना और साधन का बैलेन्स रहेगा। तो आजकल एडीशन सेवा के साथ बेहद की वैराग्य वृत्ति भी आवश्यक है। चलते फिरते भी अनुभव करे कि यह विशेष आत्मायें हैं। सिर्फ योग में बैठने के टाइम नहीं, भाषण करने के टाइम नहीं लेकिन चलते फिरते भी आपके मस्तक से शान्ति, शक्ति, खुशी की अनुभूति हो क्योंकि समय प्रति समय अभी समय बदलता जायेगा।

तो बापदादा ने समय प्रति समय इशारा तो दे दिया है लेकिन आज विशेष बापदादा एक तो बेहद के वैराग्य तरफ इशारा दे रहा है, इसके लिए अभी अपने को चेक करके देही अभिमानी का जो विघ्न है देह अभिमान, अनेक प्रकार के देह अभिमान का अनुभव है, इसका परिवर्तन करो। और दूसरी बात बहुत समय का भी अपना सोचो। बहुत समय का अभ्यास चाहिए। बहुत समय पुरुषार्थ बहुत समय का प्रालब्ध। अगर अभी बहुतकाल का अटेन्शन कम देंगे तो अन्तिम काल में बहुतकाल जमा नहीं कर सकेंगे। टूलेट का बोर्ड लग जायेगा इसलिए बापदादा आज दूसरे वर्ष के लिए होमवर्क दे रहे हैं। यह देह अभिमान सब समस्याओं का कारण बनता है और फिर बच्चे रमणीक हैं ना, तो बाप को भी दिलासा दिलाते हैं कि समय पर हम ठीक हो जायेंगे। बापदादा कहते हैं कि क्या समय आपका टीचर है?

समय पर ठीक हो जायेंगे तो आपका टीचर कौन हुआ? आपकी क्रियेशन समय आपका टीचर हो, यह अच्छा लगेगा? इसलिए समय को आपको नजदीक लाना है। आप समय को नजदीक लाने वाले हैं। समय पर रहने वाले नहीं। समय को टीचर नहीं बनाओ।

तो बापदादा आज यही बार-बार इशारा दे रहे हैं कि स्वयं को चेक करो, बार-बार चेक करो और परिवर्तन करो। बहुतकाल का परिवर्तन बहुतकाल के प्रालब्ध का अधिकारी बनाता है। तो बापदादा चाहे अब तक ढीला-ढाला पुरुषार्थी हो लेकिन लास्ट नम्बर वाले बच्चे से भी बाप का स्नेह है। स्नेह है तब तो बाप का बना है, बाप को पहचाना है, मेरा बाबा तो कहता है इसलिए समय पर नहीं छोड़ो। समय आयेगा नहीं, समय सम्पूर्णता का हमको लाना है। बापदादा के विश्व परिवर्तन के कार्य के आप सभी साथी हो। अकेला बाप कार्य नहीं कर सकता, बच्चों का साथ है। बाप तो कहते हैं पहले बच्चे, आगे बच्चे। तो अभी अगर दूसरे वर्ष में आना ही है तो यह होम वर्क करके रखेंगे! करेंगे? हाँ, हाथ उठाओ। अच्छा। पीछे वाले भी हाथ उठा रहे हैं।

देखो आज संख्या बढ़ गई है तो बापदादा ने बच्ची को इशारा दिया तो चक्कर लगाके देखकर आओ, कहाँ-कहाँ सोये हैं, कैसे लाइन में खाते हैं। लम्बी लाइन। लेकिन सबके चेहरे पर खुशी है। मधुबन में तो हैं। लेकिन यह खुशी मधुबन में ही छोड़के नहीं जाना, साथ ले जाना। बापदादा ने वतन में बैठे आप सबके सोने का, खाना खाने की क्यू का नज़ारा देखा। बापदादा को ऐसा संकल्प होता कि अभी अभी रजाईयों की, गदेलों की बरसात पड़ जाए। परन्तु यह भी मौजों का मेला है। और अच्छी तरह से बापदादा ने देखा, जहाँ भी मिला, जैसे भी मिला है, सब मैजारिटी अच्छी तरह से पास हैं। ताली बजाओ। लेकिन यह होमवर्क भूलना नहीं। इसमें ताली नहीं बजाते। बापदादा और विशेष ब्रह्मा बाप हमेशा बच्चों को मधुबन का श्रृंगार कहते हैं। तो आप सब मधुबन में आये, बापदादा भी साकार रूप से इतने परिवार को देख खुश है। सहन करना पड़ा है, लेकिन यह सहन सदा के लिए सहनशक्ति बढ़ायेगा। सभी खुश हो ना! तकलीफ तो नहीं हुई। और देखो इतने परिवार में पानी फिर भी मिलता रहा है। सभी ने पानी यूज़ किया ना! थोड़ा कम है तो ध्यान रखना पड़ेगा परन्तु आजकल गांव में पानी पीने का भी नहीं मिलता, यहाँ तो आपको कपड़े धोने का भी पानी मिला। और इतना परिवार देख खुशी भी होती है। सारे कल्प में बापदादा को यह फखुर है कि इतना बड़ा परिवार किसी का नहीं है। अच्छा।

जो पहली बारी आये हैं, पहले बारी बापदादा से मिलने आये हैं वह उठो। देखा आधा क्लास पहले बारी वाला है। पीछे वाले हाथ उठाओ। खड़े होकर देखो। जो भी पहले बारी आये हैं उन्हों को बापदादा नये बर्थ का, बर्थ डे की मुबारक दे रहे हैं। लोग कहते हैं लाख-लाख बधाई हो बाप कहते हैं पदम पदमगुणा बधाई हो। और बापदादा अभी आने वालों को सदा एक चांस देते हैं वह चांस है कि अभी आने वाले भी अगर तीव्र पुरुषार्थ करें तो बापदादा वा ड्रामा उन्हों को लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फर्स्ट, यह भी आगे नम्बर दे सकता है। चांस है। चांसलर बनो। सिर्फ अटेन्शन देना पड़े। अच्छा है, आप सभी को भी परिवार की वृद्धि अच्छी लगती है ना। देखो मधुबन के सेवाधारी वैसे तो हर ज़ोन टर्न बाई टर्न आता है, मददगार है लेकिन मधुबन निवासी मधुबन की सब भुजायें, दादी कहती थी यह सब मधुबन की भुजायें हैं। चाहे नीचे, चाहे ऊपर, चाहे बगीचा, चाहे हॉस्पिटल, चाहे नीचे के आबू निवासी, चाहे ऊपर के आबू निवासी, सब मधुबन की भुजायें हैं। तो बापदादा ने देखा कि आज मधुबन वालों ने त्याग किया है। यहाँ के बजाए अपने अपने स्थान पर बैठे हैं लेकिन बापदादा दूर से नहीं देख रहे हैं, बापदादा दिल में समाया हुआ देख रहे हैं। फिर भी अथक सेवाधारी बन सेवा में सहयोगी तो बनते हैं ना। तो आज विशेष मधुबन उसकी सर्व भुजायें, सभी को बापदादा विशेष मधुबन निवासियों को मुबारक दे रहे हैं, मुबारक हो, मुबारक हो। अभी सभी कहते हैं एक दो को लास्ट टुब्बी है, लास्ट टुब्बी, देखो 40 वर्ष भी पूरे होने वाले हैं। 40 वर्ष में सेवा का चांस लेने वाले कितने भाग्यशाली हैं। सेवा अर्थात् मेवा। सेवा करना नहीं है, मेवा खाना है। बाबा की नज़र में, दिल में हर एक बच्चा दिलतख्तनशीन है। कोई भी ऐसे नहीं समझे पता नहीं, बाबा ने हमको देखा या नहीं देखा। बापदादा एक-एक बच्चे को चाहे दूरदेश में भी है,

तो भी दिलतख्त निवासी देख रहे हैं। पीछे वाले भी पीछे नहीं हो बापदादा के दिल पर हो। और अनेक होते भी देखो साइलेन्स कितनी अच्छी है। क्यों? सभी स्नेह में खोये हुए हैं। स्नेह की शक्ति सबको आकर्षण कर रही है, बापदादा की और परिवार की। इतना परिवार और शान्ति की शक्ति में खुशी मनाये, यही इस साइलेन्स की परिवार की विशेषता है। चाहे सीट कैसी भी मिले लेकिन आप कौन सी सीट पर बैठे हो? पीछे है, बाजू में है, सामने नहीं हैं, लेकिन एक-एक स्नेह के सीट पर बैठे हो। मधुबन निवासियों (भुजाओं सहित) एक-एक को बापदादा पदमगुणा स्नेह दे रहा है। आज दादियों को भी और निमित्त साथियों को भी बापदादा सदा अथक बन सेवा करने की मुबारक दे रहे हैं। साथ में बच्ची को, रथ को भी बापदादा मुबारक दे रहे हैं। आपकी भाकी पहुंच गई। देखो यह बचपन से वरदान है। बच्ची को ट्रांस का वरदान बचपन से ही है, इसलिए बच्ची में सरलता और सहनशीलता इसकी विशेषता के कारण यह निमित्त पार्ट मिला है। हर एक का अपना-अपना अच्छा पार्ट है। तो बापदादा दादियों को सम्भालने वाले, मुन्नी-मोहिनी को भी खास दादी बड़ी को साथ देने की मुबारक दे रहे हैं और अभी जो निमित्त हैं उन्हों को भी मुबारक। और सेवा स्थानों पर टीचर्स हैं, उन टीचर्स को भी बापदादा जहाँ से भी आये हैं, अभी जिसका टर्न है वह तो आयेगा। लेकिन जहाँ से भी टीचर्स आये हैं उन्हों को बापदादा एक विशेष सेवा याद दिलाता है, जो होमवर्क करना। टीचर्स के लिए होमवर्क है कि सदा टीचर अपने को बापदादा की सच्चे साथी, समीप के साथी अपने द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करने वाली, कोई भी आपको देखे तो इन्हों को बनाने वाला कौन! इन्हों का भी बाप शिक्षक सतगुरू कौन! आपको नहीं देखे, बाप को देखे। इसी स्वमान में यह 6-7 मास जो मिलना है, यह होमवर्क बापदादा पूछेगा। हर एक ने कितने परसेन्ट में किया? ज्यादा समाचार नहीं पूछेगा, कितनी परसेन्ट यह होमवर्क किया? आप नहीं दिखाई दे, बाप दिखाई दे। इसमें सब धारणा आ जाती है। मधुबन वालों को भी बापदादा यादप्यार तो दे ही रहे हैं। लेकिन मधुबन वाले भी चारों तरफ के यह समझें कि मधुबन का एक-एक रत्न विशेष बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त है। तो सारा समय मधुबन वाले ऐसे मन्सा सेवा, कर्मणा सेवा और सबको बाप समान बनाने का एक्जैम्पुल बनके दिखायें। मधुबन वालों को यह रिजल्ट देनी है कि बाप समान बनने का नक्शा अपने में दिखाया? हर एक के मुख से निकले वाह बाबा के बच्चे वाह! और आप सभी क्या करेंगे? आप सभी अपने को नम्बरवार नहीं लेकिन नम्बरवन बनने का एक्जैम्पुल बनके दिखाना। नम्बरवार बनने में मजा नहीं, बनना है तो नम्बरवन। नम्बरवार बनना क्या बड़ी बात! तो सभी विन और वन यह रिजल्ट सुनाना। अच्छा।

सभी तरफ के बापदादा के दिलतख्तनशीन और भ्रकुटी के तख्तनशीन और भविष्य के भी राज्य तख्तनशीन ऐसे बापदादा के सिकीलधे पदम पदमगुणा भाग्यशाली बच्चों को सदा अपने नयनों द्वारा रूहानियत का अनुभव कराने वाले और चेहरे द्वारा सदा खुशकिस्मत, मन सदा खुशी में नाचता रहे, कोई भी सामने आवे, अनुभव करे कि इन जैसी खुशी कहाँ भी नहीं है और सबक सीखके जाये। ऐसे हर बाप के बच्चे अपने द्वारा बाप का, मुख द्वारा बाप का परिचय देते हो लेकिन नयनों और चेहरे द्वारा बाप का साक्षात्कार कराने वाले, ऐसे चारों ओर के बच्चों को, जिन्होंने पत्र भेजे हैं, ईमेल किया है, सभी के बापदादा के पास पहुंचे हैं, आपने किया, उसी समय बाप के पास पहुंच गया, सामने बैठे हुए वालों से आप सबने जिस समय किया, उसी समय पहुंच गया। इसीलिए बहुत-बहुत मुबारक हो। देश विदेश सब बच्चों को बाप दिल के स्नेह का रेसपान्ड दे रहे हैं। तो चारों ओर के बच्चों को बापदादा पदमगुणा दिल का दुलार, दिल का प्यार दे रहे हैं और सभी को नमस्ते कह रहे हैं। अच्छा - आज टर्न किसका है?

ईस्टर्न ज़ोन, नेपाल, तामिलनाडु (बंगाल बिहार, उड़ीसा, आसाम):- (टीचर्स ने ताज पहने हैं) अच्छा - इस ज़ोन में और ज़ोन के भी एड हैं। तो अलग नेपाल वाले हाथ उठाओ। चेन्नई वाले, तामिलनाडु वाले, अच्छा है। सभी को मिलाकर ईस्टर्न ज़ोन कहते हैं। जहाँ ज्ञान सूर्य प्रगट हुआ। तो ज्ञान सूर्य के प्रभाव की शक्तिशाली धरनी है। जैसे फॉरेन वाले कहते हैं ना, भारत में ही बाप क्यों आया? तो भारत में प्रभाव है ना। ऐसे भारत में भी ईस्टर्न में ज्ञान सूर्य प्रगटा। तो धरनी में प्रभाव है इसलिए इस ज़ोन में और भी ज़ोन हैं। अच्छी, भिन्न-भिन्न प्रकार से सेवा कर रहे हो। अब बापदादा कोई कमाल देखने चाहते हैं। बापदादा ने पहले भी कहा है कि हर ज़ोन विशेष अपने वी.आई.पी

भी तैयार करो। लेकिन सिर्फ स्नेही सहयोगी नहीं, सेवा में हर कार्य में साथी, सिर्फ सहयोगी नहीं। साथी भी, सहयोगी भी, माइक भी, ऐसी लिस्ट अभी तक कोई-कोई ज़ोन ने दिया है लेकिन मिक्स वी.आई.पी है। खास ऐसे वी.आई.पी जो वारिस क्वालिटी के नजदीक हो, भले वारिस प्रैक्टिकल नहीं हो, सरेन्डर नहीं हो लेकिन क्वालिटी वारिस की। तो ऐसे बापदादा के पास ग्रुप नहीं आया है। दो चार अलग नाम भेजे हैं लेकिन नाम आवे और विशेष कमेटी पास करे फिर उस ग्रुप को बापदादा विशेष कार्य में लगायेगा। फिर भी वृद्धि-विस्तार अच्छा है। इसका नाम रखते हैं बंगाल और बिहार, यह भी टाइटल देते हैं। तो बापदादा के पास बिहार में बहार आई, यह फोटो आया है और समाचार अच्छा सुनाया कि जब से बिहार में हलचल हुई तो जो भी एरिया है उसमें सेन्टर खुल गये हैं। उसकी मुबारक हो। बंगाल वाले भी आस पास में बढ़ रहे हैं। लेकिन अभी जो होम वर्क दिया है उसमें नम्बरवन बनेंगे ना। बाकी बापदादा सेवा के क्षेत्र में चारों ओर के मेहनत और प्लैन देखते रहते और खुश हैं। जैसे दिल्ली में भी अभी किया। ऐसे कुछ न कुछ नवीनता लाते रहो। चाहे विघ्न आया लेकिन योग की शक्ति ने कवर कर लिया। तो ऐसे छोटे-बड़े छोटे-छोटे प्रोग्राम्स करते रहो और बापदादा ने इस वर्ष के लिए जो प्लैन दिया कि एक ही समय एक ही टापिक हर ज़ोन में भारत में और विदेश में भी हो तो यह रिजल्ट भी बापदादा के पास आई है कि कईयों को यह उमंग उत्साह है और मीटिंग में इसका प्लैन बनायेंगे। यह भी अच्छा है। जैसे दिल्ली में मीडिया में प्रोग्राम चालू किया तो रिजल्ट है ना। स्टूडेन्ट जगह-जगह पर बने हैं, यह है रिजल्ट। ऐसे हर एक अपने अपने शहर में या ज़ोन में, ज़ोन में तो कर ही सकते हैं। कोई न कोई प्रोग्राम के टाइम मीडिया द्वारा चारों ओर दिखायें, कोई ऐसा प्रबन्ध करें। तो क्या है अगर घर बैठे सभी को घर में देखने को मिलता है तो वह भी आपका उल्हना पूरा हो जाता है। इसलिए जब भी कोई प्रोग्राम करते हो थोड़ा सा जैसे और खर्चा करते हो वैसे वह प्रोग्राम मीडिया द्वारा भी चारों ओर देखें यह भी प्रबन्ध करना अच्छा है और हो सकता है कि मीडिया वाले चारों तरफ आपका फंक्शन देख शुभ भावना देख साथी भी बन जायें। साथी नहीं बनें, तो सहयोगी तो बन जायें। तो सेवा करो लेकिन सेवा के साथ साथ अपनी बेहद के वैराग्य की चेकिंग भी जरूर रखना, बैलेन्स हो। अच्छा, मुबारक हो ज़ोन को। जो सभी को देखो, कितनों को यज्ञ सेवा का चांस दिया। अच्छा लगा ना। अच्छा लगा? यज्ञ सेवा का हजार गुणा पुण्य ज्यादा बनता है। तो आप जो सच्ची दिल, बड़ी दिल से सेवा करने वाले बनें उन्हों का हजार गुणा ज्यादा पुण्य का खाता जमा हुआ। अच्छा है, संख्या भी अच्छी है। बाकी कोई नया काम करके दिखाना। अच्छा। सभी को, ज़ोन में आये हुए एक-एक भाग्यवान आत्मा को बापदादा पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

डबल विदेशी:- (40 देशों के 300 भाई बहिनें आये हैं) आप विदेशी हो? लेकिन सबसे बड़ा विदेशी कौन? बापदादा तो आपसे भी बड़ा विदेशी है। कितना दूर से आते हैं। आपके एरिया तो माप सकते हैं लेकिन बाप की एरिया हिसाब निकाल सकते हैं? आपको विदेश से देश में आने में टाइम कितना लगता है? और बापदादा को आने में कितना टाइम लगता है? तो विदेश में भी सेवा और स्व परिवर्तन की लहर चल रही है। बापदादा ने समाचार सुना कि जो मधुबन में नहीं आये, कारण से उन्हों को भी अपने अपने स्थान पर ट्रेनिंग वा भट्ठी का प्रोग्राम चलाते हैं, यह भी अच्छी बात है। और वह भी अनुभव करते हैं कि मन से मधुबन पहुंच गये हैं। आप तन और मन से पहुंचे हो वह मन से मधुबन में पहुंचते हैं। अच्छा, गायत्री पहुंच गई। अच्छा है। अनुभव अच्छा हो रहा है। अंकल और आंटी का भी यादप्यार पहुंचा। बापदादा तो हमेशा कहते पहला वी.आई.पी विदेश में निमित्त अंकल आंटी बनें और प्यार भी याद भी अच्छी है। बापदादा भी ऐसे सर्विसएबुल बच्चों को विशेष किरणें देते हैं। ब्रह्मा बाबा साकार में भी ऐसे सिकीलधे बच्चों को रात को जाग जागकर करेन्ट देते थे। तो अब भी बापदादा वतन से बच्चों को, स्नेही बच्चों को, सर्विसएबुल बच्चों को करेन्ट देते हैं, सकाश देते हैं और सकाश पहुंचती है।

तो डबल विदेशी डबल तीव्र पुरुषार्थी हैं। ऐसे हैं ना। डबल तीव्र पुरुषार्थी, हैं ऐसे? हाथ उठाओ। अच्छा। बापदादा हर एक बच्चे को तीव्र पुरुषार्थी देखने चाहते हैं। पुरुषार्थी नहीं, तीव्र पुरुषार्थी। (मुरली भाई भी बहुत याद करता है) बापदादा को याद पहुंचती है। वह भी निमित्त तो बना ना। रजनी बच्ची भी गुप्त रूप में लण्डन का सेन्टर खुलवाने के

निमित्त तो बनी। इनडायरेक्ट मुरली बच्चे का भाग्य तो बना। अभी तो बच्चा बन गया। वह भी याद करता है। वैसे चारों ओर के देश वाले या विदेश वाले जो भी याद करते हैं और करते हैं, बापदादा के पास लिस्ट लम्बी है। दिल से निकलता है मेरा बाबा और बापदादा हाजिर हो जाते हैं। तो अच्छा है। अच्छा यह (कुवेत से वजीहा बहन) आई है, आपका ग्रुप कहाँ है? देखो, साथी भी बना दिया। सिकीलधे बच्चे लाई हो। अच्छा। एक-एक बच्चा बाप को एक दो से प्यारा है। अगर नाम लेवें तो कितनों का लेवें। सभी समझो हमारा नाम बाप के दिल पर है। अच्छी सेवा करते हैं। आजकल विदेश में दिखाई देता है मिडिलइस्ट की बारी ज्यादा है। सब धर्मो को सन्देश तो पहुंचना है ना।

अभी हर ज़ोन एक पुरुषार्थ करे, क्या करे? कोई ऐसा नास्तिक, कड़ा नास्तिक को आस्तिक बनाके लावे। फिर वह सबके आगे अपना अनुभव सुनाये। नास्तिक से आस्तिक कैसे बना। बड़ी सभा में अपना सुनावे। छोटे-मोटे नहीं लेकिन ऐसा हो जिसका प्रभाव जनता पर पड़े। जैसे हर वर्ग की सेवा करते हो ना, तो ऐसे भी कोई तैयार करो। ऐसे ही कोई धर्म वाले को अथॉरिटी को तैयार करो, जो अपना अनुभव सुनावे कि वास्तव में जो परमात्मा का परिचय सही ब्रह्माकुमारियां देती हैं, ब्रह्माकुमार देते हैं वह राइट कैसे है? उनके मुख से यह अथॉरिटी के बोल निकलें। आखिर एक प्वाइंट रही हुई है, गीता का भगवान कौन? वह भी सिद्ध तो होगी ना। जब यह सिद्ध हो तब कहें भगवान आ गया। बहुत अच्छा। मधुबन का श्रृंगार बनके आते हो और बापदादा देखकर खुश होते हैं। अच्छा।

दादियों से:- आप दूर बैठे भले दूर बैठे हो लेकिन आप सभी को बापदादा भाकी पहन रहा है। पीछे वालों को पहले भाकी पहन रहे हैं। स्नेह क्या नहीं अनुभव करा सकते। अच्छा। (डा.निर्मला से) अच्छा पार्ट बजा रही हो बापदादा खुश है।

(परदादी से) (इस्टर्न ज़ोन की इन्चार्ज है) निमित्त तो बनी। निमित्त बनी है, आपके कारण सभी बाबा बाबा याद करते हैं, जो नये-नये आये हैं वह आपको देखकरके आपको नहीं देखते, बाप को देखते हैं। यह विशेष वरदान है। अच्छा।

शान्तामणि दादी से:- अपना-अपना पार्ट समय पर अच्छा बजा रही हो। लेकिन पुरानों को किस नज़र से सब देखते हैं? आदिकाल के हैं। आदिकाल का महत्व है। बाकी थोड़े बचे हैं लेकिन आदिरत्न तो हैं ना। अच्छा।

बृजमोहन भाई से:- दिल्ली का प्रोग्राम अच्छा हुआ। एक बारी सिस्टम बन गई ना तो अभी आगे के लिए भी बनती रहेगी। अभी सभी के ध्यान में आयेगा कि क्या कार्य कर रहे हैं।

दिल्ली की टीचर्स उठो। खड़ी हो जाओ। अच्छा। सर्विस की अच्छा लगा ना। यह है सभी का एक संकल्प साथ रहा। अभी आगे बढ़ता रहेगा। जो अनुभव हुआ वह आगे भी बढ़ेगा लेकिन कोई भी कार्य में सफलता चाहते हैं तो उसका पहला फाउण्डेशन है सबकी एकमत। सभी के दिल में उमंग उत्साह हो। तो पेपर भी अनुभवी बनाता है। तो ऐसे ही संगठन की शक्ति सब सहज कर सकती है। बापदादा हिम्मत देख खुश है। जहाँ हिम्मत है वहाँ प्रकृति की साथियों की सब मदद मिल जाती है। तो मुबारक हो।

(अभी इससे भी बड़ी सभा करेंगे, उसमें बापदादा को भी आना है)बापदादा ने तो अभी भी देखा। आपने नहीं देखा। (अजमेर में भी अच्छा प्रोग्राम हुआ) अच्छी हिम्मत रखी। हिम्मत रखी तो सफलता है।

चेन्नई का समाचार भी सुना था। तो जो प्रोग्राम कर रहे हैं, छोटा सा प्रोग्राम लेकिन रिजल्ट अच्छी है। (चेन्नई वाली टीचर्स उठें) अच्छा है। बापदादा ने रिजल्ट सुनी। कम खर्चा और रिजल्ट अच्छी निकाली है। क्योंकि उस तरफ शिव की पूजा दिल से करते हैं। तो छोटा सा मेला (ज्योर्तिलिंगम मेला) है लेकिन रिजल्ट अच्छी है। हर एक ज़ोन कुछ न कुछ कर रहा है। कभी कोई करता है, कभी कोई करता है लेकिन सभी ज़ोन को बापदादा जिन्होंने नहीं भी किया है, उनको भी पहले से करने की मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

''सर्व खजानों से सम्पन्न अपने चेहरे वा चलन से अलौकिकता का साक्षात्कार कराओ''

आज सर्व खजानों के दाता अपने खजानों के मालिक बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा सर्व खजानों से सम्पन्न है क्योंकि बाप ने सर्व बच्चों को एक जैसा एक ही समय में सर्व खजाने दिये हैं। तो बापदादा अपने बालक सो मालिक बच्चों से मिलने आये हैं। बच्चों ने बुलाया तो बाप बच्चों के स्नेह में पहुंच गये हैं। खजाने तो बहुत हैं, सबसे पहला खजाना है ज्ञान धन, जिस ज्ञान धन से मालामाल हो गये, महादानी बन औरों को भी बांटते रहते हो। जिस ज्ञान के खजाने से जो भी भिन्न-भिन्न बंधन में आत्मा फँस गई उन सब बंधनों से मुक्त हो गये। बन्धनयुक्त से बन्धनमुक्त हो गये। साथ में योग अर्थात् याद का खजाना, जिससे शक्तियों की अनेक शक्तियां प्राप्त की है, ऐसे ही धारणा द्वारा सर्व गुणों की अनुभूति अर्थात् खजाना मिला। साथ में धारणा की शक्ति से सर्व के स्नेह की शक्ति, सर्व के प्यारे और न्यारेपन की शक्ति का खजाना प्राप्त किया। सर्व के स्नेह का खजाना अनुभव किया। साथ में सर्व ब्राह्मण सम्बन्ध से अपार खुशी का खजाना अनुभव किया। लेकिन सर्व खजानों के साथ जो विशेष खजाना है वह है संगम के समय का खजाना। जिस आत्मा को समय के खजाने का महत्व है वह सदा अनेक प्राप्तियों के मालिक बन जाते हैं क्योंकि संगमयुग का समय है बहुत छोटा लेकिन समय से प्राप्तियां ज्यादा है। सबसे ज्यादा संगमयुग की श्रेष्ठ से श्रेष्ठ प्राप्ति है स्वयं भगवान बाप रूप में, शिक्षक रूप में, सतगुरू के रूप में प्राप्त होता है। संगमयुग में छोटे से जन्म में 21 जन्म की प्राप्ति, जिसमें तन, मन, धन, जन सर्व प्राप्ति हैं और गैरन्टी है 21 जन्म फुल, आधा नहीं, पौना नहीं लेकिन फुल 21 जन्म की गैरन्टी है। तो सबसे ज्यादा जो महत्व है वह है संगमयुग का एक-एक सेकण्ड अनेक वर्षों के समान है। तो बोलो, सर्व खजानों से सम्पन्न तो हैं? सम्पन्न है ना? इसलिए बापदादा सदा समय की स्मृति दिला रहे हैं। कई बच्चे समझते हैं कि एक दो मिनट अगर और कुछ सोच लिया, तो 2 मिनट ही तो हैं। लेकिन जितना समय का महत्व है उस अनुसार तो 2 मिनट नहीं, 2 मास भी नहीं, दो वर्ष के समान हैं। इतना महत्व है संगम के समय का। सर्व शक्तियों की, सर्व गुणों की, परमात्म प्यार की, ब्राह्मण परिवार के प्यार की और कल्प पहले वाले ईश्वरीय हक की। सर्व प्राप्ति इस छोटे से युग में हैं और कोई भी युग में यह सर्व प्राप्ति नहीं। राज्य भाग्य होगा, आप सबका राज्य होगा, सुख शान्ति सब होगा लेकिन परमात्म मिलन का, अतीन्द्रिय सुख का, सर्व ब्राह्मण परिवार का, आदि मध्य अन्त की नॉलेज का वह अब संगम पर ही मिला है, हर कल्प मिलता रहेगा।

तो बापदादा हर बच्चे के चेहरे से देखते हैं कि खजाने जमा कितने हैं। खजाने तो मिले लेकिन हर एक ने कितना जमा का खाता बढ़ाया है, वह हर एक के चेहरे से, चलन से दिखाई देता है और आप सब भी अपने आपको जानते हो कि मैंने कितना जमा किया है? अभी बापदादा की यही दिल की आश है कि खजाने मिले तो हैं लेकिन अब समय सिर्फ वर्णन करने का नहीं है लेकिन आपका चेहरा और चलन प्रत्यक्ष अनुभव कराये कि यह आत्मायें कोई विशेष हैं, न्यारे हैं और परमात्म प्यारे हैं क्योंकि आगे चलकर समय परिवर्तन होने से आपकी सेवा सिर्फ वर्णन करने से नहीं, समय नाजुक होने से इतना समय कोई निकाल नहीं सकेगा लेकिन आपके खजाने सम्पन्न चेहरे से, चलन से आपकी अलौकिकता का दूर से ही साक्षात्कार होगा। तो ऐसा पुरुषार्थ अभी अपना प्रत्यक्ष करो। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, चाहे संगठन के बीच में भी रहा तो भी दूर से वह पर्सनैलिटी चमक अनुभव हुई। ऐसे अभी विशेष डबल विदेशी, बापदादा डबल पुरुषार्थी कहते हैं तो बापदादा निमित्त आज डबल विदेशी बच्चों को देख खुश है। पुरुषार्थ वृद्धि का अच्छा कर

रहे हैं, पालना भी सभी को बहुत अच्छी मिल रही है, निमित्त बनी हुई आत्माओं से, और बापदादा को एक बात सभी की बहुत अच्छी लगती है कि सर्व आत्मायें हर वर्ष अपना संगठन का मिलन मधुबन में विशेष करते हैं क्योंकि मधुबन का वायुमण्डल रिफ्रेशमेंट में बहुत सहयोग देता है और एक ही जिम्मेवारी, स्व-परिवर्तन, मन्सा सेवा एक दो के अनुभवों का अच्छा चांस मिलता है। तो बापदादा इस बात पर मुबारक देते हैं।

अभी कुछ कमाल अपने-अपने स्थान पर जाकर करना, कुछ न्यारापन जो बाप को प्यारा है वह प्रैक्टिकल में अनुभव कराना जिससे मधुबन की रिफ्रेशमेंट का सहयोग वहाँ भी अनुभव करते रहेंगे। तो आज विशेष डबल पुरुषार्थी ग्रुप का मिलन है और देखो आप सभी से इन्डिया वाले बच्चों का इतना प्यार है जो पहला चांस आपको ही देते हैं। तो पहले चांस का रिजल्ट पहला नम्बर लेना है। अच्छा लगता है, बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि डबल विदेशी या डबल पुरुषार्थी बच्चों ने बाप का एक विशेष टाइटिल प्रत्यक्ष किया है। जो विदेश में मैजारिटी तरफ के बाप के बच्चों को निकाल उनकी भी तकदीर की तस्वीर बना दी है, इसीलिए लगन से जो चारों ओर मेहनत कर रहे हैं, उससे बाप का विश्व कल्याणकारी कर्तव्य प्रसिद्ध किया है। इसीलिए बापदादा हर बच्चे को वाह! बच्चा वाह! की मुबारक देते हैं। अभी भी जैसे भारत में कोने-कोने में सन्देश देने की सेवा चलती रहती है ऐसे वहाँ भी उमंग-उत्साह है कि रहे हुए देश में सन्देश दे दें क्योंकि समय पर कोई भरोसा नहीं। बापदादा ने पहले से ही कहा है कि अचानक क्या भी हो सकता है इसलिए सन्देश देने का वा अपने प्रोग्रेस का अभी-अभी, कभी-कभी नहीं, बापदादा ने कहा ही है कि वास्तव में ब्राह्मणों की डिक्शनरी में कभी-कभी शब्द शोभता नहीं है, अभी-अभी, संकल्प किया करना ही है। देखेंगे, करेंगे, यह गे-गे का शब्द ही नहीं है। इसलिए आपकी मम्मा ने भी यही लक्ष्य रखा, याद दिलाने का कि अब नहीं तो कब नहीं।

तो डबल पुरुषार्थी बच्चे अभी-अभी करने वाले हैं या कभी-कभी? जो समझते हैं कि अभी-अभी करके दिखाने वाले हैं, वह हाथ उठाओ। करना ही है। करना ही है। करेंगे नहीं, करना ही है। याद रखना, अपने आपही अपना चार्ट रखना और बापदादा ने पहले ही सुनाया है कि हर रात्रि को बापदादा को अपने सारे दिन का चार्ट सुनाने के बाद अपना दिमाग खाली करके सोने से आपको नींद भी अच्छी आयेगी और साथ में रोज़ का हालचाल देने से दूसरे दिन याद रहता है कि बाबा को हमने अपना कहा है, तो वह स्मृति सहयोग देती है। धर्मराजपुरी के लिए जाना नहीं पड़ेगा। दे दिया ना और परिवर्तन कर लिया तो धर्मराजपुरी से बच जायेंगे। अभी दूसरे वर्ष, देखा तो किसने नहीं है लेकिन अभी लक्ष्य रखो, वर्ष को छोड़ो, कम से कम जितने थोड़े समय में अपने को जो बाप की आश है कि चेहरा दिखाई दे, चलन दिखाई दे, वह जल्दी से जल्दी प्रैक्टिकल में करके दिखाओ। हिम्मत है, तो हाथ उठाओ। हिम्मत है? हिम्मत है? अच्छा मुबारक हो। बापदादा तो हर बच्चे में निश्चय और हिम्मत का उमंग-उत्साह अभी-अभी देख रहा है। लेकिन जाते-जाते प्लेन में थोड़ा कम नहीं करना। बढ़ाते रहना। दृढ़ संकल्प की चाबी जो बापदादा ने दी है उसको सदा ही कायम रखना। करना ही है, अभी-अभी, गे गे नहीं। वह समय अभी गया। हो जायेगा, होना ही है। हो जायेगा नहीं, होना ही है। डबल पुरुषार्थी का टाइटिल बापदादा ने जो दिया है, उसको सदा याद रखना।

बाकी बापदादा ने रिजल्ट सुनी, बापदादा ने जो सेवा का प्लैन दिया, उसमें भारत ने भी कम नहीं किया और विदेश ने भी कम नहीं किया है। इस वरदान को मैजारिटी स्थानों में उमंग-उत्साह से किया है और रिजल्ट भी अलग-अलग स्थान की आ रही है। तो बापदादा चाहे भारत के बच्चों को, चाहे विदेश के बच्चों को पदम-पदम गुणा प्रैक्टिकल लाने में मुबारक दे रहे हैं।

अभी इस वर्ष में विशेष कौन सी बात प्रैक्टिकल में करनी है, वह सुना दिया कि अभी चेहरे में चमक दिखाई दे,

जो भी देखे, प्रत्यक्षता के निमित्त बनना है, बाप को प्रत्यक्ष करना है तो क्या करना है? सदा मुस्कराता हुआ चेहरा, कोई चिंतन में, कोई उलझन में नहीं, बापदादा ने सुनाया था कि अभी दो शब्द याद करो माया को इशारा करो गेट आउट और अपने को गेस्ट हाउस में अनुभव करो। यह दुनिया आपकी नहीं है, गेस्ट हाउस है, अब तो घर जाना ही है। घर के नज़ारे मन में बुद्धि में दिखाई दें। तो आटोमेटिकली घर आया कि आया, आपका एक गीत है, अब घर चलना है। तो यह लहर हर एक चाहे भारत, चाहे विदेश, अब यह अनुभव प्रत्यक्ष करके दिखाओ। बेहद का वैराग्य, गेस्ट हाउस में दिल नहीं लगती। जाना है, जाना है, याद रहता है। तो बेहद का वैराग्य यह कोई भी प्रकार का, मन के संकल्पों का आपस में संगठन के माया के विघ्नों का एकदम समाप्त कर देगा। यह माया के तूफान आपके लिए तोहफा बन जायेंगे। यह जो छोटे-मोटे पेपर आते हैं यह पेपर नहीं लगेंगे लेकिन एक अनुभव बढ़ाने की लिफ्ट लगेंगे। गिफ्ट और लिफ्ट। समझा।

अभी लक्ष्य रखो बेहद के वैरागी और हिम्मत उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ते रहो और उड़ाते रहो। अभी उड़ने का समय है, पंख अपने सदा चेक करो कमजोर तो नहीं हो रहे हैं! तो बापदादा डबल विदेशियों का विस्तार देख खुश है, अभी क्या देखने चाहते हैं? हर बच्चा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण, सर्व खजानों से सम्पन्न और हर श्रीमत जो मिलती रही है, उसमें सम्पूर्ण। पसन्द है? पसन्द है तो ताली बजाओ। अच्छा। यह ताली हर दिन याद करना, अपने आप ही मन में बजाना, बाहर से नहीं मन में बजाना। यह होम वर्क है। अच्छा।

90 देशों से 2300 भाई बहिनें आये हुए हैं:- (पांचों खण्डों के भाई बहिनों को अलग-अलग ग्रुप में खड़ा किया)

1- अमेरिका, कैनाडा और कैरेबियन के भाई बहिनें, 2- आस्ट्रेलिया, एशिया, न्युजीलैण्ड फिजी, 3- यूरोप, यू.के., मिडिलईस्ट 4- अफ्रीका, साउथ अफ्रीका, मौरीशियस, 5- रशिया, सी.आई.एस., बाल्टिक रीज़न

सभी तरफ आगे बढ़ने का संकल्प और आपस में रूहरिहान भी की है, बापदादा के पास समाचार आता रहता है। अभी एवररेडी ग्रुप बनाओ। जो देश जितने भी आये हैं, उन देशों में बापदादा प्राइज़ देंगे, क्या प्राइज देंगे वह तो देखेंगे उस समय। लेकिन बापदादा डबल पुरुषार्थी बच्चों के हर एरिया के ग्रुप को यही कहते हैं कि कोई भी ग्रुप जो नम्बरवन, एक देश के एक-एक शहर में जितने भी सेन्टर हैं, मानों अमेरिका है, अमेरिका के कनेक्शन में जो भी देश हैं, वह सभी देश आपस में राय कर प्रोग्राम बनायें कि यहाँ सभी निर्विघ्न रहेंगे, एवररेडी रहेंगे, मायाजीत रहेंगे, स्नेही और सेवा में सहयोगी रहेंगे। जो नम्बरवन हो उसको बापदादा प्राइज देगा। चलो एक नहीं तो तीन को देंगे। एक दो तीन। तीन नम्बर। वैसे तो एक को दिया जाता है लेकिन डबल पुरुषार्थी हैं ना तो तीन को चांस देंगे। पसन्द है? हाँ हाथ हिलाओ। पसन्द है? कितना टाइम चाहिए? यह टीचर सुनावें, कितना टाइम चाहिए प्राइज लेने में? बताओ। (फरवरी तक) सभी देशों की टीचर्स हाथ उठाओ। ठीक है? तैयार होंगे ना! फिर बापदादा प्राइज देंगे। बहुत अच्छा। इसकी ताली तो बजाओ। अच्छा।

भारत का भी टर्न आयेगा। अभी तो आप लोगों का टर्न है। बापदादा भी खुश होते हैं वाह तीव्र! पुरुषार्थी बच्चे वाह! अच्छा, अभी क्या करना है? अच्छा।

चारों ओर के तीव्र पुरुषार्थी हिम्मत और उमंग उत्साह से उड़ने वाले, चलने वाले नहीं, उड़ने वाले, चारों ओर के बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने वाले बापदादा के दिलतख्तनशीन, सदा बाप के कम्बाइन्ड रूप का अनुभव और सहयोग लेने वाले हर एक बाप के सिकीलधे, स्नेही बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:- बाप के साथ आप सबका भी सहयोग रहा है ना। बच्चे और बाप दोनों के सहयोग से यज्ञ चला है, चलता रहेगा। निमित्त तो आप भी हो ना। साकार में एक ने कहा दूसरे ने किया। एक दो के सहयोगी बन उड़ रहे हो। बाबा उड़ते हुए देख खुश होते हैं। (दादी जानकी ने कहा कमाल है गुल्जार दादी की) वह तो साथ में है ही। बापदादा की यही शुभ इच्छा है कि आप सभी जो निमित्त हैं वह सदा एक दिखाई पड़ें। भिन्न-भिन्न नहीं, एक दिखाई दें। एक ने कहा दूसरे ने राय दी और एक हो गये। तभी तो यज्ञ चल रहा है। आप सबकी एकता से ही चल रहा है, चाहे बाहर से दिखाई नहीं दे लेकिन संकल्प में, विचारों में एक रह करके और आगे बढ़ाना है क्योंकि अभी आप सबके ऊपर नज़र है। अच्छा।

परदादी से:- बहुत अच्छा पार्ट बजा रही हो, शक्ल से बीमार नहीं लगती हो। बापदादा बच्ची को देख खुश होते हैं। तभी तो शक्ल ऐसी चमकती है। शक्ल से बीमार नहीं लगती।

रमेश भाई से:- ऊषा की तबियत ठीक है, उसको याद देना।

बृजमोहन भाई से:- इन्डिया में किया उसका भी प्रभाव अच्छा पड़ा। सभी को सन्देश मिला, इन्ट्रेस्ट बढ़ा, अच्छा किया। मिलकरके एक दो में राय लेकरके अच्छा किया। अभी भी कई कर रहे हैं, अच्छा है सन्देश तो मिल जाए, टी.वी. द्वारा भी अच्छा किया। मेहनत अच्छी की।

डबल विदेशी मुख्य बहिनों से:- यहाँ सबको इक्ट्ठा होना अच्छा लगता है ना! फ्री माइन्ड। वहाँ तो सेवा का, स्टूडेन्ट का ख्याल रहता है। यहाँ एक ही काम है, आपस में मिलकर करते हो यह बापदादा को बहुत अच्छा लगता है। एक साथ बन जाता है ना तो एक ही जैसा चलता है। बापदादा को बहुत पसन्द है। (जयन्ती बहन से) ठीक है। तबियत ठीक हो गई। सभी की तबियत ठीक है। (मोहिनी बहन से) इसका भी हिसाब पूरा हुआ। वह तो सभी को होता है। अभी हर एक को अपनी तबियत की नब्ज़ का पता पड़ गया है, क्यों होता है, क्या करना है। नॉलेजफुल हो गये हैं इसीलिए शरीर पुराना है, आत्मा हिम्मत वाली है। सेवा के लिए एवररेडी। अभी तो समय अनुसार आप लोगों को अलर्ट होना पड़ेगा। (बहुत निमन्त्रण मिलते रहते हैं) अभी इन्ट्रेस्ट लेना शुरू हो गया है। अभी फिर पीछे दूसरे टर्न में सुनायेंगे, कि अभी और सेवा का क्या रूप होना चाहिए।

अंकल-आंटी ने आपको बहुत-बहुत याद दिया है:- उनको कहना आपको लाख बार, पदम पदम यादप्यार। (बाबा आप हमारी दुनिया में देखने तो आओगे) ऊपर बैठकर भी देखेंगे।

निज़ार भाई से:-(हैदराबाद में सर्व इन्डिया का प्रोग्राम 7-8 नवम्बर को है) यह भी एक नये प्रकार की ट्रायल हो जायेगी। अच्छा है, प्रोग्राम अच्छा है। पहले एक सैम्पुल हो जायेगा। (सारी इन्डिया में 32 सिटी में करने का प्लैन बनाया है) होते रहेंगे, अभी तो पहला अच्छा हो जायेगा।

शांतामणी दादी से:- शेश शैया पर सोई हुई हो। जैसे विष्णु को दिखाते हैं ना शेश शैया पर आराम से लेटा हुआ, ऐसे आप भी लेटी हुई हो। बहुत अन्दर कमाई हो रही है। अपनी सूक्ष्म मन्सा सेवा करती रहो।

कार्तिकेयन भाई तथा अन्य मेहमानों से:- ड्रामा की प्वाइंट तो पक्की है ना! जो कुछ होता है, अच्छा होता है, अपने लिए उस आत्मा का कल्याण और रिजल्ट बहुत अच्छी है। अच्छे में अच्छी है, आप फिकर नहीं करो, बेफिकर। बाप देख रहा है, सब अच्छा है। देखो, सेवा का प्रत्यक्ष रूप तो दिखाया है। बहुत अच्छा किया, हिम्मत दिखाई ना। हिम्मत का फल बहुत अच्छा होता है। बापदादा के रजिस्टर में हिम्मतवान में आपका नाम रजिस्टर्ड है।

''स्वराज्य की रिजल्ट चेक करके स्वयं को चेंज करो और अखण्ड राज्य के अधिकारी बनो''

आज दिलाराम बाप अपने राजदुलारे बच्चों से मिलने आये हैं। दुलारे क्यों हैं? जानते हो कि आप हर एक बच्चा तीन तख्त के मालिक हो? एक स्वराज्य का तख्त, दूसरा है बापदादा के दिल का तख्त और तीसरा है भविष्य का तख्त। तीनों तख्त के अधिकारी हो। अपने भविष्य तख्त का भी यहाँ ही अभ्यास कर रहे हो। भविष्य की तैयारी वा पुरुषार्थ अभी ही कर रहे हो। अब का पुरुषार्थ अनेक जन्म का राज्य भाग्य दिलाने वाला है। इस समय ही अपने राज्य भाग्य के संस्कार धारण कर रहे हो क्योंकि अब का पुरुषार्थ भविष्य के राज्य का अधिकारी बनाता है। तो चेक करो कि इस समय अपना पुरुषार्थ यथार्थ है? जैसे भविष्य में एक राज्य होगा तो अभी चेक करो कि हमारा एक राज्य मन में चलता है? पुरुषार्थ में एक राज्य है? या माया राज्य में विघ्न डालती है? एक राज्य के बजाए माया का प्रभाव तो नहीं पड़ता? दो राज्य तो नहीं होते हैं? भविष्य की विशेषता ही है एक राज्य की। तो अभी का अभ्यास भविष्य में चलता है। तो चेक करो कि अभी स्वराज्य है, स्वराज्य में कहाँ माया दखल तो नहीं करती? दो राज्य तो नहीं हैं? अगर दो राज्य चलता है तो एक राज्य के संस्कार कब भरेंगे? भविष्य की विशेषता है ही एक राज्य और एक धर्म। धर्म कौन सा है? आपकी विशेष धारण कौन सी है? सम्पूर्ण पवित्रता। तो चेक करो कि एक धर्म है? बीच में दूसरा धर्म अपवित्रता का दखल तो नहीं देता? साथ में यह भी चेक करो कि लॉ एण्ड आर्डर एक का है या माया भी बीच में दखल तो नहीं करती? एक का राज्य निर्विघ्न चलता है? और बात तो राज्य में सदा सुख और शान्ति नेचुरल रहती है, तो अभी देखो अपने राज्य में सदा सुख शान्ति है? कोई दखल तो नहीं होता? स्वराज्य में माया अपना दखल देकर अशान्ति तो नहीं फैलाती? स्वराज्य में कोई सैलवेशन, कोई प्रशन्सा का प्रभाव तो माया नहीं डालती? सदा सुख शान्ति आनंद प्रेम, अतीन्द्रिय सुख कायम रहता है? क्योंकि जानते हो कि भविष्य राज्य में सर्व प्राप्ति हैं, सम्पन्नता है, इस कारण सन्तुष्टता भी है। तो अभी भी स्वराज्य सम्पन्न रहता है कि कोई कमी रहती? क्योंकि अभी के पुरुषार्थ में अगर कमी रह गई तो भविष्य अखण्ड राज्य के अधिकारी कैसे बनेंगे! सारा आधार अभी के पुरुषार्थ पर है। अभी की कोई भी कमी भविष्य के सम्पूर्ण राज्य के अधिकारी नहीं बन सकते। बहुतकाल का यह स्वराज्य का अभ्यास भविष्य राज्य के अधिकारी बनाती है। तो यह अपनी चेकिंग सदा रहे क्योंकि अभी अगर बहुतकाल का पुरुषार्थ नहीं होगा तो प्रालब्ध भी कम मिलती है इसलिए बापदादा समय प्रति समय यह अटेन्शन खिचवा रहा है कि इसके लिए अभी अपने को सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाओ। अगर अभी बीच-बीच में कह देते हैं कि पुरुषार्थ चल रहा है लेकिन पुरुषार्थ के बीच में तो-तो तो नहीं आता! यह तो हो जायेगा, यह तो कर लेंगे, यह संस्कार अविनाशी 21 जन्म का, अखण्ड राज्य का अधिकारी नहीं बनायेगा।

तो बापदादा सदा के लिए अटेन्शन दिला रहा है, चेक करो कि अगर कोई भी विघ्न आता है, तूफान आता है तो तूफान तोहफा बन जाता है। तूफान तूफान नहीं लेकिन तोहफा बन जाये। कोई भी माया का वार होता है, अनुभव कराती है माया, तो वह अनुभव भी ऐसे अनुभव हो हमको अनुभव की सीढ़ी आगे बढ़ाती है। इसके लिए बापदादा कहते सदा अपना चार्ट आपेही चेक करो। जितना अपना चार्ट चेक करेंगे उतना ही चेक करके चेंज करेंगे। तो हर एक अपने चार्ट को चेक करते हो? करते हो? जो रोज़ करता है वह हाथ उठाओ। जो रोज करता है, कभी कभी नहीं? रोज़ चार्ट चेक करो और चेंज करो क्योंकि समय का इशारा बापदादा ने काफी समय से दिया है। समय को देख भी रहे हो, मनुष्यों के मन में चिंता बढ़ रही है और आपके मन में चिंता नहीं लेकिन प्रभु चिंतन है। प्रभु चिंतन

होने के कारण आप सदा जानते हो कि हम निमित्त हैं, निर्मान हैं क्योंकि करावनहार बाप है। इसके कारण आपके मन में चिंता नहीं है, करावनहार करा रहा है, यह स्मृति सदा आगे बढ़ा रही है।

अभी विशेष हर एक को यह चेक करना है कि इस संगमयुग का एक एक सेकण्ड समय और संकल्प शुभ चलता है? इस समय के महत्व को जान एक सेकण्ड, सेकण्ड नहीं लेकिन एक सेकण्ड की वैल्यु है, महत्व है। कभी कभी बच्चे कहते हैं कि संकल्प चला लेकिन दो चार सेकण्ड चला। लेकिन संगम समय की वैल्यु है, अभी एक सेकण्ड एक घण्टे के बराबर है। इतना इस समय की वैल्यु है क्योंकि बापदादा ने कह दिया है कि अचानक किसी भी समय आपका फाइनल पेपर होगा। बापदादा भी बतायेगा नहीं इसलिए इस समय का अटेन्शन सम्पूर्ण और सम्पन्न बनाना है। बापदादा ने जो सर्व खजाने दिये हैं उस एक एक खजाने को समय पर कार्य में लगाना है। खजानों के मालिक हो, मालिक की विशेषता यह है कि जिस समय जिस खजाने की आवश्यकता है उस समय वह खजाना कार्य में लगता है? आप आर्डर करो समाने की शक्ति को तो समाने की शक्ति कार्य में लगती है? क्योंकि मालिक उसको कहा जाता है जो समय पर अपने खजाने कार्य में लगा सके। तो अभी सभी को इतना स्व पर अटेन्शन देना है। सबके अन्दर खुशी का खजाना सदा ही चेहरे और चलन में दिखाई दे। खुशी अविनाशी बाप की देन है। तो अविनाशी बाप की देन को अविनाशी रखो। खुशी के लिए कहा जाता है - खुशी जैसी कोई खुराक नहीं, खुशी जैसा कोई खजाना नहीं। तो जिसके अन्दर सदा खुशी है उनके नयनों से, चेहरे से, चलन से आटोमेटिक दिखाई देती है। बापदादा का वरदान है कि सदा खुश रहो और सदा खुशी बांटो क्योंकि खुशी बांटने से खुशी बढ़ेगी और कोई भी खजाना बांटने से कम होता है लेकिन खुशी का खजाना जितना बांटेंगे उतना बढ़ेगा। तो चेक करो खुशी का खजाना सदा कायम है?

अभी सभी बच्चों को चाहे देश चाहे विदेश सभी बच्चों को बापदादा एक बात की विशेष मुबारक दे रहे हैं। कौन सी बात? जो सभी ने चाहे देश में, चाहे विदेश में अपने उमंग-उत्साह से आत्माओं को बाप का सन्देश दे दिया। सभी ने अपनी खुशी से जो कार्य किया उस कार्य में प्रोग्राम एक किया, हर जगह एक प्रोग्राम किया लेकिन उसका फल हजार गुणा प्राप्त किया। बापदादा को यही संकल्प है कि अब के समय प्रमाण जो सरकमस्टांश है वह आगे आगे नाजुक होते जायेंगे इसलिए चाहे गांव है, चाहे कोई भी कोना है, ऐसे उल्हना नहीं रह जाए कि हमारा बाप आया और हमको आपने सन्देश नहीं दिया इसलिए सभी ने जो उमंग उत्साह से कार्य किया, बापदादा खुश है और ऐसे ही आपस में मिलकर ऐसे प्रोग्राम बनाते रहना। बापदादा ने देखा कि उमंग-उत्साह और हिम्मत सभी ने अपने-अपने विधि से कार्य में लगाया है लेकिन अभी तो सबने बहुत अच्छा किया, आगे भी समय प्रमाण यह लक्ष्य रखो कि कोई भी कोना बिना सन्देश के रह नहीं जाए। इसमें अपना भी पुरुषार्थ अच्छा चलता और आत्माओं का भी कल्याण होता है। सभी को यह प्रोग्राम अच्छे लगे ना! अच्छा लगा! तो बापदादा सभी बच्चों को यही बार-बार कहते कि आत्माओं के प्रति रहमदिल बनो। आजकल दु:ख अशान्ति के कारण सभी दिल से कहते हैं रहम करो, दया करो। तो बाप के साथी आप बच्चे हो, तो बाप बच्चों द्वारा अभी हर एक बच्चे का रहमदिल का पार्ट देखने चाहते हैं। आपका उमंग है कि दु:खमय संसार बदलकर सुखमय संसार आना ही है। तो सुखमय संसार आने के लिए यह दु:ख अशान्ति का विनाश होने के लिए हालतें बदल रही हैं। तो आज का यही बाप का सन्देश याद रखो कि अब चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे चेहरे और चलन से सेवा की गति बढ़ाते चलो। अपना राज्य समीप लाते चलो। अच्छा।

इस बारी जो पहली बार आये हैं बापदादा से मिलने, वह हाथ उठाओ। अच्छा बहुत हैं। थोड़ा उठो। मुबारक हो। फिर भी समाप्ति के पहले पहुंच गये हो। नया जन्म ले लिया। इसका सभी की तरफ से अभी आने वाले बच्चों को बापदादा और चारों ओर के बच्चों द्वारा मुबारक हो, मुबारक हो। ब्राह्मण परिवार को देख खुशी होती है ना! लेकिन

जो अभी आये हो उन्हों को बापदादा यही कहते तो अभी बहुत समय बीत गया, बहुत थोड़ा रहा इसलिए पुरुषार्थ तीव्र करना है। तीव्र पुरुषार्थी आगे बढ़ेंगे, चलना नहीं उड़ना। उड़ती कला का पुरुषार्थ करेंगे तो बाप का वर्सा देर से आते हुए भी पूरा अपना हक ले सकते हो। हर सेकण्ड खुश रहना और सभी को पैगाम देना, सन्देश देना। अच्छा।

सेवा का टर्न यू.पी. बनारस और पश्चिम नेपाल का है:- जो सेवा प्रति आये हैं वह उठो। अच्छा चांस लिया है। यू.पी. में आपकी सेवा का यादगार बहुत है। भक्तिमार्ग के मन्दिर भी बहुत हैं, नदियां भी बहुत हैं। तो यू.पी. वाले चारों ओर सेवा बढ़ा भी रहे हैं और बढ़ाते रहेंगे। अभी बापदादा सभी ज़ोन को कहते हैं कि हर एक अपने ज़ोन में एक ऐसा ग्रुप बनाओ जिस ग्रुप में सभी वर्ग के हों। जो आपके वर्ग बने हुए हैं, सेवा के लिए और हर एक ज़ोन अपने एरिया में हर वर्ग की सेवा कर रहे हो, करते भी रहेंगे लेकिन हर ज़ोन में ऐसा ग्रुप सर्विस का हो जिसमें हर वर्ग का एक एक हो। और जहाँ भी प्रोग्राम करो वहाँ वह ग्रुप अपने अपने वर्ग को विशेष निमन्त्रण दे। कोई भी वर्ग उल्हना नहीं दे कि हमें तो सन्देश नहीं मिला। और हर एक जो वैरायटी ग्रुप बने वह सेवा भी बढ़ाये, अपने वर्ग की और साथ में हर एक अपना अपना अनुभव सुनावे कि हमारे को इस नॉलेज से क्या मिला और क्या अनुभव कर रहे हैं। तो हर ज़ोन में ऐसा सेवा का ग्रुप तैयार करो। चाहे भाषण करने का टाइम इतना न भी मिले लेकिन उन्हों को फंक्शन के समय पीछे लाइन में बिठाके उनका परिचय स्टेज सेक्रेट्री देवे। एक दो का अनुभव भी रख सकते हो और परिवार में रहते अपना कार्य करते हुए हमारी जीवन कैसे बीती, कैसे बदली, वह अनुभव चांस लेके टाइम हो तो सुनावे।

बापदादा ने पहले भी कहा है तो ऐसे विशेष माइक भी हो, जो ग्रुप सेवा करता रहे। अच्छा है यू.पी. ने विशेष ब्रह्मा बाप की पालना लेने का अधिकार प्राप्त किया है। यू.पी. में ब्रह्मा के नाम से यादगार भी है। तो यू.पी. का भाग्य है, जो जगत अम्बा, ब्रह्मा बाबा की पालना ली है। तो पालना की धरनी है। भाग्य का सितारा ब्रह्मा बाप और जगत अम्बा ने यू.पी. को वरदान में दिया। अच्छा है। अभी दिन प्रतिदिन बाप ने देखा कि सेवा स्थान और जो भी उपसेवाकेन्द्र वा गीता पाठशालायें हैं वह पहले से अभी वृद्धि अच्छी है इसीलिए बापदादा खास मुबारक दे रहे हैं कि बढ़ते चलो और नम्बर वृद्धि करने में, सन्देश देने में नम्बरवन बनो। अच्छा है, बापदादा खुश है और बढ़ाते चलना। टीचर्स को मुबारक है। वृद्धि कर रही हो और इससे भी ज्यादा में ज्यादा वृद्धि करते रहना। अच्छा।

महिला विंग की मीटंग है:- अच्छा है, माताओं का कल्याण तो जबसे बापदादा कार्य के लिए निमित्त बनें तो पहले ही माताओं के ऊपर कलष रखा। पाण्डव साथी हैं लेकिन फिर भी यह विशेषता आरम्भ हुई कि मातायें सेवा के निमित्त आगे बढ़ी और जब से बापदादा ने माताओं को मर्तबा दिया तो गवर्मेन्ट में भी आजकल मातायें सबमें, हर कार्य में सहयोगी बन कमाल कर रही हैं। तो संगमयुग की, बापदादा के कार्य की विशेषता या नवीनता मातायें हैं और अभी माताओं की विशेषता आगे आगे जैसे बापदादा के आगे बढ़ रही है ऐसे ही गवर्मेन्ट में या आज की दुनिया में माताओं की तरफ सभी की नज़र है इसलिए यह प्रोग्राम धूमधाम से करो, माताओं को ऐसा आगे बढ़ाओ जो सब देखें कि माताओं की शक्ति, माताओं की पालना कितनी ऊंची है। अभी मातायें परिवार में रहते अपने बच्चों का ऐसा सैम्पुल बनाओ जो किसी को भी बापदादा सैम्पुल दिखाये कि घर आश्रम कैसे बना। बच्चे कैसे अपनी मर्यादाओं में रहते हैं। यह जो इम्प्रेशन है कि बच्चे बदल जायें, यह गवर्मेन्ट की प्राबलम है, वह मातायें ऐसा प्रैक्टिकल करके दिखाओ जो गवर्मेन्ट सोचे कि यह मातायें बच्चों का कल्याण भी कर सकती हैं। जो भी स्वयं बने हैं वह बच्चों को ऐसे तैयार करें जो गवर्मेन्ट को देखने में आवे कि यह क्या कमाल कर सकती हैं। अच्छा है। माताओं का प्रोग्राम रखने से माताओं में उमंग उत्साह आयेगा तो आगे औरों की सेवा कर सकेंगी। अच्छा है सफलता तो है ही। अच्छा।

इन्दौर हॉस्टल की कुमारियों से:- अच्छा है, कुमारियां अपने को शक्ति रूप समझें, हम कुमारियां हैं नहीं, शिवशक्ति हैं, इस परिवर्तन से ऐसी कमाल करके दिखाओ जो सेवा में आपका परिवर्तन का जो प्रत्यक्ष रूप है वह चेहरा और चलन साक्षात्कार करावे। जैसे आप बड़ी बहिनों को, दादियों को देखते हैं तो उनका प्रभाव जनता को देखते ही पड़ता है, वायब्रेशन होता है, ऐसे आप एक एक कुमारी ऐसे अपने में शक्ति भरो जो आप कहाँ भी जाओ, किसकी भी सेवा करो तो उनको ऐसा अनुभव हो कि यह साधारण कुमारियां नहीं हैं लेकिन शक्तियां, देवियां हैं। आपकी शक्ल से बाप की सूरत, ब्रह्मा बाप की पालना का प्रभाव आपकी सूरत में दिखाई दे। आखिर यही सेवा का पार्ट चलना है। तो हर एक कुमारी इतना अपने में शक्ति भरो बाकी अच्छा है, अच्छी चल रही हो, आगे बढ़ भी रही हो लेकिन अभी आपका चेहरा, चलन दिखाई दे कि न्यारी और प्यारी है। बाकी अच्छा है, बापदादा समाचार सुनते रहते हैं। एक एक सेन्टर सम्भालने योग्य हैण्डस बन जाओ तो कितने सेन्टर खुल जायेंगे! तो बापदादा यह रिजल्ट देखेंगे कि हर एक कुमारी सेन्टर सम्भाल रही है। ऐसे ही योग्य बन जाओ क्योंकि आजकल टीचर्स सेवा के लिए आवश्यक है। लेकिन निर्विघ्न टीचर बनना। वह लिख करके भेजना तो कितनी निर्विघ्न टीचर बनके उमंग उत्साह से उड़ती हैं। बाकी अच्छा है, अपनी जीवन को बना रहे हैं बहुत अच्छा, सभी कुमारियों को दुआयें दो, सहयोग दो तो यह भविष्य में निर्विघ्न नम्बरवन टीचर बनें। हैण्डस की आवश्यकता है ना। फारेन में भी चाहिए ना। निर्विघ्न, मूल अण्डरलाइन करो निर्विघ्न टीचर। अभी रिजल्ट आयेगी बापदादा के पास, ठीक है ना। ऐसे ही लक्ष्य है ना! अच्छा।

इस ग्रुप में कैड ग्रुप (दिल वालों का) भी आया है:- अच्छा है हर एक आपस में राय करके आगे अपनी सेवा को बढ़ाते रहते हो, उमंग-उत्साह बढ़ाते चलते हो और अपने को इसी कार्य में बिजी रखते हो तो उसकी रिजल्ट पुरुषार्थ का बल भी मिलता है और फल भी मिलता है। जितना प्लैन बनाते हो प्रैक्टिकल में लाते हो तो बापदादा की तरफ से हर ग्रुप को विशेष सकाश द्वारा भी सहयोग बापदादा देते हैं। अच्छा है। बढ़ते चलो, बढ़ाते चलो। अच्छा।

काल आफ टाइम के मेहमानों से:- लकी हैं, आपका भाग्य आप सबको यहाँ तक लाया है, अभी इस भाग्य को आगे बढ़ाते रहना। आगे बढ़ाने का साधन क्या है? एक तो कनेक्शन जरूर रखना और कनेक्शन के आगे इस ब्राह्मण फैमिली से, बापदादा से रिलेशन आगे बढ़ाते रहना। जितना कनेक्शन रिलेशन रखेंगे उतना खजाने अखुट खजाने इकट्ठे होते रहेंगे। खजानों के मालिक बन जायेंगे। जिस समय जो शक्ति चाहिए, जो गुण चाहिए वह अनुभव करते रहेंगे। अच्छा है। बापदादा को यह जो प्रोग्राम किया, करते रहते हैं, अच्छा लगता है। मधुबन में इन्डिया में आना पसन्द आता है ना! पसन्द आता है? देखो आपको देख करके इन्डिया के आपके भाई बहिन वह भी खुश होते हैं। सभी के दिल में आता है हमारे भाई हमारी बहिनें आ गई, आ गई, खुशी होती है। देखो आप भी खुश होते और यहाँ सारा परिवार इतना बड़ा परिवार कभी सुना, देखा, और अभी देखो कितना आपका परिवार है। तो एक एक बच्चे को बापदादा का पदमगुणा यादप्यार स्वीकार हो। अच्छा।

40 देशों के 300 डबल विदेशी भाई बहिनें आये हैं:- बापदादा खुश होते हैं यह हर साल का संगठन यहाँ भारत के भाई बहिनों को भी अच्छा लगता है, बापदादा को तो अच्छा लगता ही है, आपस में मिलके लेन देन करके हर वर्ष का आगे के लिए सेवा और स्व का चार्ट दोनों बातें करते एक दो को उमंग उत्साह बढ़ाते हो, यह देख बापदादा खुश होते हैं। आप सबको भी इतने भाई बहिन मिलते हैं, देखते हैं, खुश होते हैं तो आप भी खुश होते हैं ना। अच्छा है बापदादा ने देखा तो बापदादा के डायरेक्शन को प्रैक्टिकल में लाने में उमंग उत्साह से एक दो को अटेन्शन दिलाते हैं। प्राब्लम जो पुरुषार्थ को ढीला करती हैं वह एक दो को सुनाने से स्पष्ट करने से पुरुषार्थ में भी

तीव्रगति आती है। और भाई बहिनों से मिलके एक एक के पुरुषार्थ को देख आगे बढ़ते भी हो। तो यह प्रोग्राम बापदादा को पसन्द है। आपको भी पसन्द है ना! पसन्द है? पाण्डवों को पसन्द है? अच्छा है अब तो बापदादा ने सब डबल पुरुषार्थी बच्चों को सौगात नम्बरवन बनके लेने का इशारा भी किया है। हर एक सेन्टर और उसके कनेक्शन में आने वाले सेन्टर निर्विघ्न और तीव्र पुरुषार्थ की गति में नम्बरवन बनें। तो जो नम्बरवन बनेगा उसको सौगात देंगे बापदादा। खुद तो बनें लेकिन सभी को भी साथ लेके चलना है ना। संगठन को भी मजबूत करना है। तो देखेंगे नम्बरवन कौन लेता है! जो भी लेवे, जितने भी लेवें बापदादा को खुशी है। ठीक है ना! अभी से लेके यह लक्ष्य रखो कि हमें उड़कर उड़ाना है। चलने वाले नहीं, उड़ने वाले, उड़ती कला का सर्टीफिकेट लेना है। कभी कभी नहीं, सदा उड़ती कला। लेना है ना! सर्टीफिकेट लेना है? अभी हर दिन कोई न कोई बात में प्रोग्रेस करते चलो। चार सबजेक्ट हैं, चार सबजेक्ट में से कोई न कोई सबजेक्ट का लक्ष्य रख करके प्रैक्टिकल में लाके अपना चार्ट आगे बढ़ाते चलो। अच्छा है। बापदादा ने देखा तो विदेश में भी ऐसे बच्चे हैं जो बाबा जो चाहते हैं वह प्रैक्टिकल में लाते अपना पोतामेल रोज़ बापदादा को देते हैं। पुरुषार्थ अच्छा है इसलिए बापदादा जो ऐसे गुप्त पुरुषार्थी हैं उनको अमृतवेले रोज़ मुबारक खास देते हैं। तो बढ़ते चलो, तीव्र पुरुषार्थी बन उड़ते चलो। अच्छा।

सर्व इन्डिया प्रोग्राम की लांचिग हैदराबाद में हुई है:- यह भी कार्य कर रहे हैं, बापदादा सेवा के प्लैन को देख, उमंग-उत्साह को देख खुश होते हैं और बापदादा का वरदान है कि सफलता हर बच्चे का जन्म सिद्ध अधिकार है। इसलिए सफलता रहेगी, सबको साथी बना करके सहयोगी बनाके चल रहे हैं और चलते रहेंगे। मुबारक हो। मेहनत किया, मेहनत अच्छी की है, उमंग अच्छा है और उमंग-उत्साह जहाँ है वहाँ सफलता है ही है। हैदराबाद वाले उठें, टीचर्स कहाँ है? देखो पहला नम्बर हैदराबाद को चांस मिला और बापदादा को अच्छा लगा कि सबने यथाशक्ति सहयोग दिया और सेवा का पार्ट बड़ी दिल से बजाया। जो किया वह बहुत अच्छा किया, हिम्मत अच्छी रखी। हिम्मत वालों को बाबा की मदद है ही। अच्छा।

तो आज जो बापदादा ने कहा कि स्वराज्य अधिकारी बन स्वराज्य की रिजल्ट चेक करो, वह चेक करने से कोई भी कमी को बहुत समय से चेंज करना है क्योंकि बहुत समय अखण्ड राज्य चले, इसकी आवश्यकता है बहुत समय का पुरुषार्थ, बहुत समय की प्रालब्ध के स्वत: ही अधिकारी बनते हैं इसीलिए अन्डरलाइन बहुत समय का पुरुषार्थ है। चेकिंग है, चेंज है?

चारों ओर के बापदादा के दिलतख्तनशीन हर एक बच्चे को बापदादा रोज़ अमृतवेले विशेष शक्ति बांटते हैं। अमृतवेले विशेष वरदान शक्ति बांटते हैं। जो अमृतवेले की शक्ति विशेष वरदान स्वीकार करते हैं वह विशेष तीव्र पुरुषार्थी बनता है। अमृतवेले का महत्व रखना अर्थात् बापदादा के सदा तख्तनशीन बनना। तो कई बच्चों का अटेन्शन है और बापदादा रोज़ उन्हों को खास सर्टीफिकेट देते हैं वाह बच्चा वाह!

तो चारों ओर के तीव्र पुरुषार्थी, हर समय बापदादा को अपना साथी बनाकर कम्बाइन्ड रहने के अभ्यासी बच्चों को बापदादा विशेष वरदान दे रहे हैं कि सदा उड़ते चलो और दूसरों को भी उड़ाने का सहयोग देकर उड़ाते चलो। सभी विजयी हैं और विजय का फल बापदादा की हर समय दुआयें प्राप्त होती हैं। तो अमर बन सबको अमृत पिलाते रहो। चारों ओर के बच्चे बापदादा के सामने हैं। हर बच्चे से बापदादा को दिल का प्यार है क्योंकि हर बच्चे में कोई न कोई विशेषता है। अभी सर्व विशेषताओं से अपने को विशेष आत्मा बनाए आगे बढ़ते चलो। बापदादा का हर एक बच्चे को पर्सनल पदमगुणा यादप्यार स्वीकार हो। अच्छा - अभी तो मिलते रहेंगे। नमस्ते।

दादियों से:- सभी ने खुब चक्र लगाया। आजकल अशान्ति बढ़ती रहती है तो सारा दिन परेशान रहते हैं और शान्ति का वायब्रेशन शान्ति दिलाता है, तो खुश हो जाते हैं। जैसे कोई थका हुआ हो उसको आधा घण्टा भी आराम का मिलता है तो खुश हो जाता है। अच्छा किया। सभी जगह, चाहे छोटे चाहे बड़े सबने अच्छा किया। उमंग जहाँ हैं वहाँ खर्चे की कोई बात नहीं। इतनी आत्माओं को सन्देश तो मिल गया। आपका उल्हना तो पूरा हुआ। अच्छा है। ऐसे बीच बीच में प्रोग्रामस बनाते रहो। हर एक शहर अपने अनुसार जैसा भी करे वह ठीक है।

परदादी से:- यह हिम्मत वाली है, हिम्मते बच्चे मददे बाप।

रमेश भाई, उषा बहन से:- जो कुछ भी होता है, उसको अवाइड करके खुश रहती हो और यह खुशी बेफिकर बनाए आगे बढ़ाती है, यही दवाई है। त्रिमूर्ति हो (अनिला बहन भी साथ में हैं) और चौथा सम्भाल करने वाली है। तुम्हारी भी कमाल है। सभी को बहुत दिल से सम्भाल रही हो, अच्छा किया। सेवा का फल और बल मिल रहा है। समझती हो मेरे खाते में कितना भाग्य जमा होता है! अच्छा। (रमेश भाई से) तबियत अच्छी है। अभी सोचना नहीं, सोचने को छोड़ दो, बाप के ऊपर छोड़ दो। हल्के रहो और हल्का बनाके चलो।

ऊषा बहन की लौकिक बहन से:- इन्हों को देखकर खुश होती हो ना। इन्होंने अपनी जीवन कितनी अच्छी बनाई है, आप भी बना रही हो, खुश रहती हो ना। खुशी कभी नहीं गंवाना। खुशी जैसी और कोई खुराक नहीं, खुश रहना और औरों को भी खुशी बांटना।

अंकल-आंटी की तरफ से बृजमोहन भाई, गायत्री बहन ने बापदादा को गुलदस्ता दिया:- अच्छा गुलदस्ता बनाया है। फाउण्डेशन पक्का है, तकलीफ होवे क्या भी होवे, वह मस्ती में मस्त है और उसका प्रभाव परिवार पर पड़ता है। डाक्टर भी सोचता है कि कमाल है पेशेन्ट की भी, इसलिए सेवा कर रहा है। उसकी शक्ल सेवा करती है। उसको पदम पदम पदम गुणा यादप्यार। आंटी भी गुप्त है। सारा परिवार लकी है। (गायत्री बहन से) यह तो सामने खड़ी है। इसकी एक विशेषता है, पता है कौन सी? कुछ भी हो जाए ना, बाबा को याद करके बाबा से शक्ति ले लेती है। डोंटकेयर कर लेती है। (विशेष आत्मा भी बनाती है) पीछे पड़ करके उनकी पालना तो करती रहती है ना। परिवार लकी है।

(तीनों बड़े भाईयों से) अभी तीनों कमाल करो। एक ने कहा, दूसरे ने विचार दिया लेकिन विचार दिया न्यारे और प्यारे। अभी सबकी नज़र है। (क्या यह मेगा प्रोग्राम आगे भी चालू रखें) अभी मेगा नहीं कहो जिसको करना हो यथाशक्ति अपने अनुसार करे, मना नहीं है। अच्छा है।

डबल विदेशी बड़ी बहिनों से:- बापदादा को ग्रुप ग्रुप को बुलाके रिफ्रेश करना, यह अच्छा लगता है क्योंकि वहाँ बहुत दूर दूर रहते हैं। नजदीक आने से एक दो के गुण दिखाई देते हैं। दूर दूर में पता नहीं पड़ता है। तो एक दो को देखके उमंग भी आता है। तो आबू में यह प्रोग्राम अच्छा लगता है और एक दो में उत्साह भरके संगठन पक्का करते हो यह अच्छा है। ठीक है। ठीक चल रहा है ना!

एक दो को सहयोग देना इससे आगे बढ़ते हैं। समय देते हो ना, अपनी सेवा छोड़के समय दिल से देते हो। अपना कार्य पूरा किया, सफलता हुई, अभी भले जाओ। सभी ने अच्छी मदद की। फारेन का भी किया इन्डिया का भी किया।

(लण्डन वालों ने खास यादप्यार दिया है और कहा है कि बाबा की मुरली में था बच्चे बुद्धू हैं तो क्या हम बुद्धू हैं?) कहना बुद्धू नहीं हैं लेकिन दिलतख्तनशीन हैं।

(टाटानगर का समाचार बापदादा को सुनाया) इस बारी सभी ने दिल से किया और रिजल्ट भी अच्छी है। सब जगह की अच्छी है।

''बाप वा सर्व का प्रिय बनने के लिए सन्तुष्टमणि बन हर परिस्थिति के प्रभाव से मुक्त रहो''

आज चारों ओर के सन्तुष्ट आत्माओं को देख रहे हैं। सन्तुष्ट मणियां चारों ओर अपने मणि की चमक फैला रही हैं। सबसे बड़े से बड़ी स्थिति है ही सन्तुष्टता की। सदा सन्तुष्ट सभी को प्रिय लगते हैं। बाप को तो प्रिय है ही, सदा सन्तुष्ट वही रह सकता है जिसको सर्व प्राप्तियां हैं। प्राप्तियों का आधार सन्तुष्टता है इसलिए ऐसी आत्मायें सर्व ब्राह्मण आत्माओं को प्रिय हैं। सर्व प्राप्तियां अर्थात् सदा सन्तुष्ट। सन्तुष्ट आत्मा का वायुमण्डल में भी प्रभाव पड़ता है और सर्व प्राप्तियां हैं परमात्मा की देन। परमात्मा बाप द्वारा सर्व शक्तियां, सर्व गुण, सर्व खजाने प्राप्त की हुई आत्मा सदा सन्तुष्ट रहती है। सन्तुष्ट आत्मा की स्थिति सदा प्रगतिशील रहती है। परिस्थिति सन्तुष्ट आत्मा के ऊपर प्रभाव नहीं डाल सकती क्योंकि जहाँ सन्तुष्टता है वहाँ सर्व शक्तियां सर्व गुण स्वत: ही आते हैं। एक सन्तुष्टता अनेक गुणों को अपना लेती है। तो हर एक अपने से पूछे कि मैं सदा सन्तुष्ट आत्मा रहती हूँ! सन्तुष्ट आत्मा सदा सर्व के, बाप के समीप और समान स्थिति में रहती है। लेकिन इस स्थिति में रहने के लिए बहुत साक्षी दृष्टा अवस्था चाहिए, त्रिकालदर्शी अवस्था चाहिए। हर कर्म त्रिकालदर्शी अर्थात् हर बात को तीनों कालों को परख फिर कर्म करने वाले। इसके लिए दो बातें आवश्यक हैं। वह दो बातें हैं सम्बन्ध और सम्पत्ति। सम्बन्ध भी अविनाशी, सम्पत्ति भी अविनाशी। वह प्राप्त होता है अविनाशी बाप द्वारा। जब अविनाशी सम्पत्ति और सम्बन्ध प्राप्त हो जाता तो आत्मा सदा सन्तुष्ट और बाप की, सर्व आत्माओं की अति प्रिय हो जाती है। कोई भी परिस्थिति माया के रूप में आती है तो घबराते नहीं हैं। ऐसे महसूस करते हैं जैसे बेहद के पर्दे पर मिक्की माउस का खेल चल रहा है। परेशान नहीं होते, मिक्की हाउस का खेल देख मनोरंजन करते हैं। माया के भिन्न-भिन्न रूप, भिन्न-भिन्न मिक्की माउस के रूप में अनुभव करते हैं। ऐसी स्थिति का अनुभव बाप द्वारा सर्व को प्राप्त करना ही हैं और किया भी है।

बापदादा देखते हैं निर्भय, एकाग्र बुद्धि बन कोई भी परिस्थिति में डगमग नहीं होते। ऐसे विजयी आत्मायें सदा जो बाप की हर बच्चे में शुभ आशा है कि हर बच्चा सदा विजयी बन बाप को अपना विजय का स्वरूप दिखावे, तो हर एक अपने से पूछे मैं कौन? बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि कभी-कभी का शब्द समय प्रमाण अभी ब्राह्मण डिक्शनरी से समाप्त कर दो। जब बाप से वर्सा सदा का लेना है तो हर प्राप्ति सदा प्राप्त हो क्योंकि बाप के दिल की आशाओं को पूर्ण करने वाले आशाओं के दीपक हैं। उनके संकल्प में भी कभी-कभी शब्द आ नहीं सकता क्यों? सदा बाप के साथ और बाप के साथी हैं। साथ रहने वाले भी और साथी बन विश्व परिवर्तन का कार्य करने वाले।

तो बोलो, यह सदा का वरदान बापदादा द्वारा प्राप्त कर लिया है ना! यह तो जन्म लेते ही बापदादा हर बच्चे को सदा यही वरदान देते हैं, सदा योगी भव, पवित्र भव। उस वरदान द्वारा जो भी प्राप्तियां होती हैं वह सदा के लिए होती हैं। कभी-कभी के लिए नहीं। तो सभी बच्चे सदा के अधिकारी हैं क्योंकि बाप का हर बच्चे से चाहे लास्ट बच्चा है लेकिन बाप को हर बच्चे से दिल का प्यार है क्योंकि जो बड़े-बड़े लोग हैं, अपने को समझदार समझते हैं वह भी बाप को पहचान नहीं सके, लेकिन बापदादा के लास्ट बच्चे ने बाप को पहचान लिया। दिल से कहते हैं मेरा बाबा इसलिए बाप का हर बच्चे से अविनाशी प्यार है इसलिए हर बच्चे को बाप का वरदान है। रोज़ बापदादा चाहे नम्बरवार हैं लेकिन एक ही समय, एक ही वरदान सभी बच्चों को इकट्ठा देते हैं। हर रोज़ बापदादा का हर बच्चा नम्बरवार भले है लेकिन मेरा बाबा कहा तो वरदान के अधिकारी बन गया। हर एक बच्चे को चाहे कहाँ भी रहते हैं, इण्डिया में रहते हैं या फॉरेन में रहते हैं लेकिन वरदान सभी को एक ही बापदादा का मिलता है और वरदान को प्राप्त कर खुश भी होते हैं लेकिन दो प्रकार के बच्चे हैं एक बच्चे वरदान को देख खुश जरूर होते हैं लेकिन आगे

नम्बर वही लेते हैं जो सिर्फ वरदान को देख खुश नहीं होते, वर्णन नहीं करते कि यह मेरा वरदान है लेकिन वरदान को फलीभूत करते हैं। वरदान से लाभ लेकर वरदान का फल निकालते हैं। बीज है लेकिन बीज को फलीभूत नहीं करें, फल नहीं निकालें तो सिर्फ खुशी होती है, वरदान से फल निकालने के लिए जैसे कोई भी बीज होता है, उसका फल निकालने के लिए उनको पानी और धूप चाहिए तभी फल निकलता है। तो यहाँ भी हर बच्चे को जब वरदान का फल निकालना है, जिससे विस्तार होता जाए, अपने ही मन में वरदान के फल द्वारा वृद्धि होती जाए, तो यहाँ भी बाप कहते हैं कि वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो। बार-बार सिमरण नहीं लेकिन स्मृति, यह है पानी देना और स्वरूप में स्थित होना यह है धूप लगाना। तो यह फलीभूत होने से स्वयं में भी बहुत शक्ति भरती है और दूसरे को भी उस फल द्वारा शक्ति का अनुभव करा सकते हैं।

तो बापदादा अभी क्या चाहते हैं? हर बच्चा, क्योंकि बापदादा कुछ समय से लेके वार्निंग दे ही रहे हैं समय की। हर बच्चे की पढ़ाई की रिजल्ट का समय अचानक आना है। इसके लिए सदा एवररेडी। साथ-साथ बापदादा यह भी इशारा दे रहे हैं कि अभी समय है उड़ती कला के तीव्र पुरुषार्थ का। चल रहे हैं नहीं, उड़ रहे हैं। साधारण रीति से अपनी दिनचर्या व्यतीत करना, अब वह समय कामन पुरुषार्थ का गया इसलिए बापदादा इशारा दे रहे हैं, हर सेकण्ड, हर संकल्प चेक करो। मानो अपना तीव्र पुरुषार्थ न कर एक घण्टा साधारण पुरुषार्थ में रहे तो एक घण्टे में अचानक अगर फाइनल पेपर का टाइम आ गया तो अन्त मते सो गति, वह एक घण्टे का साधारण पुरुषार्थ कितना नुकसान कर देगा! इसलिए बापदादा हर बच्चे को, हर संकल्प, हर सेकण्ड समय के महत्व को, समय प्रति समय इशारा दे रहे हैं। हलचल के समय अचल रहने का पुरुषार्थ तीव्र पुरुषार्थी ही कर सकता। साधारण पुरुषार्थी एवररेडी बनने में समय लगा देगा और बापदादा ने कहा है कि सेकण्ड में बिन्दी अर्थात् फुलस्टॉप, अगर तीव्र पुरुषार्थ नहीं होगा तो क्या होता है? अनुभवी तो हैं। फुलस्टॉप के बजाए क्वेश्चन मार्क तो नहीं बन जायेगा! बिन्दी कितना सहज है और क्वेश्चन कितना टेढ़ा बांका है। फुलस्टॉप तो फुलस्टॉप हो जाए। क्वामा की मात्रा भी नहीं हो, आश्चर्य की मात्रा भी नहीं हो। क्या करूं, यह सोचने का भी समय नहीं मिलेगा। तो कोई भी बच्चा यह सोच नहीं सकता कि इतना फास्ट पुरुषार्थ करना ही पेपर में पास होना है।

तो बापदादा देखते हैं अभी भी कारणे अकारणें क्यों, क्या, कैसे, ऐसे.. यह कोई-कोई बच्चों के रोज़ के चार्ट में दिखाई देता है। बहुतों के चार्ट में बापदादा ने देखा है कि वेस्ट थॉट्स की लहर समय ले लेती है और वेस्ट की रफ्तार ऐसी तीव्र होती है जो साधारण संकल्प का एक घण्टा और फास्ट संकल्प का एक मिनट। इसलिए आज यह देख रहे थे कि सबकी प्रिय, बापदादा की प्रिय सन्तुष्ट आत्मायें कौन-कौन हैं? सन्तुष्ट आत्मा के संकल्प में भी यह क्यों, क्या की भाषा स्वप्न में भी नहीं आयेगी क्योंकि उस आत्मा को तीन विशेष बातें, तीन बिन्दियां, आत्मा, परमात्मा और ड्रामा, तीन ही समय पर कार्य में लगा सकते हैं क्योंकि ऐसे समय पर शक्तियों का खजाना आवश्यक है और मास्टर सर्वशक्तिवान वह हैं जो जिस समय जिस शक्ति को आर्डर करे वह हाज़िर हो जाए। चाहिए सहनशक्ति और आ जावे सामना करने की शक्ति, तो है शक्ति लेकिन उस समय काम की नहीं है। तो सर्व खजानों की चाबी है तीन बिन्दियां - आप, बाप और ड्रामा।

तो बापदादा का एक संकल्प है, बतायें? करना पड़ेगा। जो करने के लिए तैयार हैं, वह हाथ उठाओ। करना पड़ेगा। करना पड़गा। हाथ उठा रहे हैं। मन का हाथ उठा रहे हैं या शरीर का हाथ उठा रहे हैं? मन का हाथ पक्का होता है। बापदादा समय प्रमाण हर एक बच्चे से यह शुभ आशा रखते हैं कि 15 दिन के बाद फिर बाप का मिलना होता है, तो यह जो 15 दिन बीतें उसमें यह विशेष अभ्यास करो ट्रायल के लिए, रहना तो सदा है लेकिन 15 दिन की ट्रायल करो और अपने-अपने कनेक्शन वाले सेन्टर्स को भी कराओ, चक्कर लगाके फोन करके उनको

याद दिलाओ कि होमवर्क कर रहे हो? होमवर्क क्या है? इज़ी है, हर एक भिन्न-भिन्न सरकमस्टांश बातों से क्रास तो करते ही हैं लेकिन यह 15 दिन हर एक को संकल्प, वाणी और कर्म में कम से कम 80 प्रतिशत की मार्क्स लेनी हैं। फिर भी बापदादा 20 परसेन्ट छुट्टी देते हैं। है मंजूर। मंजूर हैं? देवें। यह काम देवे। अच्छा 15 दिन, माया भी सुन रही है। बातें तो आयेंगी, बातों को नहीं देखना, पास होना है, यह याद रखना। 15 दिन कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन बापदादा के पास हर एक सच्ची दिल, साफ दिल स्वप्न में भी संकल्प, वाणी और कर्म में पास होके दिखायें। हो सकता है? हो सकता है? टीचर्स बताओ हो सकता है? 15 दिन तो कुछ भी नहीं हैं लेकिन बापदादा ट्रायल के लिए संकल्प भी वेस्ट नहीं, युद्ध नहीं विजयी। 15 दिन के फुल विजयी। मुश्किल है या इज़ी है? इज़ी है, हाथ उठाओ। इज़ी है? तो बापदादा यह 15 दिन की रिजल्ट देखेंगे। फिर आगे बढ़ायेंगे। 15 दिन तो कोई भी कर सकता है ना! कर सकते हैं ना! मधुबन वाले, मधुबन वाले हाथ उठाओ। यह आगे आगे मधुबन बैठा है। बहुत अच्छे हैं। फॉरेनर्स या इण्डिया वाले सभी को करना है। गांव वाले या बड़े शहर वाले सबको 15 दिन का रिकार्ड रखना है। क्या क्यों का, क्या करें बात ही ऐसी हुई, नहीं बताना। 80 परसेन्ट लेना ही है। फिर भी बापदादा हल्का कर रहा है, 20 परसेन्ट छोड़ रहा है क्योंकि बापदादा देखते हैं कि कहाँ-कहाँ चलते चलते माया अलबेला और आलस्य, रॉयल आलस्य यह था, यह था, यह रॉयल आलस्य, अलबेलापन यह तीव्र पुरुषार्थ में कमी डालता है क्योंकि अभी बापदादा सभी जो भी स्टूडेन्ट हैं, हर एक स्टूडेन्ट को अभी पहले यह 15 दिन की रिहर्सल कराके कुछ समय ऐसे ही अभ्यास कराने चाहते हैं, जो सभी से हाथ उठवाये, एवररेडी। सब हाथ उठा सके, समय का भी अभ्यास चाहिए। इसलिए यह थोड़ा सा अभ्यास कराते हैं। अच्छा। अभी क्या करना है?

सेवा का टर्न पंजाब ज़ोन का है:- अच्छा है पंजाब, जहाँ 5 नदियां बहती हैं, नदियों का प्रभाव भी नामीग्रामी अच्छा है। तो ज्ञान गंगायें भी प्रसिद्ध हैं ना! पंजाब बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं, पंजाब की विशेषता है कि पंजाब की कुमारियां बहुत अच्छी इकट्ठी सर्विसएबुल निकली। ताली बजाओ। पंजाब में पहले पहले बेधड़क होके सन्यासियों के सम्मेलन में भाषण किया। सन्यासी भी बहुत अच्छा कार्य है, यह स्टेज पर बैठ बोला, अभी शुरुआत थी और पंजाब के कनेक्शन से समय प्रति समय यहाँ बड़े-बड़े सन्यासी मठ वाले आबू में सम्मेलन करने आये हैं और काफी संख्या में आते हैं, आते तो और देश के भी हैं लेकिन खास संगठन वह हरिद्वार से आते हैं। कनेक्शन भी है। तो पंजाब को ड्रामानुसार यह सन्यासियों महात्माओं की सेवा का चांस अच्छा मिला हुआ है और कर भी रहे हैं। पंजाब में स्थापना के समय पर जैसे सेवा आरम्भ हुई वैसे सहयोगी और वारिस क्वालिटी वाले निमित्त बनें। जितना ही हंगामें वाले थे उतने ही शेर क्वालिटी भी निकली। अभी पंजाब को क्या करना है? यह विशेषता तो है अभी पंजाब वाले कोई ऐसा शेर तैयार करें नामीग्रामी, जो सभा में माइक बन अपना अनुभव सुनाये। माइक बड़ा हो, छोटा नहीं। जैसे गवर्मेन्ट के वी.आई.पी तो अलग होते हैं लेकिन महात्माओं में भी वी.आई.पी होते हैं, ऐसा कोई बड़ा माइक तैयार करो, जो अपने अनुभव से औरों को उमंग में लाये। ऐसा कोई निकालो, तैयारी करो। हो सकता है क्योंकि आजकल सभी समझते हैं कि साधू सन्त की सेवायें तो द्वापर से शुरू हुई लेकिन आप समान ऐसे बड़ा गुरू दूसरे को, शिष्य को बनावें, ऐसा एक्जैम्पुल नहीं होता और बापदादा ने अपने से भी होशियार बच्चों को तैयार किया है, जो पब्लिक में आते हैं, इसलिए पंजाब कोई नवीनता करके दिखाओ। वी.आई.पी तो सब तरफ से आते हैं लेकिन आप ऐसा लाओ जो सभी सुनकरके जग जावें, सन्देश मिल जाये। हो सकता है? देखेंगे। थोड़ा समय तो लगता है लेकिन ऐसा कोई तैयार करके दिखाओ। बाकी वृद्धि तो हो रही है। अभी देखो आधी सभा पंजाब की खड़ी हुई है। सेवा वृद्धि को हो रही है, उसकी मुबारक हो। (कुम्भ मेले की तैयारी हो रही है) यह चांस अच्छा है। हो जायेगा। अच्छा। सेवा का चांस लेने वाले और आने का चांस लेने वाले क्योंकि जिसका टर्न होता है उसकी संख्या को चांस अच्छा मिलता है। यह भी अच्छा साधन बना हुआ है, तो सभी पंजाब वाले भाई-बहिनें मातायें कुमारियां-कुमार, बुजुर्ग सभी को बापदादा और सभा में बैठे हुए सभी का बहुत-बहुत मुबारक हो, मुबारक हो।

मीडिया विंग:- अच्छा है, मीडिया ने सेवा तो अच्छी की है और बापदादा ने देखा कि बाप के इशारे प्रमाण सभी ने जो इस बारी आवाज फैलाने की, सन्देश देने की सेवा की, सब ब्राह्मणों के मुख में भी यही रहा बापदादा ने कहा है, बापदादा ने कहा है, उसको प्रैक्टिकल रूप देने में सभी ने पुरुषार्थ अच्छा किया और मीडिया वालों ने भी चारों ओर के तरफ का सभी जगह क्या-क्या हुआ, वह दिखाने में मेहनत अच्छी की। पहले करने वालों ने उमंग से किया, चाहे बड़े चाहे छोटे लेकिन छोटों ने भी कम नहीं किया। बापदादा चाहते हैं कि जिन्होंने भी बड़े सेन्टर या छोटे सेन्टर ने प्रोग्राम किया, सन्देश देने का, जिन्होंने इस प्रोग्राम में सेवा की, निमित्त बनें, जिसको बड़ा प्रोग्राम कहते हैं वह उठो। जिन्होंने भी काम किया। सेन्टर वाले भी उठ सकते, जिन-जिन सेन्टर्स ने प्रोग्राम किया, वह सभी उठें। बापदादा को अच्छा लगा। टीचर्स कम उठी हैं। बापदादा पदमगुणा मुबारक देते हैं कि ऐसे ही बीच-बीच में थोड़े समय के बाद सन्देश देने का उमंग उत्साह से जगह जगह पर प्रोग्राम बनाते रहो। क्योंकि समय का कोई भरोसा नहीं। कम से कम यह तो कहें हमारा बाबा आ गया। हमने नहीं पहचाना, लेकिन बाप आया मैंने नहीं पहचाना। आपका फर्ज है सभी को आवाज द्वारा सूचना देना। तो आप सभी ने जो तन से, मन से, धन से सेवा की, उसके लिए आपका पदम पदमगुणा रिटर्न जमा हो गया। और सेवा का फल भी मिला। सेन्टर्स पर आ रहे हैं। और आगे के लिए यह करने का बल भी मिला। फल भी मिला, बल भी मिला। तो अच्छा है। सभी ने अपने रूचि से किया। बापदादा सभी का उमंग उत्साह देख, बाप से प्यार देख मुबारक दे रहे हैं। ऐसे ही कोई न कोई प्रोग्राम बनाते रहो। छोटे-छोटे सेन्टर्स में सब प्रबन्ध आ गया ना। नहीं तो सोचते हैं प्रोग्राम करना माना पहले प्रबन्ध करना पड़ेगा। लेकिन यह अचानक सभी जगह तन मन धन का खुशी खुशी से प्रबन्ध हो गया। किसने भी कैसे करें, यह नहीं कहा, करना है। ऐसे ही आपस में एक दो के साथी बन एक दो को उमंग उत्साह का साथ दे आगे बढ़ते चलो। ठीक है ना। अच्छा है, मुबारक हो, मुबारक हो। जो नहीं आये हैं उन्हों को भी मिल जायेगी मुबारक। अच्छा।

मीडिया वाले उठो - अच्छा है, अभी अटेन्शन दिया है, मीडिया द्वारा सर्विस अच्छी हो रही है। रेग्युलर स्टूडेन्ट भी बने हैं। इन्हों को भी बधाई हो (रवी भाई, सिवानी बहन और कनुप्रिया बहन से) अच्छा है, जितना जो सेवा करते हैं उसका फल है सदा खुशी रहती है। सेवा का फल खुशी, निर्विघ्न। कभी-कभी नहीं, सदा। तो अच्छा कर रहे हैं और सब राय करके कैसे इसको भी बढ़ाना है, देश में चाहे विदेश में, सब एक दो में राय करके सबकी राय से जो कार्य होता है, उसमें सफलता सहज होती है। तो राय करते राय बहादुर बन एक दो की सुनना और करना। हो जायेगा अभी टाइम ही क्या है इसलिए मीडिया वाले, इतने लोग है ना मीडिया वाले तो अपने-अपने एरिया में सन्देश देने का प्रोग्राम भी बनाओ। यह तो मधुबन या निमित्त बने हुए ने किया लेकिन हर एक को अपने-अपने एरिया में, जो मीडिया वाले हैं उन्हों को किसी रूप से सन्देश अपनी एरिया में फैलाना चाहिए। अच्छा कर रहे हैं, मुबारक हो।

ट्रांसपोर्ट विंग:- दोनों ही डिपार्टमेंट का कार्य आजकल जरूरी है क्योंकि दिन प्रतिदिन एक्सीडेंट बहुत हो रहे हैं। तो दोनों डिपार्टमेंट एक्सीडेंट कम हों, अकाले मृत्यु न हो, चिल्लाते चिल्लाते दु:खी होके न जायें, इसके पुरुषार्थ के लिए प्लैन बनाते रहते हैं, अभी भी बनाया है, बापदादा ने जब स्थापना की, बच्चे जब पढ़ने के लिए आये शुरू में तो शुरू में ही बापदादा कहते थे कि यह मृत्युलोक है, तो बच्चे थे ना, वह कहते थे मृत्युलोक कैसे है। क्योंकि मृत्यु तो देखा नहीं बच्चे थे। लेकिन अभी हर एक देख रहा है कि यह समय मृत्यु का ज्यादा है, कोई ऐसा दिन नहीं होगा जिसमें एक दो अकाले मृत्यु न होता हो। तो अच्छा है दोनों को जोरशोर से अपना कार्य बढ़ाना चाहिए। सब आपको मुबारक देंगे क्योंकि लोग भी चाहते हैं कि यह अकाले मृत्यु नहीं हो। तो बहुत अच्छा, आपस में मीटिंग करते हैं, बापदादा ने देखा है जब से यह वर्गो की सेवा शुरू हुई है तो कई सेन्टर के बच्चों को चांस मिला है सेवा करने का लेकिन एक बात बापदादा की अभी तक पूरी नहीं की है, याद है? बापदादा ने कहा था हर एक वर्ग का कोई ऐसा नामीग्रामी स्पीकर निकालो, माइक निकालो, और एक स्टेज पर तीन चार वर्ग के विशेष व्यक्ति अपना अनुभव

सुनायें। आपस में एक ग्रुप बनावें जिसमें हर वर्ग का एक विशेष हो, जैसे ब्राह्मण परिवार को निमन्त्रण देकर बुलाते हैं स्पीच के लिए, वैसे उन पार्टी को जहाँ तहाँ निमन्त्रण देके भाषण का चांस दो। तो देखे कि हर वर्ग वाले कैसे कमल पुष्प के समान रह आगे बढ़ सकते हैं। अच्छा है।

समाज सेवा विंग:- समाज सेवा, समाज में यह आवाज फैल जाये तो यह क्या सेवा कर रहे हैं? समाज सेवा तो वास्तव में सब वर्ग वालों की कर सकते हैं। और आपस में बापदादा ने देखा है कि हर वर्ग उमंग उत्साह से संगठन में आते हैं और सेवा भी कर रहे हैं। एक दो को मदद भी दे रहे हैं। अब समाज में आवाज फैले। अगर समाज को ठीक करना है तो ब्रह्माकुमारियों के पास जाके देखो। कैसे समाज की सेवा हो सकती है। हर एक अच्छा करता है, चांस भी लेते हैं तो बढ़ो और बढ़ाओ। समाज में थोड़ा आवाज फैलाओ कि यह क्या कर रहे हैं। अच्छा।

डबल विदेशी:- डबल विदेशियों ने यह अच्छा चांस लिया है, हर एक ग्रुप में डबल विदेशी आते ही हैं। चतुर हैं। अपना चांस अलग भी लेते हैं और फिर हर ग्रुप में भी आते हैं। नाम डबल पड़ा हुआ है ना तो डबल फायदा लेते हैं। और भारतवासी भी आप सबको चांस लेते हुए देख खुश होते हैं। और यह बड़ा प्रोग्राम भी फॉरेन में भी अच्छा किया है चाहे एक नाम का फर्क किया लेकिन सेवा अच्छी हुई। बापदादा ने फॉरेन में भी सेवा की रिजल्ट सुनी भी है और देखी भी है। अभी बापदादा यही चाहते हैं कि देश वा विदेश का हर बच्चा एवररेडी सदा रहे। जैसे अच्छे स्टूडेन्ट जो होते हैं पढ़ाई में वह सदा यही इन्तजार करते हैं कि जल्दी-जल्दी इम्तहान हो, ऐसे ही हर बच्चा ऐसा एवररेडी हो कि कल भी कुछ हो जाए तो एवररेडी। सब सबजेक्ट में, चार ही सबजेक्ट में एवररेडी। समय आया और पास विद ऑनर बना। यही बापदादा की सभी बच्चों के प्रति शुभ आशा है और डबल विदेशी को तो बापदादा डबल पुरुषार्थी का टाइटिल देता ही है। तो बहुत अच्छा डबल चांस लेने वाले हो। अच्छा।

वर्ल्ड रिलीजस कान्फ्रेन्स आस्ट्रेलिया में हो रही है जिसमें दादी जानकी जी जा रही हैं:- अच्छा है उन्हों को भी समय की पहचान और बाप की पहचान समय और बाप दोनों की पहचान, कम से कम यह उल्हना न दें कि हमारा बाबा आया, हमको पता नहीं पड़ा। तो सन्देश देने में तो आप होशियार हो ही। हाँ कराने वाला तो बाप है लेकिन करने वाला भी योग्य होगा तब बाप भी करायेगा। तो अच्छा है। आप पहुंच रही हो तो बहुत अच्छा। बापदादा तो साथ है ही। साथ भी है, साथी भी है। अच्छा।

पहले बारी कितने आये हैं, वह उठो:- अच्छा है आपको बापदादा के सामने आने के दिन का बहुत-बहुत मुबारक हो, मुबारक हो। बाप की नज़र बच्चों पर पड़ी और बच्चों की नज़र बाप के ऊपर पड़ी। तो बहुत-बहुत बधाईयां हैं। अच्छा। और केक तो नहीं है लेकिन खुशी का केक खा लो। अच्छा है, अभी देरी से आये हो लेकिन फास्ट जाके नम्बर आगे ले सकते हो। इसलिए बापदादा की तरफ से और सर्व आपके साथी भाई और बहिनों का, सबका मुबारक हो, मुबारक हो। ऐसा मिसाल होगा जो लास्ट आने वाला भी फास्ट जाके फर्स्ट लाइन में आ सकता है। अच्छा।

चारों ओर के बापदादा की आशाओं को पूर्ण करने वाले आशाओं के दीपक, क्यों, क्या की भाषा से न्यारे रहने वाले सदा एकरस, सदा एक बाबा दूसरा न कोई, बाप में ही विशेष जीवन के तीन सम्बन्ध, बाप, शिक्षक, सतगुरू अनुभव करने वाले, बाप से वर्सा, टीचर से पढ़ाई का वर्सा और सतगुरू से वरदानों का वर्सा प्राप्त करने वाले पदमगुणा भाग्यवान हर बच्चे को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:- सभी को मदद भी सभी ने अच्छी की है। किसी को सोच नहीं करना पड़े कैसे करें, करना ही है। एक दो की मदद से सभी प्रोग्राम अच्छे हुए। आवाज तो फैल गया। सन्देश तो मिला अभी आगे बढ़ो। क्योंकि टापिक ही थी ना वरदान लेना है। तो योग के प्रोग्राम से अनुभव किया।

सन्तोष बहन (सायन) ने याद दिया है:- उसको याद देना। बहुत-बहुत यादप्यार स्वीकार हो।

दादी निर्मलशांता से:- हिम्मत करने से बाप की मदद तो है ही। अच्छा है, कर्मभोग को भी कर्मयोग से बदल दिया। बहुत अच्छा।

रमेश भाई ऊषा बहन, अनीला बहन- अभी तीनों की तबियत ठीक है। यहाँ सबकी शक्ति मिलती है। वायुमण्डल की मदद मिलती है। अच्छा है, यहाँ अच्छे हैं तो अच्छा है। जब तक रह सको, रहो। (रमेश भाई) आप अपना काम करो, यह अपना करे। (ऊषा बहन से) आप यहाँ बैठे सेन्टर्स पर फोन घुमा करके खुश खैराफत देती रहो। इनका काम अपना है, आपका अपना है। (इनके 50 साल मनाये) 50 वर्ष निर्विघ्न निभाया, आगे आगे बढ़ते रहे, पीछे नहीं रहे, उसकी मुबारक अच्छी है। एक दो के मददगार भी बनें और सेवा के भी मददगार हैं। यह भी खुश हो रही है। बापदादा को शांता माता भी बहुत याद रहती है। फाउण्डेशन रही। गुप्त रत्न थी।

बृजमोहन भाई से:- प्रोग्राम बनाते रहना, यह पूरा हुआ बस खत्म नहीं। टॉपिक अलग प्रकार की थोड़ा चेंज करके रखें।

(वी.आई.पी बापदादा से मिल रहे हैं):- जो हिम्मत रखते हैं उसको मदद 100 गुणा मिलती है। तो मिलती रहेगी। भले वह भी ड्युटी बजाओ, तब तक हैं जब तक ड्युटी बजाओ लेकिन डबल काम, सिंगल नहीं।

2- शक्ति भरके कनेक्शन पूरा रखो। जिनका कनेक्शन रखेंगी उतना रिलेशन पक्का होता जायेगा। अगर टाइम नहीं भी मिले ना तो डेली फोन पर भी प्रेजेन्ट मार्क डालो तो पक्की स्टूडेन्ट नम्बरवन हो जायेंगी।

जो आत्मा गई, वह भी कनेक्शन में गई। बेटों को कोई न कोई कारण से सम्बन्ध में लाओ। रेग्युलर नहीं तो फंक्शन में लाओ, उनकी सेवा करो, वह भी ठीक रहेगा। इस सम्पर्क में साथ भी मिलेगा और भविष्य भी बनेगा। कनेक्शन नहीं तोड़ना। पक्का। तो बापदादा अभी भी शक्ति दे रहा है, आगे भी बढ़ायेगा। कोई फिकर नहीं करो, बेफिकर होकर सेवा करो। बापदादा साथ है।

विशेष 15 दिन के लिए होमवर्क

चेक करना:

1) हर सरकमस्टांस वा बातों के बीच - संकल्प, वाणी और कर्म में व्यर्थ से मुक्त रहे?

2) स्वप्न में भी क्यों, क्या से मुक्त विजयी रहे?

3) हलचल में भी अचल रहे? फुलस्टॉप लगाया या क्वेश्चन मार्क?

''परिवार के साथ प्रीत निभाने के लिए नॉलेजफुल बन बाप समान साक्षीपन की स्थिति में रहना है, बाप, स्व, ड्रामा और परिवार चारों में निश्चयबुद्धि बन विजयी बनना है''

आज समर्थ बाप अपने समर्थ बच्चों को देख रहे हैं क्योकि हर एक बच्चा स्नेह से बाप समान बनने का पुरुषार्थ बहुत लगन से कर रहे हैं। बापदादा बच्चों को देख खुश होते हैं और दिल में बच्चों के गीत गाते हैं वाह बच्चे वाह! क्योंकि बच्चे बाप के भी सिर के ताज हैं। देखो बच्चों की पूजा डबल रूप में होती है, बाप की पूजा एक रूप में होती है। तो बच्चे बाप से भी बाप द्वारा आगे जाते हैं इसलिए बाप बच्चों के पुरुषार्थ को देख खुश है। नम्बरवार तो हैं लेकिन पुरुषार्थ का लक्ष्य आगे बढ़ा रहे हैं। आज अमृतवेले चारों ओर के बच्चों में एक बात जो ज्ञान का फाउण्डेशन है वह देखा। फाउण्डेशन है निश्चय। कहा हुआ भी है निश्चयबुद्धि विजयी। तो आप सबका निश्चय देखा, सभी का नम्बरवार बाप में तो निश्चय है ही, उसकी निशानी सभी बाप को पहचान बाप के बने हैं और यहाँ भी आये हैं, बाप से मिलने के लिए। बाप में हर एक बच्चे का अटूट निश्चय है लेकिन बाप के साथ और भी निश्चय पक्का होना चाहिए वह है स्व में निश्चय। साथ में ड्रामा में निश्चय और परिवार में निश्चय। इन चार प्रकार के निश्चय में पक्के होना अर्थात् निश्चयबुद्धि विजयन्ती बनना। तो चेक करो कि इन चार निश्चय में पक्के हैं? बाप में तो सभी कहते हैं मेरा बाबा और मैं बाप की। बाप के ऊपर मेरा कहके पूरा बाप का अधिकार प्राप्त कर लिया। सदा बाप के द्वारा अधिकारी बन सर्व खजानों के अधिकारी बन गये। साथ में स्व में भी निश्चय जरूरी है क्यों? अगर स्व में निश्चय नहीं है तो दिलशिकस्त बन जाते हैं। स्व में निश्चय यही है कि मैं बाप द्वारा स्वमानधारी हूँ, स्वराज्य अधिकारी हूँ। स्वयं बाप ने मुझे कितने स्वमान दिये हैं। एक एक स्वमान को स्मृति में लाओ तो कितना नशा चढ़ता है! आजकल किसी को भी कोई टाइटल मिलता है तो वह भी अपना भाग्य समझते हैं। लेकिन आप बच्चों को एक-एक स्वमान किसने दिया! स्वयं बापदादा ने हर बच्चे को स्वमानधारी बनाया है। एक-एक स्वमान को याद करते खुशी में उड़ते हो। तो स्व में भी इतना सदा निश्चय का नशा रहे कि मैं बाप द्वारा स्वराज्य अधिकारी, स्वमान अधिकारी कोटो में कोई आत्मा हूँ। जैसे बाप में निश्चय है तो साथ में स्व में भी निश्चय आवश्यक है क्योंकि अगर स्व में निश्चय है तो जहाँ निश्चय है वहाँ हर कर्म में निश्चयबुद्धि अर्थात् स्वमानधारी विजयी है। निश्चय का अर्थ ही है सफलता। ऐसे नहीं कि हमारा तो बाप में निश्चय है, बाप में है वह तो बहुत अच्छा लेकिन साथ में बाप के स्व का नशा भी आवश्यक है मैं कौन! एक-एक स्वमान को याद करो तो निश्चय और नशा आपके चलन और चेहरे से दिखाई देगा। दे रहा है और दिखाई देता रहेगा। साथ में तीसरी बात तो ड्रामा में भी निश्चय बहुत जरूरी है क्योंकि ड्रामा में समस्यायें भी आती हैं और सफलता भी होती है। अगर ड्रामा में पक्का निश्चय है तो ड्रामा के निश्चय से जो निश्चयबुद्धि है वह समस्या को समाधान स्वरूप में बदल देता है क्योंकि निश्चय अर्थात् विजय। तो किसके ऊपर विजयी बनता? परिवर्तन करने में, एक सेकण्ड में समस्या परिवर्तन हो समाधान रूप बन जाती है। हलचल में नहीं आयेंगे, अचल रहेंगे क्योंकि ड्रामा के ज्ञान से अडोल अचल बन जाते हैं। यह निश्चय रहता है कि मैं ही कल्प पहले भी समाधान स्वरूप अर्थात् सफल आत्मा बना था, बनी हूँ और कल्प के बाद भी मैं ही बनूंगी। तो यह नशा ड्रामा का निश्चय पक्का कराता। फखुर रहता है, नशा रहता है मैं थी, मैं ही हूँ और मैं ही बनेंगी इसलिए इस पुरुषार्थी जीवन में ड्रामा का निश्चय भी आवश्यक है और साथ में चौथा है परिवार का निश्चय क्योंकि बाप ने आते ही परिवार को पैदा किया। तो जैसे बाप में निश्चय है वैसे परिवार में भी निश्चय आवश्यक है क्योंकि परिवार किसका है? और इतना बड़ा परिवार और किसका हो सकता है! तो परिवार में भी निश्चय अति आवश्यक है क्योंकि इतना बड़ा परिवार विश्व में किसका है? आप जितना परिवार चेक करो विश्व में, किसका है? परिवार की रीति से किसी भी डिवाइन फादर का भी नहीं है वहाँ फॉलोअर हैं, यहाँ परिवार है। परिवार के साथ ही सेवा में, सम्बन्ध में रहते

हो। ऐसे नहीं कि हमारा तो बाप से ही कनेक्शन है, परिवार से नहीं हुआ तो क्या हुआ। परिवार का निश्चय तो आपका 21 जन्म चलना है। जानते हो ना! परिवार के साथ ही सम्बन्ध में आने से मालूम होता है कि मैं इतने बड़े परिवार में सभी से निश्चयबुद्धि हो चल रहे हैं, परिवार में चलने के लिए यह अटेन्शन देना पड़ता है कि परिवार में हर एक के संस्कार भिन्न-भिन्न हैं और होंगे। आपका यादगार माला है, माला में देखो कहाँ एक नम्बर और कहाँ 108वां नम्बर क्योंकि परिवार में भिन्न-भिन्न संस्कार हैं। तो इतने बड़े परिवार में चलते संस्कारों को समझ एक दो में एक परिवार, एक बाप एक राज्य, तो एक होके चलना है। परिवार में जैसे बड़ा परिवार है, ऐसे ही एक दो में बड़ी दिल, हर एक के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना की स्थिति में स्थित हो चलना है क्योंकि परिवार के बीच ही संस्कार स्वभाव आता है। लेकिन कोई समझे परिवार से क्या है, बाबा से तो है। लेकिन यहाँ धर्म और राज्य दोनों की स्थापना है, सिर्फ धर्म नहीं है, दूसरे जो भी धर्म पिता आये हैं उनका सिर्फ धर्म है, राज्य नहीं है, यहाँ तो आप सबको राज्य भी करना है। तो राज्य में परिवार की आवश्यकता होती है और 21 जन्म भिन्न-भिन्न रूप से परिवार के साथ ही रहना है, परिवार को छोड़ कहाँ जा नहीं सकते। तो चेक करो ऐसे नहीं समझना कि बाप जाने मैं जानूं। बाप से ही कार्य है लेकिन अगर इन चार निश्चय में से एक भी निश्चय कम है तो हलचल में आ जायेंगे। सेवा के साथी, बाप तो सकाश देने वाले हैं लेकिन साथी कौन? साकार का साथ तो परिवार का है तो बाप ने देखा है कि तीन निश्चय में मैजारिटी ठीक चल रहे हैं लेकिन परिवार के साथ में निभाना, संस्कार मिलाना, एक-एक को कल्याण की भावना से देखना और चलना, इसमें कई बच्चे यथाशक्ति बन जाते हैं। लेकिन बाप ने देखा कि जो परिवार के निश्चय में नॉलेजफुल होके सदा बाप समान साक्षीपन की स्थिति में साथ में आते हैं, रहते हैं वही नम्बरवन या नम्बरवन डिवीजन में आते हैं। तो चेक करो भाव स्वभाव परिवार में होता है, तो छोटी-छोटी गलतियां भी होती हैं, विघ्न आते हैं वह परिवार के सम्बन्ध में ही आती हैं। तो सबसे आवश्यक इस परिवार के सम्बन्ध में पास होना है। अगर परिवार में चलने में तोड़ निभाने में कोई भी कमी होती है तो वह विघ्न छोटा हो या बड़ा हो लेकिन तंग करता है। यह क्यों, यह कैसे, परिवार के कनेक्शन में आता है। तो क्यों के बजाए, क्यों नहीं करना है, लेकिन हमें मिलकर चलना है, परिवार की प्रीत निभानी है क्योंकि यह बाप का परिवार है, भगवान का परिवार है। रिवाजी परिवार नहीं है। नशा रहना चाहिए कि वाह बाबा, वाह ड्रामा, वाह मैं और वाह परिवार! ठीक है? चेक करते हो? चार ही में पास हो? चार ही में? एक में भी कम नहीं। चेक करो। अभी-अभी चेक करो क्योंकि विजयी बनने का साधन ही यह है। परिवार के बीच संस्कार निकलते हैं और वह संस्कार मिलाना खुद भी परिवर्तन करना और परिवार को भी इतनी ऊंची दृष्टि से देखना। बापदादा ने पहले भी कहा है कि बापदादा लास्ट बच्चे को भी अति भाग्यवान समझते हैं क्यों? भगवान को पहचानना, साधारण रूप में बाप को पहचानना, जो इतने बड़े-बड़े महात्मायें भी पहचान नहीं सके, लेकिन बापदादा का लास्ट बच्चा भी मेरा बाबा कहता है। दिल से मेरा बाबा कहते हैं। तो बापदादा जैसे लास्ट बच्चे की भी विशेषता देख, जैसे बच्चों को लाड प्यार, यादप्यार देते हैं वैसे लास्ट वालों को भी देते हैं। तो चेक करो कि तीन में ठीक हो या चारों में ठीक हो या दो में ठीक हो या एक में ठीक हो? चेक किया? किया चेक? जो समझते हैं कि मैं चार ही मैं, चार ही निश्चय में बाप, आप, ड्रामा और परिवार, चार ही निश्चय में ठीक हूँ वह हाथ उठाओ। ठीक हैं? अच्छा ठीक हैं। पेपर लें? हाँ उठाओ। अच्छा परिवार में पास हो? परिवार के सम्बन्ध में आना, क्योंकि परिवार को छोड़ तो कहाँ जायेंगे नहीं, रहना ही है, निभाना ही है। तो इसमें पास हो? कभी ऐसे आता है कि यह नहीं होता तो अच्छा होता, यह क्यों करते हैं, यह क्यों होता है, यह संकल्प आता है... एकदम परिवार का नशा, चार ही निश्चय वाला कभी भी ऐसे वैसे संकल्प में भी नहीं करेगा। संकल्प में आये कि ऐसे क्यों होता है, लेकिन मुझे वह क्यों वा क्या हिलावे नहीं, मूड नहीं बदली करे। इसको कहते हैं चार ही में पास। हाथ तो उठाया, बापदादा को खुश किया है परन्तु बापदादा को यह जो परिवार की बात है उसमें कभी कभी-बातें सुननी पड़ती हैं, देखनी पड़ती हैं। एकदम बड़ी दिल हो, सबको शुभ भावना, शुभ कामना से ठीक करना है, क्योंकि परिवार ही एक है। एकमत होके चलना और चलाना है। सिर्फ चलना नहीं है, चलाना भी है इसलिए बापदादा

इस बात पर अटेन्शन दिला रहे हैं कि परिवार में जो किसी भी हलचल में पास हो जाते हैं, व्यर्थ नहीं चलता है, उन्हें दूसरों को ऐसा बनाना है। अभी तो आप अपने-अपने सेन्टर पर कितने रहते हो, चलो ज्यादा में ज्यादा 25-50, इतने होते नहीं हैं लेकिन मानों बड़े स्थान हैं, उसमें भी 50-60 अच्छा ज्यादा में ज्यादा 100 भी समझो, इतने हैं नहीं लेकिन समझ लो, तो बापदादा ने सभी सेन्टर्स के बच्चों को लास्ट को भी अपना प्यारा कहके चलाया और प्यार की निशानी है रोज़ बापदादा यादप्यार क्या देता? मीठे मीठे, जानता है खट्टे भी हैं लेकिन मीठे खट्टे कभी यादप्यार में कहा है? उन्हों को भी लाडले कहता है, न सिर्फ कहता है लेकिन मेरा बच्चा है, मेरे भाव से चलाता है क्योंकि ड्रामा में, माला में सब एक नम्बर नहीं हैं, यह रिजल्ट है। संस्कार भिन्न-भिन्न होते हैं, होना है, नहीं तो सब राजा बन जायें, प्रजा कौन बनेगा! राज्य किस पर करेंगे? अच्छी प्रजा भी तो चाहिए, रॉयल प्रजा, राजधानी है ना। ऐसे हर एक अपने को चेक करे, परिवार में किसी भी बात में संस्कार खराब हैं, लेकिन मेरा संस्कार क्या? अगर खराब को देख मेरा संस्कार भी खराब हो गया, तो मैं भी तो खराब हो गया। खराब अच्छे को भी बदल लेता है।

बाप ने स्थापना के समय 350-400 को इकट्ठा सम्भाला है, इतना तो अभी किसी का इकट्ठा रहने वाला परिवार नहीं है। चलो, ड्युटी अलग अलग है लेकिन वह ड्युटी है और परिवार में ड्युटी है। रिवाजी परिवार, रिवाजी ड्युटी, रिवाजी रीति से दिनचर्या बिताना, यह नहीं है, न्यारा और प्यारा परिवार है। इसमें डिस्टर्ब होना, फिर बहाना तो यह देते कि इसने किया तब यह हुआ। यह किया तो यह हुआ, लेकिन बाप के आगे भी क्या आपोजीशन नहीं हुई! भागन्ती भी हुए ना! यह आपोजीशन नहीं है! लेकिन बाप ने फिर भी कहा, कोई भागन्ती भी हो गये तो भी टोली भेजो, उनको बुलाने की कोशिश करो, सर्विस करो, याद दिलाओ। ऐसे चार ही निश्चय में पास होना है वा तीन में, दो में? नम्बरवन होना है। इसके लिए विनाश की तैयारियां होते भी अभी विनाश रूका हुआ है। प्रकृति भी बाप के पास आती है, प्रकृति भी कहती अब बहुत बोझ हो गया है। प्रकृति भी बोझ से छूटने चाहती है। माया भी कहती है कि मैं जानती हूँ कि मेरा पार्ट अभी जाने वाला है लेकिन ब्राह्मण परिवार में ऐसे भी बच्चे हैं जो छोटी बात में मेरे साथी बन जाते हैं। बिठा देते हैं मेरे को। तो अपना राज्य लाने में यह चार निश्चय परसेन्ट में हैं इसलिए समय भी रुक रहा है। बाकी माया और प्रकृति दोनों रेडी हैं। अब बताओ आर्डर करें? बच्चे अगर एवररेडी नहीं हैं तो माया और प्रकृति को आर्डर करें? करें? हाथ उठो। तैयार हो? ऐसे नहीं हाथ उठाओ। पेपर आयेगा, आयेगा पेपर। एवररेडी?

अभी बापदादा की हर बच्चे में यही आशा है कि कैसे को मिटाके ऐसे करो। कैसे करूं, कैसे हो, नहीं। ऐसे हो। क्या करें नहीं, ऐसे करें। यह आश कब तक पूरी करेंगे? कितना टाइम चाहिए? क्योंकि सभी को तैयार होना है। अगर आप तैयार हो, हाथ उठाया, तो उन्हों का काम क्या है? एक दो को आप समान बनाना। जिन्होंने हाथ उठाया, वह आप समान बना सकते हो? परिवार को तैयार कर सकते हो? इसमें हाथ उठाओ। कर सकते हैं? अच्छा कितना टाइम चाहिए? कितना टाइम चाहिए? एक वर्ष। कितना चाहिए? कितना टाइम चाहिए? टीचर्स बतावें कितना टाइम चाहिए? पाण्डव बतावें ना! हाथ तो उठाया, कितना टाइम चाहिए। परिवार है, तो परिवार में सहयोग तो देना पड़ेगा ना। परिवार से कट तो होंगे नहीं, छोड़के जाना तो है नहीं, रहना तो यहाँ ही है तो परिवार को भी तैयार करना पड़ेगा ना। लौकिक में भी जब अच्छी बुद्धि थी, (आजकल नहीं) तो एक दो के सहयोगी बन आगे बढ़ाते थे, गांव को भी अपना परिवार समझते थे और यह तो अलौकिक परिवार है क्योंकि खिटखिट जो होती है, माया जो आती है वह परिवार की बात में आती है, सम्बन्ध में आती है, वेस्ट थॉट्स सम्बन्ध के कनेक्शन में चलते हैं। तो हाथ उठाने वाले बतायेंगे? क्या बोलते हैं? कोई बोले, माइक दो। (इसी सीजन में पूरा करेंगे) इसके साथ जो हैं वह हाथ उठाओ। यह फोटो निकालना। टीचर्स, इस सीजन में एक दो को सहयोग देकर, एक दो को भी आगे बढ़ाके और बाप की आशा को पूर्ण करेंगे, ठीक है? इसमें हाथ उठाओ। हाथ तो उठाके खुश कर दिया। अच्छा है। बाप कहते हैं एक बल एक भरोसा। अगर दोनों ही बातें हैं तो क्या नहीं हो सकता है! बाप ने कितने थोड़े समय में स्थापना का पार्ट बजाया! अभी तो सब नॉलेजफुल बन गये हैं। डबल लाइट भी बन गये हैं। बापदादा जानते हैं कि यह सबजेक्ट थोड़ा अटेन्शन देने

की है। पहले भी काम दिया था कि कम से कम एक सेन्टर जो है वह भी निर्विघ्न बने, सेन्टर के बाद ज़ोन बने, चलो ज़ोन भी छोड़ो, हर एक शहर समझो, कोई भी शहर है, दिल्ली है, अहमदाबाद है, कलकत्ता है, कोई एक कलकत्ता भी निर्विघ्न बन जाए, कलकत्ते के, दिल्ली के भी बैठे हैं और यह जिसका टर्न है कर्नाटक, कर्नाटक की सब टीचर्स बैठी हैं। कर्नाटक का एक एक सेन्टर और सेन्टर के कनेक्शन में जो हैं वह भी अगर एक हो जाएं तो उस ज़ोन को, शहर को भी बापदादा इनाम देगा। अच्छी सौगात देंगे, कोई निमित्त बनके दिखाये। मुख्य सेन्टर और उसके साथी सेन्टर, सारा परिवार तो बनना है ही लेकिन अभी तक रिजल्ट नहीं है। चलो मधुबन वालों ने हाथ उठाया है, अच्छा है। क्या नहीं कर सकते हैं। लेकिन करना पड़ेगा। ठीक है ना! पसन्द है? सभी को पसन्द है? लेकिन बापदादा ने इस सीजन के पहले सीजन में तीन चार बार कहा है, कोई की भी अभी तक रिजल्ट नहीं आई है। क्या यह समझते हो कि यह भी बात अचानक होनी है? चलो अचानक हो भी जाए लेकिन बापदादा ने कहा है कि बहुत समय का अभ्यास चाहिए तब ही बहुतकाल का अधिकार प्राप्त करेंगे।

तो अभी क्या करना है? लगन की अग्नि को जलाओ। करना ही है। इसके लिए एक बात में सभी पास भी हैं, हाथ उठाओ, जो समझता है बापदादा से हमारे दिल का प्यार 100 परसेन्ट है। 100 परसेन्ट है? लम्बा हाथ उठाओ। तो प्यार का रिटर्न क्या होता है? प्यार का रिटर्न होता है समान बनना, सम्पन्न बनना, सम्पूर्ण बनना। तो अभी बापदादा एक ड्रिल बताता है, सभी कहते हैं बापदादा दोनों से प्यार है, हाथ उठाया, होंगे तो नम्बरवार लेकिन हाथ उठाया तो बापदादा मानते हैं। दोनों से प्यार है ना। ब्रह्मा बाप से और शिव बाप से दोनों से प्यार है ना! दोनों से है? हाथ उठाओ। अच्छा, दोनों से है। बहुत अच्छा धन्यवाद। अच्छा, दोनों के समान बनने चाहते हो। हाथ नहीं उठाओ, कांध हिलाओ। अच्छा। दोनों से प्यार है तो शिव बाप है निराकारी, ठीक है और ब्रह्मा बाप है फरिश्ता। फरिश्ता है ना! तो कल से नहीं, आज से ही अभी से सारे दिन में दोनों बाप से प्यार है तो कभी अपने को निराकार बाप समान निराकारी स्थिति में अभ्यास करो, फालो फादर। और कभी फरिश्ता बनकरके साकार रूप ब्राह्मण नहीं, ब्राह्मण तो हो ही, कर्म भले करो लेकिन कर्म करते भी फरिश्ता स्थिति में रहो तो कर्म का बोझ प्रभाव नहीं डालेगा। ब्रह्मा बाप से प्यार है तो ब्रह्मा बाप ने कर्म सब किया, निमित्त बना लेकिन ब्रह्मा बाप के ऊपर कितना बोझ था। आप कोई के ऊपर इतना बोझ नहीं है, है कोई, ब्रह्मा बाप से ज्यादा किसके ऊपर बोझ है, जिम्मेवारी है? वह हाथ उठाओ। कोई नहीं उठाता। तो ब्रह्मा बाप ने इतनी जिम्मेवारी निभाते हुए कार्य में कैसे रहा, कर्म में भी फरिश्ता रूप रहा ना! तो आपका भी ब्रह्मा बाप से प्यार है, तो कभी फरिश्ता रूप में रहो, कभी निराकार स्थिति में रहो, यह प्रैक्टिस, ब्रह्मा बाबा कहके ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता बन जाओ और शिव निराकार बाप को याद कर निराकारी स्थिति में स्थित हो जाओ, यह कर सकते हो? यह कर सकते हो या मुश्किल है? जो कर सकते हैं बीच-बीच में, वह बीच-बीच में ऐसे करें जो लगातार हो जाए, अपने कर्म के हिसाब से जो आपकी दिनचर्या है उसके हिसाब से फिक्स करो। कम से कम सारे दिन में 12 बारी फरिश्ता बनो, 12 बारी निराकार स्थिति में स्थित रहो, यह कर सकते हो? हाथ उठाओ। कर सकते हो? मुश्किल नहीं है ना! सहज है ना! सहज है? सहज में हाथ उठाओ। अच्छा, करना है। यह पक्का करो। फिर तो जो लक्ष्य रखा है ना, इस सीजन के अन्त तक परिवर्तन हो सकता है। अगर यह ड्रिल 24 टाइम करेंगे तो लगातार हो जायेगा ना। ठीक है ना, हो सकता है! हाथ उठाओ। हो सकता है! फिर तो बापदादा की तरफ से पदम पदम पदम पदम गुणा मुबारक हो, मुबारक हो। लेकिन ढीला नहीं छोड़ना। सभी निश्चय करो हमको इसमें नम्बरवन होना है। नम्बरवार नहीं होना, नम्बरवन क्योंकि बापदादा के पास समय बहुत आता है। प्रकृति तो चिल्लाती है, बोझ सहन नहीं होता। माया भी विदाई लेने चाहती है लेकिन कहती है मैं क्या करूं, ब्राह्मण कोई न कोई ऐसा काम संस्कारों वश होकर करते हैं जो मुझे आह्वान करते हैं तो मुझे जाना ही पड़ता है। तो बापदादा क्या जवाब दे! इसलिए जैसे समय आगे बढ़ रहा है, अभी आप लोग सेवा में भी अन्तर देख रहे हो ना! सेवा का रिटर्न अभी सभी चाहते हैं, कुछ हो, कुछ हो। ब्रह्माकुमारियां जो कहती थी वह अभी ठीक हो रहा है। पहले कहते थे विनाश, विनाश नहीं कहो, अब तो कहते

हैं कब होगा, आप ही तारीख बताओ। अभी सुनने चाहते हैं, पहले बहाना देते थे, तो यह भी फर्क हो रहा है ना! प्रैक्टिकल देख रहे हो ना इसलिए अभी जो बापदादा से वायदा किया है उसको निभाते रहना। ठीक है! बापदादा ने सभी समाचारों की रिजल्ट सुनी है, जो भी चला है, अच्छा चला और रिजल्ट भी अच्छी उमंग-उत्साह की रही है इसलिए अभी लक्ष्य रखो होना ही है, करना ही है, समाप्ति को समीप लाओ। आप थोड़े हिलते हो ना तो समाप्ति भी दूर हो जाती है। आपको ही समाप्ति को समीप लाना है क्योंकि राज्य करने वाले तैयार नहीं होंगे तो समय क्या करेगा? इसलिए सब बहाना, कारण, कारण शब्द को समाप्त करो। निवारण सामने लाओ। हाथ भले थोड़ों ने उठाया लेकिन आप सबका भी यही लक्ष्य है ना कि दु:खियों को सन्देश दे मुक्त करें। उन्हों को मुक्त करने के बिना आप मुक्ति में जा नहीं सकते। तो इन्हों को मुक्त करो क्योंकि बाप आया है ना तो सारे विश्व के बच्चों को वर्सा तो देंगे ना। आपको जीवनमुक्ति का वर्सा देंगे लेकिन सभी बच्चे तो है ना। उनको भी वर्सा तो देना है ना। तो उन्हों का वर्सा है मुक्ति, आपका वर्सा है जीवनमुक्ति। जब तक मुक्ति नहीं देंगे तो आप भी जा नहीं सकते। इसके लिए यह ड्रिल करो। 24 बारी। रात और दिन के 24 घण्टे हैं और 24 बार करना है, नींद के टाइम, नींद भले करो। बापदादा यह नहीं कहते कि नींद नहीं करो। नींद करो लेकिन दिन में बढ़ाओ। जब कोई फंक्शन करते हो तो सारा सारा दिन काम करते हो ना। जागते हो ना! अच्छा।

सेवा का टर्न कर्नाटक ज़ोन का है:- अच्छा पौना क्लास तो कर्नाटक है। चांस अच्छा लेते हैं। बापदादा भी खुश होते हैं कि इस टर्न में छुट्टी मिल जाती है आने की। तो जितने भी सेवाधारी आते हैं सेवा भी करते हैं और अपना भाग्य भी बनाते हैं तो कर्नाटक, नाटक है ना। तो नाटक में पार्ट बजाने में कर्नाटक नम्बरवन होगा ना। आप कितने बारी कर्नाटक, कर्नाटक कहते हो, जब नाटक शब्द कहते हो तो बेहद का नाटक भी याद आता है ना। तो इस बेहद के नाटक में भी नम्बरवन आना ही है। यह पक्का है ना! आना ही है, बनना ही है, चाहे कुछ भी करना पड़े, एवररेडी। है एवररेडी? कुछ भी करना पड़े तो एवररेडी। हाथ उठाओ। देखो पौना क्लास तो करने वाले हैं। नम्बरवन पार्ट अर्थात् निर्विघ्न बन निर्विघ्न बनाना है। सिर्फ अपने को निर्विघ्न नहीं बनाना, साथियों को भी बनाना है, है हिम्मत। कर्नाटक को हिम्मत है तो हाथ उठाओ। दो दो हाथ उठाओ। अच्छा। कितने टाइम में बनेंगे? कितने टाइम में बापदादा को रिजल्ट देंगे? कोई भी करे, जो ओटे सो अर्जुन। दो तीन टर्न के बाद या एक टर्न के बाद? जो कहते हैं दो चार टर्न के बाद, वह हाथ उठाओ। अच्छा। विशेष निमित्त तो यहाँ आगे हैं ना। अच्छा जो सेन्टर की मुख्य बहिने हैं वह हाथ उठाओ। सेन्टर के मुख्य भाई या बहन लम्बा हाथ उठाओ। तो क्या विचार है? जो समझते हैं तो तीन चार टर्न के बाद हम प्रैक्टिकल करके दिखायेंगे वह मुख्य हाथ उठाओ। मुख्य हैं, भाई भी उठाओ। दिखायेंगे। अच्छा आज कर्नाटक का टर्न है तो आप निमित्त करके दिखाओ, पक्का। आप और आपके संबंध में सेन्टर, पक्का है? पाण्डव पक्का है? अच्छा है। क्या नहीं हो सकता है! सिर्फ दृढ़ता चाहिए। यह नहीं हो, क्या करें होगा या नहीं होगा, नहीं, होना ही है। दृढ़ निश्चय। जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफलता है ही। तो यह भी भाग्य है जो आप पहला नम्बर एक्जैम्पुल बनेंगे। उसका भी फल है, उसका भी बल है। अच्छा है। तो कर्नाटक यह कमाल दिखायेगा। पक्का? कर्नाटक की विशेषता है, जो कर्नाटक के निमित्त बहन बनी (दादी हृदयपुष्पा), वह पुरानी बहिन, उनकी विशेषता क्या थी? सेन्टर खोलने की उनकी रीति बहुत अच्छी थी। सेन्टर कितने खुल गये? तो निमित्त उमंग-उत्साह वाली थी और आप सब भी निमित्त हो, तो उसकी विशेषता अपने में लानी है। सिर्फ सेन्टर नहीं बनाओ निर्विघ्न सेन्टर। ठीक है। पसन्द है ना! अच्छा है। कमाल करके दिखायेगा कर्नाटक। दूसरों को भी करना है, ऐसे नहीं कर्नाटक ही करेगा, उन्होंने हिम्मत रखी है, इसी हिम्मत का फल और बल मिलेगा। बाकी अच्छा है, कर्नाटक में भी सेवाओं का अच्छा रिजल्ट दिखाई देता है। वृद्धि होती जा रही है। अभी कोई माइक और वारिस सामने नहीं आया है। लेकिन इस निर्विघ्न बनने का अगर प्रैक्टिकल दिखायेंगे तो वह भी निकल आयेगा। अच्छा। बापदादा को सभी कर्नाटक वालों में यही आशा है कि करके दिखाने वाले हैं।

अच्छा है। कुछ भी हो, संकल्प को पूरा करके दिखाना। बापदादा की उम्मीदें हैं। अच्छा।

आपने जो ड्रिल सुनाई वह कितना समय ड्रिल करनी है? : कम से कम 10 मिनट।

बिजनेस विंग और एज्युकेशन विंग:- यह वर्ग जो बने हैं उसमें सर्विस बढ़ाने का शौक अच्छा है। और बापदादा ने देखा है कि हर एक विंग में उमंग-उत्साह है कि हम नये से नई बात करके दिखायें, निमित्त बनके दिखायें तो यह दोनों विंग जो हैं वह भी सर्विस अच्छी कर रहे हैं। एज्युकेशन वाले भी अपनी सर्विस, अपने-अपने प्रकार से कर रहे हैं और बिजनेस वाले भी अपने प्रकार से कर रहे हैं। अभी हर एक विंग अपना ग्रुप बनाये, यह ग्रुप अभी बनाया नहीं है, जिस ग्रुप में हर वर्ग के हों। मानो बिजनेस वर्ग है, उसके ग्रुप में सब वर्ग वाले एक ग्रुप हो अलग। जो कोई भी प्रोग्राम हो तो हर एक वर्ग वाले ऐसा प्रसिद्ध हो जिसका आवाज सुन करके लोगों में उमंग आवे तो हम भी कर सकते हैं। अभी बापदादा ने रिपोर्ट सुनी कि एक ग्रुप ने ऐसा प्लैन बनाया है, वी.आई. पी ग्रुप ने बनाया है। अच्छा है। हर एक वर्ग सारे इन्डिया में अपने अपने सेन्टर्स को यह सेवा देवे और जो भी वह समझते हैं कि यह वी.आई.पी ऐसा है, तो वह सभी वर्ग वाले एक स्थान पर अपना-अपना चुना हुआ वी.आई. पी. सब वर्ग वाले मीटिंग करो, यह प्लैन बापदादा ने दिया है, तो सभी ऐसे करो और उन्हों को निमित्त बनाओ। उन्हों की विशेष सेवा करो, जो माइक के साथ स्नेही सहयोगी बन जाएं। सिर्फ माइक नहीं बनें लेकिन स्नेही सहयोगी बनें क्योंकि स्नेह और सहयोग से उन्हों को आशीर्वाद मिलती है, पुरुषार्थ में आगे बढ़ने की। तो बापदादा और भी जो वर्ग आये हैं उन सभी वर्गो को कह रहे हैं, इसी सीजन में बापदादा हर ग्रुप का रिजल्ट देखने चाहते हैं। मधुबन में नहीं भी आवे लेकिन अपने वर्ग का जो हेड क्वार्टर हो उसमें इकट्ठा करें फिर बापदादा रिजल्ट देख करके सीजन के लास्ट में ऐसे सहयोगियों से मिलने का सोचेंगे। तो सुना, यह करना है। आशा ने दिया था? (आशा बहन-ओ.आर.सी) आपने दिया था ना। अच्छी बात है, अगर वर्ग वाले स्पष्ट समझने चाहे तो इनसे समझ लेना। बापदादा यह क्यों कहते हैं क्योंकि आप लोग जो पक्के ब्राह्मण हैं उन्हों को समय पर साक्षी होके देखना पड़ेगा, मन्सा सेवा इतनी बढ़ेगी जो आप लोगों के साथी बनके वह सेवा करें। वह सेवा करें और आप साक्षी होके मन्सा सेवा करो। जैसे ब्रह्मा बाप ने सेवा लायक बनाया, स्वयं साक्षी होकर देखा ना। ऐसे जो निमित्त बड़ी आत्मायें हैं, जो सर्विस को बढ़ाने वाली हैं, वह समय पर और सेवा में बिजी रहती हैं, लेकिन यह सेवा आपके योग्य तैयार किये हुए करें, जिसकी आवाज में अनुभव की आकर्षण हो, पोजीशन की आकर्षण नहीं लेकिन अनुभव की आकर्षण। वह प्रभाव बहुत जल्दी पड़ेगा क्योंकि बापदादा की उन्हों को, निमित्त बनने वालों को एकस्ट्रा मदद मिलती है, कोई भी हो, जिसको बापदादा का समय पर विशेष वरदान मिलता है, उसकी रिजल्ट वह खुद भी नहीं जान सकता कि क्या होती है, लेकिन यह एकस्ट्रा बापदादा की मदद है। वरदान है। वह नहीं बोलता, वरदान बोलता है इसलिए ऐसी आत्मायें तैयार करो, तो बापदादा समय प्रमाण उन्हों को भी वरदान दे आगे बढ़ाये। यह सभी वर्गो को बापदादा कह रहा है। अच्छा कर रहे हो, आगे भी बढ़ रहे हो, यह बापदादा सभी वर्गो को मुबारक देते हैं जो और 3-4 वर्ग वाले आये हैं, वह उठो।

यूथ, पोलीटिशन, स्पोर्ट, एडमिनिस्ट्रेशन:- यह एक बात सभी को करनी है इसलिए साथ में उठाया है। तो वर्ग वालों की सेवा पर बापदादा खुश है लेकिन अभी आप साक्षी दृष्टा बनते जाओ। आपका अभी काम है दूसरे ग्रुप को तैयार करना क्योंकि अचानक ऐसे सरकमस्टांश बनेंगे जो आप लोगों को बहुत तपस्या करनी पड़ेगी। मन्सा सेवा करनी पड़ेगी। समय नाजुक आ रहा है और बढ़ता रहेगा। अभी मन्सा सेवा इतनी फोर्स से नहीं हो रही है। हो रही है, कोई कोई का मन्सा सेवा का प्रभाव भी पड़ रहा है लेकिन बहुत कम। और लास्ट के समय मन्सा सेवा के सिवाए वाचा नहीं चलेगी। जिन्हों को निमित्त बनायेंगे उन्हों को भी अभी चांस है, जब नाज़ुक समय आयेगा तो उन्हों को भी चांस नहीं मिलेगा इसलिए अभी उन्हों को चांस दे दो, नजदीक आयेंगे, वारिस भी बन सकते हैं क्योंकि अभी हालातें आपके हर ग्रुप के कार्य को मदद कर रही हैं। अभी सभी समझते हैं कुछ होना चाहिए, होना चाहिए। बिचारों को पता तो है नहीं लेकिन चाहना है कुछ परिवर्तन होना चाहिए। आप तो जानते हो ना कि परिवर्तन होना है और क्या

होना है। वह चिंता में है, क्या होगा, क्या होगा! आप जानते हो कि हमारा राज्य आना ही है, खुशी है। अति में जा रहा है और अन्त होके आदि आनी है इसलिए आप सर्विस करने वालों को अभी जल्दी-जल्दी छांटों और उन्हों को आगे बढ़ाओ। अच्छा-अच्छा तो कहते हैं अभी उन्हों को अच्छा बनाने की सेवा दो। आप साक्षी दृष्टा बनके उनको शक्ति दो। अच्छा। स्पोर्ट भी आया है। यूथ विंग की रजत जयन्ती है। पोलीटिशयन ने यह प्लैन बनाया है, अच्छा है। यह जो भी नाम लिया है यह मुख्य विंग हैं। तो मुबारक तो बाबा सभी को दे रहा है, अभी मुबारक और देंगे जब ग्रुप तैयार करेंगे। यह नहीं कह रहे हैं कि आबू में ले आना। पहले वहाँ तैयार करो फिर बापदादा समाचार सुनेंगे, रिजल्ट देखेंगे फिर मधुबन में बुलायेंगे। तो सभी जो भी आये हो, उन्होंने आगे का प्लैन समझा। हाथ उठाओ। समझा क्या करना है? अभी जल्दी-जल्दी करो। अचानक कुछ भी हो सकता है जो आपको सेवा करने का भी टाइम नहीं मिलेगा। सरकमस्टांश ऐसे भी बीच-बीच में आ सकते हैं इसीलिए जैसे तीव्र पुरुषार्थी ग्रुप बनाया है ना, ऐसे यह तीव्र सर्विस का ग्रुप बनाके तैयार करो। अच्छा। बापदादा बहुत-बहुत मुबारक दे रहे हैं।

डबल विदेशी :- अभी डबल विदेशी नहीं कहो, डबल पुरुषार्थी। ठीक है ना। डबल पुरुषार्थी हैं ना। डबल पुरुषार्थी बच्चे अपनी सेवा का जो मधुबन में चांस लेते हैं भिन्न-भिन्न प्रकार से, यह बापदादा को बहुत अच्छा लगता है क्योंकि एक दो के संगठन का बल मिलता है, कहाँ क्या प्राब्लम होती है, कहाँ क्या प्राब्लम होती है, तो एक दो के अनुभव से और बड़ों के डायरेक्शन से, पालना से सहज हो जाता है। वायुमण्डल का भी बल मिलता है, जिम्मेवारी कम होती है, समय वहाँ कम मिलता है यहाँ समय फ्री मिलता है, एक ही काम के लिए। वहाँ भिन्न-भिन्न जिम्मेवारियां होती हैं और टाइम देना ही पड़ता है, यहाँ एक ही काम होता है, या सेवा या स्व कल्याण। और दिनप्रतिदिन बापदादा ने देखा कि सर्विस की रूपरेखा अच्छी बढ़ रही है। फारेन के यूथ की भी रिजल्ट सुनी। और हर एक जो सेवा में आगे बढ़ रहे हैं, तो बापदादा देख रहे हैं कि धीरे धीरे दो बातें नजदीक आ रही हैं - एक तो गवर्मेन्ट या विशेष लोग उनके नजदीक जाने का चांस अच्छा मिल रहा है और धीरे धीरे आपस में प्लैन बनाकर गवर्मेन्ट तक अपने अपने देश की गवर्मेन्ट तक पहुंचने का भी साधन बन जायेगा। तो अच्छा है। विदेश में भी नाम बाला होना है और देश में तो होना ही है। यूथ ग्रुप का भी बापदादा ने समाचार सुना, इन्डिया का भी और फारेन का भी, इन्डिया में भी अभी प्लैन बनाते हैं। लेकिन इससे पहले भारत में यह प्लैन बनायें जो गवर्मेन्ट तक आवाज जाये, शुरू शुरू में बापदादा ने देखा था कि यूथ ग्रुप को प्रेजीडेंट प्राइममिनिस्टर के पास ले गये थे, पहले ग्रुप गया था, अभी सब साधन आपके साथ हैं, अभी आपका टी.वी. में भी आ सकता है सिर्फ मिलाओ नहीं, लेकिन उन्हों को सुनाने का चांस लो। यूथ से मिले और शार्ट टाइम में सुनें कि क्या क्या करते हैं। तो हर वर्ग वालों को ऐसा ग्रुप बनाना चाहिए जो मिनिस्ट्री तक पहुंचे और जो मुख्य मिनिस्टर प्राइममिनिस्टर हैं उन तक आवाज पहुंचे। बाकी अच्छा है, बापदादा ने देखा कि फारेन में भी वृद्धि हो रही है, होती रहेगी। सेन्टर भी जो रहे हुए हैं उसका प्लैन बनाते रहते हैं और स्व पुरुषार्थ का अटेन्शन है और अण्डरलाइन कर स्व पुरुषार्थ में भी नवींनता लाते रहना। ठीक है। अच्छा।

आप सबको भी अच्छा लगता है ना, फारेनर्स हर ग्रुप में आते हैं, अच्छा लगता है ना क्योंकि हमारे परिवार में यह भी नवीनता है। फारेन के भी वैरायटी सब आते हैं। ऐसा परिवार तो किसका भी नहीं होगा जो एक ही स्थान पर कोई भी विशेष देश रह नहीं जाए। अभी देखो मुस्लिम देश भी आगे आगे आ रहे हैं। अरेबियन भी आ रहे हैं। तो वैरायटी परिवार एक भी वंचित न रह जाए, यही लक्ष्य है कि सभी बच्चों तक पहुंचकर बाप का सन्देश दे वारिस निकालें, परिवार के बिछुड़े हुए परिवार में मिलायें, यह देख बापदादा खुश है और खुशी बढ़ाते चलो। अभी तो आपके पास निमन्त्रण पीछे निमन्त्रण आने वाले हैं, क्यों? अन्त में यही रहना है, यही है, यही है, यही है। अभी सभी किनारे छूटकर सभी को बाप के संबंध में या सन्देश सुनने में चांस मिलना ही है। नहीं तो उल्हना आपको सबका बहुत मिलेगा। मन्सा से भी आत्माओं को आकर्षित कर आगे बढ़ा सकते हो। सम्बन्ध, सम्पर्क में ला सकते हो। मन्सा की सेवा अभी कम है। लेकिन अभी से शुरू करेंगे तो अन्त में कोई रह नहीं जायेगा। कभी भी अगर फुर्सत मिलती हो तो फरिश्ता रूप

में जैसे ब्रह्मा बाप ने आप सभी को मन्सा सेवा द्वारा आकर्षित किया, घर बैठे हिम्मत दी और चल पड़े, ऐसे आप भी फरिश्ते रूप से मन्सा सेवा कर सकते हो, फरिश्ता बनके, यह अनुभव भी बढ़ाते चलो क्योंकि दु:ख की लहर, जैसे सागर अचानक लहरों में बढ़ता जाता है, तेज लहरें बीच-बीच में आ जाती हैं ना। ऐसे अभी जितना समय बढ़ता जायेगा तो बीच बीच में भी ऐसी लहर दु:ख की अशान्ति की बीच बीच में बढ़ती रहेगी। कोई कारण ऐसे बनेंगे जो दु:ख की लहर बढ़ेगी इसलिए औरों को तैयार करो वाचा के लिए। लेकिन फाउण्डेशन पक्का हो। अपना प्रभाव डालने वाले नहीं हो। रीयल ज्ञान का प्रभाव डालने वाले हो। कभी कभी ब्राह्मण बच्चे भी अपना प्रभाव डालने लगते हैं, कोई भी सेवा में बाप की तरफ आकर्षित करो, पर्सनल नहीं। अगर पर्सनल अपने पर प्रभावित करते तो उसका पुण्य नहीं बनता। अच्छा।

चारों ओर के पुरुषार्थ में आगे बढ़ने वाले, जैसे अभी 15 दिन का काम बापदादा ने दिया था, उसकी रिजल्ट जो समझते हैं, जैसे बापदादा ने कार्य दिया, उसी प्रमाण मन्सा, वाचा, कर्मणा, समय, संकल्प यथार्थ रहा, वह हाथ उठाओ। अच्छा। बहुत थोड़ों ने उठाया है। जिन्होंने 15 दिन का काम अच्छी रिजल्ट में किया, वह हाथ उठाओ। थोड़ों ने किया है बाकी औरों की भी रिजल्ट आई है, जो यहाँ नहीं हैं उन्हों की भी रिजल्ट आई है। बहुत करके वेस्ट थॉट्स की रिजल्ट सभी ने अटेन्शन अच्छा दिया है। लेकिन सारा ब्राह्मण परिवार एक जैसा पुरुषार्थ में चले, वह रिजल्ट संगठन की अभी लानी है। मैजारिटी रिजल्ट में सभी बातों की एक जैसी अच्छी रिजल्ट हो, वह कम है। किसकी किसमें है, किसकी किसमें है। अभी इस ड्रिल से सभी को सदा के लिए अपने पुरुषार्थ की गति तीव्र करनी है क्योंकि बहुतकाल चाहिए। मानो पीछे कर भी लेंगे लेकिन बहुतकाल का भी सम्बन्ध है इसलिए सभी अटेन्शन दें मुझे करना है, कोई करे नहीं करे, लेकिन मुझे एवररेडी बनना ही है। अच्छा -

चारों ओर के बाप के स्नेही, जो स्नेही होते हैं वह सहयोगी जरूर होते हैं, स्नेह का रिटर्न प्रत्यक्ष रूप वह हर कार्य में तन-मन-धन-जन में एक दो के सहयोगी जरूर होंगे। तो ऐसे स्नेही और सहयोगी बच्चे, जो सदा बाप के प्यार में लवलीन रहने वाले हैं, लव में नहीं, लेकिन लवलीन रहने वाले और सदा बाप के सर्व कार्य में समय संकल्प लगाने वाले, क्योंकि संगमयुग में समय और संकल्प की बहुत वैल्यु है, एक जन्म में अनेक जन्मों की प्रालब्ध बनाने वाले, ऐसे तीव्र पुरुषार्थी हर गुण, हर शक्ति को, हर समय अनुसार कार्य में लगाने वाले ऐसे गुण सम्पन्न, शक्ति सम्पन्न बच्चों को बहुत-बहुत पदम पदम गुणा यादप्यार और नमस्ते।

निर्मला दीदी से:- अच्छा चक्र लगाकर आई। (आस्ट्रेलिया गई थी) अच्छा दोनों तरफ पार्ट बजा रही हो, बहुत अच्छा। रिजल्ट भी अच्छी है। (दादी जानकी से): यह भी चक्र लगाकर आई। बहुत अच्छा खेल किया, खेल ही है। (सोलार सिस्टम जो हमारे पास लगा है वह सब पेपर्स में आया है) बापदादा ने कहा था कि यह जो सोलार का कर रहे हैं तो ऐसा टाइम आयेगा जो और तरफ अंधियारा होगा और एक ही आपके स्थान में रोशनी होगी। यह भी सब खेल देखेंगे। (यूथ अभी गवर्मेन्ट तक जायेंगे, ऐसा प्रोग्राम बनाया है) गवर्मेन्ट समझे कि यह यूथ अच्छे हैं। यह भी हो जायेगा।

बृजमोहन भाई से:- सेवा कर रहे हैं, सेवा करते रहेंगे। जो इशारे मिलते रहते हैं उसको प्रैक्टिकल ला रहे हो, इसकी मुबारक हो। (रमेश भाई, उषा बहन से) दोनों ही ठीक हैं ना। जो निमित्त आत्मायें हैं उनको देख करके सभी को उमंग आता है, यह जैसे करते हैं हम भी करें तो आप निमित्त हैं औरों को भी उमंग-उत्साह दिलाने के। बहुत अच्छा किया।

परदादी से: - बहुत अच्छा पार्ट बजा रही हो, विष्णु के समान लेटे लेटे पार्ट बजा रही हो। आपको देखके सबको उमंग आता है कि ऐसे पार्ट बजा सकते हैं। बहुत अच्छा।

''नये वर्ष में सभी आत्माओं को सन्देश देकर गोल्डन वर्ल्ड की गिफ्ट दो, बाप समान बनने के लिए देही-अभिमानी रहने की नेचर नेचुरल बनाओ''

आज बापदादा हर एक बच्चे को स्नेह और बापदादा के लव में लवलीन स्वरूप में देख रहे हैं। एक एक बच्चा परमात्म प्यार में चमक रहा है। सभी बच्चे प्यार के विमान में पहुंच गये हैं। वैसे तो न्यु ईयर मनाने के लिए आये है लेकिन सभी के नयनों में क्या दिखाई दे रहा है? न्यु ईयर, नया साल तो निमित्त मात्र है लेकिन आप सभी के नयनों में क्या उमंग है? तीन बधाईयां दे रहे हो। एक अपने नये जीवन की बधाई और दूसरी नये युग की बधाई और तीसरी परिवार और बाप से मिलन की बधाई। आपके नयनों में क्या घूम रहा है? अपना नव युग सामने आ रहा है ना! दिल में उमंग आ रहा है कि नया युग आया कि आया। नये युग की चमकीली ड्रेस इतना सामने स्पष्ट है कि आज संगमयुग पर हैं और जल्दी से यह चमकीली ड्रेस पहननी है। सामने देख देख खुश हो रहे हैं। विदाई भी दे रहे हैं और बधाई भी ले रहे हैं। जैसे पुराने साल को विदाई देते हैं फिर वह साल भूल जाता है, नया साल ही सामने आता है। ऐसे ही आपके सामने पुरानी दुनिया को बधाई नहीं, लेकिन नई दुनिया को बधाई दे रहे हैं। पुरानी दुनिया को विदाई दे रहे हैं। तो आज सभी को उमंग-उत्साह है नये युग का, लोग भी नये वर्ष की बधाई देते हैं और साथ-साथ गिफ्ट भी देते हैं। तो बापदादा भी आप बच्चों को पुराने स्वभाव संस्कार को विदाई देकरके नई दुनिया में जाने की गिफ्ट दे रहे हैं, जिस नई दुनिया में प्राप्ति ही प्राप्ति है। शॉर्ट में यही कहे तो अप्राप्त नहीं कोई वस्तु नई दुनिया में। ऐसे गोल्डन वर्ल्ड की गिफ्ट बापदादा ने आप हर एक बच्चे को सौगात दे दी है। आपको भी नशा है ना कि हम गोल्डन वर्ल्ड के अधिकारी बन रहे हैं। ऐसी गिफ्ट और कोई दे नहीं सकते हैं। बाप ने हर एक बच्चे को यह डायरेक्शन दिया है कि सभी आत्माओं को यह बाप का वर्सा गोल्डन वर्ल्ड का सन्देश देकरके उनको भी आप गिफ्ट दो। आपके पास कौन सी गिफ्ट है? एक तो नई दुनिया की गिफ्ट दो और दूसरा आपके पास बहुत खजाने हैं। गुणों का खजाना, शक्तियों का खजाना, स्वमान के खजाने, कितने खजाने हैं। तो सभी को कोई न कोई गुण, कोई न कोई शक्ति की गिफ्ट दो जिस गिफ्ट से उन्हों की जीवन बदल जाए और गोल्डन दुनिया के अधिकारी बन जाये क्योंकि आजकल देख रहे हो चारों ओर दु:ख अशान्ति बढ़ रहा है। चारों ओर भय और चिंता हर एक में है। ऐसे दु:खी अशान्त आत्माओं को कम से कम यह सन्देश जरूर दो कि अब बाप आये हैं अब से अविनाशी वर्से के अधिकारी बन जाओ। यह सन्देश हर आत्मा को दे भी रहे हो लेकिन अभी भी कई बाप के बच्चे सन्देश से भी वंचित रहे हुए हैं। फिर भी एक बाप के बच्चे हैं ना तो अपने भाई बहिनों को यह सन्देश की गिफ्ट जरूर दो। कोई भी रह नहीं जाए। कर रहे हैं सेवा, बापदादा बच्चों की सेवा देख खुश है लेकिन बाप की यही आशा है कि मेरा कोई भी बच्चा सन्देश से रह नहीं जाये। उल्हना नहीं दे कि आपको गोल्डन वर्ल्ड की सौगात मिली और हमको पता नहीं पड़ा। हमारा बाप आया लेकिन हमें सन्देश नहीं मिला इसलिए इस नये साल में यही प्रयत्न करो, आपस में प्लैन बनाओ कि कोई भी कोना रह नहीं जाये। उल्हना नहीं मिले लेकिन खुश हो जाये, मालूम तो पड़े कि हमारा बाप आ गया। वंचित नहीं रह जाएं। तो इस नये साल में क्या करेंगे? आपस में मिलके प्लैन बनाओ, बापदादा को हर एक बच्चे के ऊपर रहम आता है। तो आपको भी भाई-बहिनों के ऊपर अभी विशेष रहमदिल, कल्याणकारी स्वरूप धारण कर सबको सन्देश देना है। कम से कम ऐसा तो उल्हना नहीं देवे।

तो आज सभी बच्चे नये वर्ष मनाने के उमंग उत्साह से पहुंच गये हैं। बापदादा एक-एक बच्चे को देख क्या गीत गाते? जानते हो ना! वाह बच्चे वाह! जो पहले बारी भी आये हैं उन्हों को भी बापदादा कह रहे हैं कि लक्की हो जो समय समाप्त के पहले बाप के बन गये। नये बच्चों को बापदादा पदम पदमगुणा लक्की बनने की मुबारक दे रहे हैं। आजकल बापदादा एक बात सभी बच्चों में देखने चाहते हैं जानते हो कौन सी? जैसे हर एक के दिल में उमंग है, लक्ष्य है कि हम बाप समान बनने वाले ही हैं, बनेंगे नहीं, बनने वाले ही हैं तो जैसे लक्ष्य है, ऐसे अभी बापदादा लक्ष्य के साथ लक्षण भी देखने चाहते

हैं। जैसे समान बनने का लक्ष्य है ऐसे ही समान बनने के लक्षण भी हों। अभी लक्ष्य बहुत ऊंचा है लेकिन लक्षण पर विशेष अटेन्शन देना है। समान, जितना बड़ा लक्ष्य उतना ही बड़ा लक्षण हो। अभी कोई-कोई बच्चे लक्षण धारण करना चाहते हैं लेकिन बीच-बीच में फिर भी कह देते हैं, चाहते बहुत हैं लेकिन.... तो यह लेकिन निकल जाए। आपकी चलन और चेहरा दूर से ही जितना बड़ा लक्ष्य है, इतना लक्षण चेहरे से दिखाई दे, चलन से दिखाई दे। जैसे आप पहले देह-अभिमान में थे लेकिन जब देह-अभिमान में थे तो देह-अभिमान की नेचर नेचुरल थी, कभी पुरुषार्थ किया क्या कि देह अभिमान आवे, नेचर नेचुरल देह-अभिमान रहा। आधाकल्प पुरुषार्थ नहीं किया, ऐसे ही अब भी देही-अभिमानी बनने की नेचर नेचुरल है! जब देह-अभिमान की नेचर नेचुरल रही, कभी याद आता है कि देह-अभिमान में आ जाऊं, यह पुरुषार्थ किया? अभी भी देह-अभिमान और देही-अभिमान, तो देही-अभिमानी बनने में भी मेहनत क्यों! क्योंकि बापदादा के पास समाचार आते हैं कि कभी-कभी देह-अभिमान को मिटाने की मेहनत करनी पड़ती है। जब देह-अभिमान नेचुरल रहा तो देही-अभिमान में मेहनत क्यों? तो बापदादा को मेहनत बच्चों की अच्छी नहीं लगती। मेहनत मुक्त बन जाएं और नेचुरल नेचर बन जाए, इसको कहा जाता है लक्ष्य और लक्षण समान। फिर आप देखो बाप समान बनना बहुत सहज और नेचुरल लगेगा। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा इतने बड़े परिवार की जिम्मेवारी होते भी नेचुरल नेचर देही अभिमानी की रही। चाहे बच्चों के ऊपर भी जिम्मेवारी है लेकिन ब्रह्मा बाप के आगे वह जिम्मेवारी क्या लगती है! कोई भी जिम्मेवारी है, मानो ज़ोन की जिम्मेवारी है, या कोई आफीशियल यज्ञ कारोबार की जिम्मेवारी है लेकिन वह जिम्मेवारी ब्रह्मा बाबा के आगे क्या है! ब्रह्मा बाप ने शिवबाबा की मदद से प्रैक्टिकल में दिखाया कि करावनहार करा रहे हैं, हम करनहार बन बाप समान न्यारे और प्यारे हैं। तो बाप समान बनने चाहते तो यह चेक करो कुछ भी चाहे मन्सा, चाहे वाचा चाहे कर्मणा ड्युटीज़ हैं लेकिन मैं करनहार हूँ, ट्रस्टी हूँ, करावनहार मालिक शिवबाबा है, यह करावनहार का पाठ चलते-चलते भूल जाता है। तो लक्ष्य और लक्षण दोनों को समान बनाना है। अब पुराने साल को विदाई देने के साथ इस लक्ष्य को लक्षण में लाना है। नया साल तो नई बातें। क्या करूं, माया आ जाती है, चाहते नहीं हैं लेकिन आ जाती है यह शब्द वा संकल्प पुराने वर्ष के साथ इसको भी विदाई दो। सिर्फ साल को विदाई नहीं देना। बापदादा ने सुनाया था कि माया भी बापदादा के पास आती है और क्या कहती है? मैं तो समझती हूँ, मेरे जाने का समय है लेकिन कोई-कोई बच्चे आह्वान करते हैं मेरा तो मैं क्या करूं। तो आज विदाई के साथ माया के भिन्न-भिन्न रूप को भी विदाई देनी है। है हिम्मत? हिम्मत है? हाथ उठाओ। विदाई देने की हिम्मत है? पीछे वालों को हिम्मत है? जिसमें हिम्मत हो, वह हाथ उठाओ। तो बाप इस हिम्मत की बहुत पदम-पदम गुणा बधाई देते हैं। क्यों? क्यों बापदादा इस पर जोर दे रहे हैं? क्योंकि आप सभी देख रहे हो दुनिया की हालतें बिगड़ने में शुरू जोर से हो रही हैं और बापदादा का यह महावाक्य कुछ समय से चल रहा है कि अचानक होना है। तो अचानक होना है और अगर बहुत समय का अभ्यास नहीं होगा तो बताओ अचानक के समय अभ्यास की आवश्यकता है ना! अभी-अभी देखो बापदादा ने होम वर्क दिया, 10 मिनट, टोटल 24 बारी 10-10 मिनट का होमवर्क दिया, तो कई बच्चों को मुश्किल हो रहा है। तो सोचो, अगर 10 मिनट का अभ्यास का नहीं हो सकता तो अचानक में उस समय क्या करेंगे? बापदादा जानते हैं कि 24 बारी में कईयों को समय थोड़ा कम मिलता है, लेकिन बापदादा ने ट्रायल की कि 10 मिनट एक ही स्मृति में जब चाहे, जैसे चाहे वैसे कर सकते हैं, बापदादा यह नहीं कहते अभी भी 10 मिनट करो, अच्छा नहीं हो सकता, जिसको हो सकता है वह करे, अगर नहीं हो सकता है तो 5 मिनट करो, 5 मिनट से 7 मिनट, 6 मिनट, जितना भी बढ़ा सको उतनी ट्रायल करो। बापदादा खुद ही कह रहा है इसमें ऐसी बात नहीं है। अगर 10 मिनट ज्यादा टाइम लगता है तो चलो 8 मिनट करो, 9 मिनट करो, जितना ज्यादा कर सको उतनी आदत डालो क्योंकि बहुतकाल का वरदान प्रैक्टिकल में अभी कर सकते हैं। अगर अभी बहुतकाल का अभ्यास नहीं होगा तो अभी के बहुतकाल का पुरुषार्थ की जो प्राप्ति है, आधाकल्प की उस बहुतकाल में फर्क पड़ जायेगा। अगर अभी कम समय देंगे, जितना हो सकता है उतना बापदादा ने छुट्टी दे दी है, अगर 5 मिनट से ज्यादा करो, 10 मिनट नहीं हो सकता है तो 7 मिनट करो, 8 मिनट करो, 5 मिनट की भी छुट्टी है। लेकिन अगर कोई भी समय 10 मिनट हो तो अच्छा

है। ऐसा समय आयेगा जो आप लोगों को खुद अपने लिए और विश्व के लिए भी किरणें देनी पड़ेगी। इसीलिए बापदादा छुट्टी देते हैं, जितना ज्यादा समय कर सको, उतना प्रैक्टिस करो क्योंकि अभी का बहुत समय भविष्य का आधार है। ठीक है? मुश्किल लगता है, कोई बात नहीं है, अभी तो कोई हर्जा नहीं है और बाप को सुनाया यह बहुत अच्छा किया क्योंकि मानो 10 मिनट बैठ नहीं सको, सोच में ही चला जाए, तो 5 मिनट भी गये, इसीलिए बापदादा कहे कम से कम 5 मिनट से कम नहीं करना। जितना बढ़ा सको उतना बढ़ाओ। ठीक है स्पष्ट हुआ? क्योंकि बापदादा हर एक को बहुत श्रेष्ठ स्वरूप में देखते हैं। बापदादा ने इसकी निशानी हर एक बच्चे को कितने स्वमान दिये हैं। स्वमान की लिस्ट अगर निकालो तो कितनी बड़ी है?

आज बापदादा अमृतवेले चक्कर लगाने गये। क्या देखने गये? कि बापदादा ने स्वमानों की बहुत बड़ी माला दी है। अगर एक-एक स्वमान में स्थित होके उस स्थिति में बैठो, चलो तो स्वमान कहते जाओ और माला घुमाते जाओ तो बहुत मजा आयेगा। स्वमान की लिस्ट रखी है लेकिन एक-एक स्वमान कितना बड़ा है और किसने दिया है! वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी ने एक-एक बच्चे को अनेक स्वमानों की लिस्ट दी है। उसको यूज़ करो क्योंकि और कोई अथॉरिटी नहीं जो इस स्वमान को आपके कम कर सके। और किसी को भी इतने स्वमानों की माला नहीं मिली है। तो बापदादा ने देखा सतयुग में तो राज्य भाग्य मिलेगा लेकिन यह स्वमानों की माला संगमयुग की देन है। बापदादा जब भी बच्चों को देखते हैं तो हर एक बच्चे के स्वमान की स्थिति से देखता है - वाह बच्चा वाह! तो स्वमान की अथॉरिटी में रहो, मैं कौन! कभी कौन सा स्वमान सामने रखो, कभी कौन सा स्वमान सामने रखो और चेक करो तो आज अमृतवेले जो विशेष स्वमान बुद्धि में रखा वह स्वमान खजाना है ना, इसको यूज़ किया! क्योंकि खजाना बढ़ने का साधन है जितना खजाने को कार्य में लगायेंगे उतना खजाना बढ़ता है। तो आज बापदादा देख रहे थे कौन-कौन बच्चा है, किसके पास स्वमान के स्मृति की माला बड़ी थी किसके पास छोटी। जहाँ स्वमान होगा वहाँ देहभान खत्म हो जाता है। तो आज बापदादा ने चक्र लगाया और देखा जैसे स्वमान का खजाना है, ऐसे एक-एक शक्ति, एक-एक गुण इस्तेमाल करो उसको, कार्य में लगाओ। तो यह जो प्राबलम होती है माया आ गई, माया आ नहीं जाती लेकिन माया के लिए तो बाबा ने सुना दिया है कि माया कहती है मेरे को आवाह्न करते हैं तब जाती हूँ, ऐसे नहीं जाती हूँ, कोई भी हल्का संकल्प करना माना माया को आवाह्न किया, शक्तियों को छोड़ता है तो माया को आवाह्न किया। चाहते नहीं है लेकिन आ जाती है। बलवान कौन? चाहते नहीं हैं लेकिन आ जाती, तो माया बलवान हुई या आप? तो आज पुराना वर्ष समाप्त हो रहा है, नये वर्ष में नया उमंग, नया उत्साह, क्योंकि संगमयुग का गायन है, एक-एक दिन उत्साह भरा हुआ है अर्थात् उत्सव है। तो उमंग-उत्साह है तो हर दिन उत्सव है इसलिए पक्का रखना, रोज़ अपना चलते फिरते भी चार्ट देखना। चेक करना, चेक करेंगे तो चेंज करेंगे ना। चेक ही नहीं करेंगे तो चेंज कैसे करेंगे!

तो आज नये साल के लिए बापदादा का विशेष यही संकल्प है कि हर बच्चा जैसे पुराने वर्ष को विदाई देते हो वैसे माया को विदाई दो। व्यर्थ संकल्प को विदाई दो क्योंकि मैजारिटी यही देखा गया है कि व्यर्थ संकल्प ज्यादा आते हैं। ज्यादा विकारी संकल्प कम हैं, हैं कम लेकिन व्यर्थ जो हैं, उसका नाम निशान समाप्त हो जाए, हर संकल्प समर्थ हो, व्यर्थ नहीं हो क्योंकि व्यर्थ संकल्प में, सिर्फ संकल्प नहीं चलता लेकिन व्यर्थ टाइम भी जाता और बाप समान बनने में दूरी हो जाती है। आपकी चाहना तो है समान बनें, तो हाथ तो उठाया है। लेकिन बापदादा सदा कहता है कि मन का हाथ उठाना, यह हाथ उठाना तो इजी है। तो विदाई देने की हिम्मत है? है हिम्मत? हाथ उठाओ। अच्छा, हिम्मत वाले हैं। बस हिम्मत को कायम रखना। अगर हिम्मत होगी तो जो लक्ष्य रखा है वह हो ही जायेगा क्योंकि बापदादा भी साथ है। बापदादा चाहते हैं कि मेरा कोई भी बच्चा पीछे नहीं रह जाए। हाथ में हाथ देके चले। शिव बाप निराकार है, हाथ नहीं है लेकिन श्रीमत ही उनके हाथ हैं। श्रीमत पर कदम-कदम चलना अर्थात् हाथ में हाथ देके चलना। तो सभी को नये वर्ष की नव जीवन की और नव युग की तीनों की पदम पदमगुणा मुबारक हो।

अच्छा जो इस बारी नये आये हैं वह उठ खड़े हो जाओ। अच्छा। बहुत आये हैं। आधा संगठन तो नया है। तो आपको

सभी नये आने वालों को, सारे ब्राह्मण परिवार, बापदादा सबके तरफ से मधुबन आने का मुबारक है, मुबारक है, मुबारक है। मुबारक के साथ एक बात याद रखना तो अभी कामन पुरुषार्थ का समय गया, अभी समय है तीव्र पुरुषार्थ का, तो आप सभी लेट आये हो लेकिन बापदादा के प्यारे हो। टू लेट के बजाए लेट आये हो, बापदादा खुश है कि फिर भी लक के समय पहुंच गये हो इसलिए जो भी आये हो, बापदादा के प्यारे हो इसलिए चलना नहीं उड़ना। अभी चलेंगे ना तो नम्बर आगे नहीं ले सकेंगे इसीलिए उड़ती कला में चलना। चलना नहीं उड़ना। तो उड़ना तो फास्ट होता है ना। तो उड़ती कला से आगे जा सकते हो। यह मार्जिन है। इसी को ही तीव्र पुरुषार्थ कहते हैं। तो क्या करेंगे? उड़ेंगे। उड़ेंगे? अच्छा। जो भी बातें ऐसी आवे जो बेकार हैं, आनी नहीं चाहिए लेकिन आ जाती हैं क्योंकि पेपर तो होना है ना! तो क्या करेंगे? अगर ऐसी कोई बात आवे तो बापदादा को दे देना। देना आता है ना! लेना तो आता है लेकिन देना भी आता है ना। छोटे बन जाना। जैसे छोटे बच्चे होते हैं ना वह क्या करते हैं कोई भी चीज़ पसन्द नहीं आती है तो क्या करते हैं? मम्मी यह आप सम्भालो। ऐसे ही छोटे बनके बाप को दे दो। फिर अगर आवे, आयेगी, बापदादा ने देखा है कि बहुत समय रखी है ना, तो छोड़ने से फिर आती भी है लेकिन अगर आवे भी तो यही सोचना कि दी हुई चीज़ यूज़ की जाती है क्या! देना अर्थात् आपके पास आई, तो अमानत आई। आपने तो दे दी ना! तो आपकी रही नहीं। अमानत में ख्यानत नहीं करना चाहिए। आपको मदद मिलेगी तो यह मेरी नहीं है, यह अमानत है। मैंने दे दी इसमें फायदा हो जायेगा। क्योंकि समय कम है और पुरुषार्थ आपको तीव्र करना है। तो जो भी नये आये हैं बापदादा उन्हों को लक्की और लवली कहते हैं, जो आ तो गये अभी मेरा बाबा कहा है ना। हाथ उठाओ जो कहते हैं मेरा बाबा। जो भी आये हैं, मेरा बाबा कहते हैं। तो जब मेरा बाबा कहा तो और कोई मेरा है क्या! बाबा ही मेरा है ना। तो बाप पर अधिकार रख करके अमानत समझके बाप को दे दो। अपने पास आने नहीं देना। अच्छा है। फिर भी बाप को खुशी है, बाप को पहचान तो लिया। अभी सिर्फ यह ध्यान पक्का-पक्का रखना, उड़ना है, चलना नहीं है उड़ना है। अच्छा, बहुत हैं। अच्छा ब्राह्मणियाँ जो हैं क्लास टीचर्स, उन्हों को भी अपने नये भाई-बहिनों के ऊपर क्षमा करनी है। हर सप्ताह इन्हों का हालचाल पूछते रहना, कोई प्रॉबलम तो नहीं है! और कोई भी प्रॉबलम हो तो सुना देना, उसका निवारण ले लेना। छोड़ नहीं देना। आया और गया, दिल में रखना नहीं। अच्छा। सारे परिवार की भी मुबारक है।

सेवा का टर्न गुजरात ज़ोन का है:- (8 हजार गुजरात के है) बापदादा ने पहले भी कहा था गुजरात अर्थात् गुजर गई रात। तो गुजरात में सदा ही आगे से आगे बढ़ने और बढ़ाने का उमंग-उत्साह रहता भी है और रहना भी चाहिए क्योंकि गुजरात में भी, महाराष्ट्र में भी हैं लेकिन गुजरात में भी संख्या या सेन्टर कम नहीं हैं। तो गुजरात में सेवा तो चारों ओर है, गीता पाठशालायें भी बहुत हैं लेकिन अभी रहा हुआ काम क्या है? अभी गुजरात को हर एक सेन्टर, गीता पाठशाला की बात छोड़ो, अपने-अपने सेन्टर के वारिसों की लिस्ट निकालनी चाहिए। वारिस, स्टूडेन्ट नहीं वारिस उनकी लिस्ट गुजरात में सबसे बड़ी होनी चाहिए क्योंकि बापदादा समय की सूचना तो दे रहे हैं तो समय अनुसार अभी नये वर्ष में यह भी सेवा में अटेन्शन देना है। सभी ज़ोन वालों को भी कहते हैं कि यह ज़ोन में लिस्ट निकालो, कि सभी ज़ोन में से वारिसों की लिस्ट में नम्बरवन कौन है? क्योंकि अभी गोल्डन एज के लिए राजाई तैयार करनी है ना! तख्त पर तो लक्ष्मी नारायण ही बैठेंगे, एक ही बैठेंगे लेकिन जो वहाँ की राज्य अधिकारी सभा है, वह भी तो बनानी है ना। रॉयल प्रजा भी बनानी है, साधारण प्रजा भी बनानी है। तो ऐसे वारिस बनाओ जो सम्बन्ध-सम्पर्क में अभी भी नजदीक हों और वहाँ भी नजदीक हों। जो वारिस होगा उसकी निशानी क्या होगी? एक तो वारिस अर्थात् हर श्रीमत पर चलने वाले। बाप ने कहा और बच्चे ने किया। हर कार्य में चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, चाहे सम्बन्ध सम्पर्क में फैमिली लाइफ वाला हो, आने वाला स्टूडेन्ट नहीं फैमिली नेचर वाला हो। फैमिली का अर्थ होता है एक दो को जानना और एक दो को समझकर चलना, परिवार में भी ठीक हो और 4 निश्चय जो सुनाये थे, 4 ही निश्चय में जो वारिस होगा वह प्रैक्टिकल लाइफ में हो। सारे परिवार का प्यारा होगा, कोई का प्यारा कोई का नहीं, नहीं। सारे परिवार का प्यारा होगा। तो ऐसे वारिस क्वालिटी अभी वह चाहिए। प्रजा तो बनती जायेगी, साधारण प्रजा। लेकिन अभी नजदीक वाले वारिस क्वालिटी बनाओ। राजधानी तो

यहाँ ही तैयार करनी है ना। इसलिए इसमें कौन सा ज़ोन वारिस क्वालिटी में नम्बरवन है, यह इस वर्ष में देखना है और दूसरा काम दिया था वर्ग वालों को, एक वारिस बनाना और दूसरा जो सम्बन्ध सम्पर्क में हैं उन्हों को माइक बनाना। तो माइक और वारिस यह दोनों बनाना, अभी समय है। जैसा समय बीतता जायेगा तो उसमें बहुत समय का पुरुषार्थ कम हो जायेगा। इसलिए गुजरात कमाल करेगा ना! अच्छा है। गुजरात में टीचर्स भी बहुत हैं। टीचर्स हाथ उठाओ। देखो कितनी टीचर्स हैं तो एक-एक सेन्टर एक-एक वारिस तो निकालो और पुराने सेन्टर हैं। बापदादा के डायरेक्ट इशारे से गुजरात की सेवा आरम्भ हुई है तो बापदादा की दृष्टि से गुजरात हुआ है। वह भी तो काम करेगी ना। हैण्डस अच्छे हैं। कर सकते हैं। करने वाले हैं और कर भी सकते हैं। तो सेन्टर ने प्रोग्राम तो बहुत किये हैं और अच्छे करते हैं। प्रोग्राम अच्छे किये हैं अभी वारिस में नम्बरवन जाओ। ठीक है! करेंगे? टीचर्स हाथ उठाओ। तो इस वर्ष में, वर्ष के अन्दर जितनी टीचर हैं उतने वारिस मधुबन में लायेंगे। लायेंगे? हाँ आज तो गुजरात का टर्न है इसलिए उसको कह रहे हैं लेकिन बापदादा सभी ज़ोन को कह रहा है। नम्बरवन कौन जाता है उसको प्राइज देंगे। जो वन नम्बर जायेगा उसको अच्छी प्राइज देंगे। सभी ज़ोन वाली जो बैठी हैं ना वह हाथ उठाओ। और कौन है? भाई भी उठाओ। ठीक है। उठाया। अच्छा है। अभी देखेंगे पहला नम्बर कौन जाता है। क्वालिटी भी देखेंगे। वारिस तो बनाया लेकिन उसकी क्वालिटी क्या है! क्योंकि बापदादा अभी समय की सूचना बार-बार दे रहे हैं। फिर नहीं कहना हमने तो समझा अभी टाइम पड़ा है क्योंकि अपने को भी सम्पन्न बनाना है, सेवा में भी आगे जाना है दो काम हैं। एक पुरुषार्थ, पुरुषार्थ में एक याद और दूसरी सेवा दोनों में नम्बरवन हो। तीसरा स्वभाव संस्कार उसमें परिवर्तन। यह नहीं कोई कहे यह है तो अच्छा, है तो अच्छा.. नहीं कहे। है अच्छा। इसको कहा जाता है अच्छे ते अच्छा क्योंकि हालतें बदलती जायेंगी। आप चाहते हुए भी सेवा नहीं कर सकेंगे। बातें ऐसी होंगी जो व्यर्थ संकल्प चला देंगी। इसलिए तीव्र पुरुषार्थ, धरनी पर पांव नहीं हो, उड़ते रहो। फरिश्ते के पांव धरती पर नहीं दिखाते हैं। तो स्थूल पांव नहीं लेकिन यह स्थिति के पांव। तो गुजरात बापदादा के मधुबन के सहयोगी बहुत हैं। नजदीक हैं ना। तो कभी भी कोई भी बात हो तो पहले किसको बुलावा होता है? आते हैं ना फोन, गुजरात से इतने भेज दो। अच्छा है। नजदीक का फायदा है, प्राप्ति भी है। इसलिए गुजरात के जो रेग्युलर स्टूडेन्ट हैं उन सबको बापदादा की एक-एक श्रीमत पर चलने वाला सैम्पुल बनना है। कोई भी सेन्टर पर जाये तो ऐसे दिखाई दे कि यह सब बापदादा के नजदीक वाले रत्न हैं। ठीक है! स्टूडेन्ट समझते हैं हाथ उठाओ, ऐसा, कोई भी श्रीमत कम नहीं हो। ठीक है हिम्मत वाले हैं। अच्छी हिम्मत है।

ज्युरिस्ट, कलचरल और सिक्युरिटी विंग:- अच्छा है तीनों ही विंग अपना-अपना कार्य अच्छा बढ़ा रही हैं। बापदादा ने देखा है कि हर एक को उमंग रहता है कि हमको करना है लेकिन अभी जो बापदादा ने काम दिया है कि ऐसे माइक तैयार करो जो सभा में एक एक्जैम्पुल दिखाये, जो वायुमण्डल है तो ब्रह्माकुमार बनने से कारोबार नहीं कर सकेंगे, वह अनुभव सुनने से प्रैक्टिकल देखे कि यहाँ एक नहीं है, एक वर्ग के भी अनेक हैं। तो प्रैक्टिकल अनुभवी देखने से उमंग आता है और सहज भी लगता है कि हम भी ऐसे कर सकते हैं। तो विंग में रेग्युलर स्टूडेन्ट बनाने की सेवा बहुत अच्छी हो सकती है। जितनी भी आपने सेवा की है उससे रेग्युलर स्टूडेन्ट कितने बने हैं? जब से वर्गों की सेवा शुरू हुई है तब से लेके अब तक रिजल्ट निकालो कि हर एक वर्ग वालों के स्टूडेन्ट रेग्युलर कितने बने हैं! और कौन सी क्वालिटी वाले बने हैं? क्योंकि काफी समय वर्ग की सेवा चली है और करते सभी प्यार से हैं। क्योंकि चांस मिला है, अलग-अलग सेवा करने का। इसीलिए अभी यह रिजल्ट निकालो। कनेक्शन वाले कितने हैं? रेग्युलर कितने हैं? जो रेग्युलर होंगे उनका तो चार्ट अच्छा ही होगा। तो हर एक वर्ग वाले यह रिजल्ट निकाले, कभी कभी आने वाले तो होते हैं। कोई फंक्शन में आ गये, कोई प्रोग्राम में आ गये लेकिन बाप के बने कितने? क्योंकि यह कार्य चलता ही रहता है तो रिजल्ट भी तो निकलनी चाहिए। अच्छा है। यह तीनों ही विंग बापदादा ने देखा है कि उमंग उत्साह से आपस में मीटिंग भी करते हैं बीच-बीच में उत्साह दिलाने के पत्र व्यवहार भी करते हैं और रिजल्ट तो होगी ही क्योंकि हर वारी हर वर्ष बापदादा भी डायरेक्शन देते रहते हैं तो अच्छा है सेवा का चांस लेते हैं। सब सन्तुष्ट हैं? तीनों के हेड हाथ उठाओ। अच्छा।

तो आपके विंग में जो भी आते हैं, मीटिंग करते हैं, प्रोग्राम बनाते हैं, आपस में मिलते रहते हैं तो सभी उमंग उत्साह में हैं? जो प्लैन बनता है, मानो मीटिंग में प्रोग्राम बना लेकिन जो सभी ज़ोन हैं उसमें जो आपका प्लैन बना, वह आपके विंग का मेम्बर उसी अपनी एरिया में प्रैक्टिकल में लाते हैं, यह समाचार आप लेते रहते हो? क्योंकि विंग का बड़ा आफिस तो एक सेन्टर पर होता है लेकिन सेवा सारे जोन में होनी है, सिर्फ एक दो में नहीं, जो मेम्बर हैं वह अपने स्थान में तो कराते होंगे लेकिन जिस सेन्टर के मेम्बर नहीं हैं वहाँ भी आपने जो प्लैन बनाया वह चला क्योंकि वर्ल्ड की बात है ना यह। तो यह भी अटेन्शन रखो रिजल्ट मांगो, एक-एक सेन्टर ने प्रैक्टिकल में लाया और मुश्किल क्या है, नहीं लाया तो क्या मुश्किल है? उसको विंग वाले सैलवेशन दें। जैसे अभी प्रोग्राम किया, एक साथ किया तो उसका प्रभाव अलग होता है ऐसे एक ही प्रोग्राम विंग का सभी जगह चले तो वह नाम बाला हो जायेगा। ऐसे रिपोर्ट लो और सभी शहरों में हर एक विंग का काम चलना चाहिए। तभी तो नाम बाला होगा ना। बाकी बापदादा खुश है। मेहनत करते हैं, तीनों ही अपना-अपना नाम समझना। काम कर रहे हैं लेकिन फैलाओ। हर स्थान से ऐसा कोई नामीग्रामी निकले। उसको उमंग दिलाना पड़ेगा। ठीक है ना! अच्छा।

60 देशों से 650 डबल विदेशी भाई बहिनें आये हैं:- पहले फॉरेन का यूथ ग्रुप उठे। अच्छा है। फॉरेन में यूथ ग्रुप सेवा कर रहा है। यह बापदादा ने समाचार भी सुना है और बापदादा को अच्छा लगा है कि ऐसे विशेष यूथ फॉरेनर्स तैयार हो जो एक दिन दिल्ली में सारे यूथ नहीं लेकिन थोड़े-थोड़े फॉरेन के थोड़े यहाँ के ऐसे ग्रुप बनाके दिल्ली में प्राइम मिनिस्टर या जो बड़े मिनिस्टर हैं उनसे मिलने जावें, वह प्रैक्टिकल देखें तो फॉरेन वाले भी यूथ बदल रहे हैं। इन्डिया वाले भी बदल रहे हैं क्योंकि गवर्मेन्ट को अभी यूथ की प्रॉबलम ज्यादा है तो ऐसे समय पर अगर गवर्मेन्ट के पास प्रैक्टिकल देखे, एक्जैम्पुल देंखे तो वह समझेंगे और गवर्मेन्ट का जो विशेष वर्ग का मिनिस्टर है उस वर्ग वाले उनके पास खास जाके मिले तो वह समझे कि ऐसे दु:ख और अशान्ति के वायुमण्डल में, एक तरफ दु:ख अशान्ति दूसरे तरफ तमोगुणी वायब्रेशन, दोनों के बीच यह यूथ परिवर्तन कर चल रहा है तो उनका संस्था के तरफ अटेन्शन जायेगा। हर वर्ग अपने मुख्य जो मिनिस्टर हों, प्राइममिनिस्टर नहीं उसके वर्ग का मिनिस्टर, कम से कम उसके पास छोटा ग्रुप ही जाये जो समाचार सुनावे। सारे मिनिस्ट्री में यह पता पड़ जायेगा तो यह सब वर्गो की सेवा करते हैं। अच्छा है। बापदादा भी यूथ ग्रुप में परिवर्तन देख खुश होते हैं। लेकिन ऐसे यूथ जायें जो स्वयं अपने से सन्तुष्ट हों। प्रैक्टिकल लाइफ में हो। भले कोई सुनाये नहीं सुनाये लेकिन बाप का नियम है कि एक्जैम्पुल वह बनें जो पहले खुद में सन्तुष्ट हो। और यूथ प्रॉबलम अपनी हल करने के लिए जो भी निमित्त हैं उनकी मदद लें। कुछ भी हो अपनी कमजोरी मिटाना ही है। ऐसे यूथ वायब्रेशन फैला सकते हैं। आवाज फैला सकते हैं। जैसे जैसे आवाज फैलेगा वैसे वैसे इस कार्य का दुनिया में प्रभाव पड़ेगा। तो ग्रुप वाले जो ग्रुप निमित्त बने हैं उनको बहुत अपनी सम्भाल करनी है, पूरा एक्जैम्पुल बनना है। ठीक है ना। सब यूथ ठीक हैं। हाथ उठाओ। तो बापदादा आप सभी को देखके बहुत-बहुत खुश है। ऐसे एक्जैम्पुल बहुत कार्य करेंगे। अभी तो आप जायेंगे फिर आपको खुद निमन्त्रण देंगे। अच्छा है। बढ़ रहे हो और बढ़ते चलो, बापदादा की यही सारे यूथ, इन्डिया के यूथ या फॉरेन के यूथ दोनों में बहुत बहुत शुभ आशायें हैं। बधाई भी है और आशायें भी हैं। अच्छा।

डबल विदेशी छोटे बच्चे:- यह एक ही ग्रुप है बच्चों का। (बच्चों ने गीत गाया - छोटे-छोटे फूल हैं हम और किसी से नहीं हैं कम) सभी बच्चे फूल बनकर ही रहते हो ना। जो बाप की श्रीमत है उस पर चलते हो? जो चलता है वह हाथ उठाओ। अच्छा। अच्छा है लक्की बच्चे हो जो छोटेपन में ही बाप का मिलन हो गया। और सभी आपको देख खुश हो रहे हैं। ऐसा भी दिन आयेगा जो बड़े बड़े लोग, बड़ी बड़ी कम्पन्नी वाले आप बच्चों को बुलायेंगे, ऐसे तकदीरवान बच्चे कौन हैं जो ऐसे बने हैं इसीलिए हर बच्चा अपनी धारणायें पक्की रखना। कभी भी कोई धारणा भूलना नहीं क्योंकि आप बापदादा और लौकिक बाप तीन के बच्चे हो। तो कमाल दिखायेंगे ना। तो सभी बहुत अच्छी कमाल करके दिखाना। अच्छा।

सभी डबल विदेशी भाई बहिनों से:- अच्छा, सिन्धी ग्रुप भी आया है, बहुत अच्छा। प्यार है ना बाबा से। बाप

से प्यार है ना बहुत। बाप भी याद करते हैं क्यों? क्यों याद करते हैं? सिन्ध में ही बाप आया ना! तो जिस देश में आया वहाँ की सौगात तो होनी चाहिए ना। इसीलिए बाप कहते हैं कि सिन्धी ग्रुप ऐसा कोई कार्य करके दिखावे जो अनेक सिन्धी आत्माओं की सेवा के निमित्त बनें।

बापदादा को अच्छा लगता है कि हर सीजन में फॉरेनर्स मधुबन के श्रृंगार बनते हैं। अच्छा उमंग उत्साह है, 60 देशों से आये हैं तो इतनी सेवा है ना। और जो भी जिस देश में हैं वहाँ सेवा के बिना तो रह नहीं सकते। जो भी मिलता होगा उसको क्या सुनायेंगे? और बातों में तो जायेंगे नहीं तो इतने देशों में सेवा हो रही है ना। अभी तो औरों को सन्देश देने के लिए फॉरेनर्स के अच्छे-अच्छे ग्रुप बन गये हैं। भिन्न भिन्न कोर्स भी कराते हैं। तो बापदादा ने देखा जैसे भारत वाले सेवा फैला रहे हैं ऐसे फॉरेनर्स भी सेवा फैलाते रहेंगे तो सारे विश्व में बाप का सन्देश तो पहुंच जायेगा। फॉरेन वाले भी अपनी अपनी एरिया में कोशिश कर रहे हैं, किया भी है तो आस पास में कोई न कोई प्रोग्राम बनाके भी सन्देश दे दो। तो बापदादा को अच्छा लगता है जो सेवा में भिन्न- भिन्न प्रोग्राम करते रहते हैं, सन्देश देते रहते हैं वह हाथ उठाओ। सेवा करते रहते हैं, करते हैं ना! क्यों? बाप कहते हैं मेरा एक-एक बच्चा पैगाम देने वाला पैगम्बर है। पैगाम तो देते हो ना! तो हर बच्चा पैगम्बर है, पैगाम देने वाला है। किसी से भी मिलेंगे तो क्या बात करेंगे? कम से कम अनुभव तो जरूर सुनायेंगे ना। तो सन्देश तो दिया ना! तो बापदादा को भी अच्छा लगता है। और फॉरेनर्स को बापदादा खास क्यों याद करता है? करते तो सभी बच्चों को हैं लेकिन फॉरेनर्स को खास भी याद करता है क्यों याद करता? कि यही एक ब्रह्माकुमारियों की स्टेज है जहाँ एक ही स्टेज पर सब भिन्न-भिन्न धर्म वाले, भिन्न-भिन्न ड्रेस वाले, एक ही ड्रेस वाले बन स्टेज पर बैठते हैं। अभी आप किस ड्रेस में बैठते हैं? सफेद ड्रेस में बैठते हैं, तो धर्म मुस्लिम भी क्रिश्चियन भी, बौद्धी भी सब एक स्टेज पर बैठते हैं और एक परिवार के बन गये। यह विशेषता बहुत अच्छी है। सभी सेवा करते हो ना! अभी नया वर्ष आ रहा है ना तो नया वर्ष का फायदा उठाना, अपने अपने कनेक्शन वालों को यह बात सुनाना, गिफ्ट देना, कहना कि हमारी गिफ्ट न्यारी है। हर एक सम्बन्धी को, कनेक्शन वाले को मुबारक देने जाना और गिफ्ट देना कोई न कोई गुण या शक्ति की, कहना हम आपको सबसे न्यारी गिफ्ट देने आये हैं। इस गिफ्ट से आपका वर्तमान और भविष्य बहुत अच्छा बन जायेगा उनको ऐसी अच्छी अच्छी बातें सुनाना। क्योंकि नया वर्ष एक चांस है सेवा करने का। अच्छा बापदादा खुश है, फॉरेन सेवा पर खुश है। संगठन भी अच्छा करते हैं। अभी और आगे बढ़ते जाना। हर कार्य में आगे से आगे बढ़ते रहना। अच्छा। पीछे बैठने वाले उठो।

पीछे बैठने वालों को बापदादा वरदान देते हैं मधुबन में मेले में आये हो ना। तो मधुबन के मेले में जो भी आये हैं, पीछे बैठने को मिला है तो ऐसे नहीं समझना कि हम पीछे वाले हैं, जो पीछे बैठे हैं ना वह बाप के दिल में हैं। (आने वाले 22 हजार से ऊपर हैं, टोटल 25 हजार का ग्रुप है, बाहर सब जगह बैठे हैं) भले आये, मौसम को नहीं देखा, जगह को नहीं देखा, सर्दी को नहीं देखा, टेन्ट में भी सोये हैं। जो टेन्ट में सोये हैं ना, बापदादा सभी टेन्ट में खास चक्र लगाने आया था। पीछे बैठे हुए को बापदादा अपने दिल में समाते हैं। इसलिए बापदादा का जो भी जहाँ बैठे हैं वहाँ उन्हों को बापदादा सामने नयनों में समाकर यादप्यार भी दे रहे हैं, मुबारक भी दे रहे हैं। अभी तो दिनप्रतिदिन अपना ब्राह्मण परिवार बढ़ना ही है। तो बापदादा भी परिवार को देख खुश होते हैं, वाह ईश्वरीय परमात्म परिवार वाह! अच्छा।

आज 12 बजे तक बैठना है। साथ बैठने का चांस है।

अभी चारों ओर के देश विदेश के हर एक बाप के प्यारे, बाप के लाडले, बाप के सिकीलधे बच्चों को विदाई और बधाई। और बापदादा ने सुनाया कि पुराने वर्ष के साथ पुराने संस्कार को भी विदाई देने वाले, स्वभाव को भी विदाई देने वाले महावीर बच्चे, हर कदम में पदमों की कमाई करने वाले बापदादा जो सदा स्वमान देते हैं, उस स्वमान की स्थिति में रह अनुभव करने वाले, हर एक बच्चे को बापदादा ऐसे रूप में देखते कि यह एक एक बच्चा 21 जन्म के वर्से के अधिकारी, सारे कल्प में 21 जन्म के अधिकारी बनने का वर्सा आप बच्चों को ही मिलता है। तो ऐसे श्रेष्ठ अधिकारी चारों ओर के बच्चों को बापदादा, बाप शिक्षक और गुरू के रूप से तीनों ही रूपों से यादप्यार और नमस्ते दे रहा है।

दादी रूकमणी से:- अच्छा है शरीर को चलाना आता है। मन की जवानी है, मन जवान है। अच्छा है। लेकिन सेवा की साथी तो बनकर रही है ना। अच्छा।

परदादी से:- अच्छा है इसको भी चलना अच्छा आता है। चलाने वाले भी अच्छे हैं चलना भी अच्छा आता है।

तीनों भाईयों से:- नये वर्ष में कुछ नया करके दिखायेंगे ना। (नये वर्ष में क्या नवीनता करना है?) एक तो परिवार को अपनी स्थिति में पावरफुल बनाने के प्लैन और दूसरा सेवा में नये नये प्रकार के, जैसे फंक्शन किया, यह भी एक तरीका हुआ लेकिन अभी दूसरे प्रकार से कोई ग्रुप-ग्रुप को उन्हों का बड़ा संगठन करके जैसे वकील है, जज है, उनके ग्रुप को अलग सारे ज़ोन को इकट्ठा करे एक बड़े स्थान पर और हों अलग-अलग वर्ग के लेकिन ज़ोन वाइज़ हर वर्ग के इकट्ठे हो। ऐसा बड़ा संगठन, भले टेंट लगाओ बड़े स्थान पर लेकिन ऐसा-ऐसा एक एक ग्रुप की रिजल्ट निकालो और उनका कनेक्शन जोड़ो कि इसके बाद आपको क्या करना है। भाषण सुनकर चले जावें नहीं, लेकिन भाषण के बाद आप जितने भी चाहें यह यह कर सकते हो और उनका प्रोग्राम बनाओ कि कनेक्शन में रहें, फोन द्वारा कनेक्शन रखें, लिखापढ़ी द्वारा रखें, कनेक्शन उसका बढ़ता जाए। एक एक प्रोग्राम बड़े-बड़े स्थान पर हो। कहाँ वकीलों का रखो, कहाँ नेताओं का रखो। ऐसे बड़े-बड़े स्थान पर ग्रुप को नजदीक लाओ, मिक्स ग्रुप भी हो। दोनों प्रकार का कर सकते हो, एक वर्ग का ग्रुप होता है तो सबका अटेन्शन जाता है। मिक्स करने से अटेन्शन कम जाता है। दोनों करके देखो। एक जगह वह करो, एक जगह वह करो दोनों की रिजल्ट देखो फिर आगे का प्रोग्राम बनाओ।

ओमेक्स कम्पन्नी के चेयरमैन भ्राता रोहतास गोयल तथा उनके परिवार से:-

जैसे बिल्डिग का काम सफल हो रहा है ना, ऐसे यह सेवा का काम भी सफल करना। जहाँ भी जाओ वहाँ सन्देश दे दो। जाना तो है ही तो सन्देश तो दे सकते हो। सेन्टर्स की बहनें कोर्स करावे लेकिन आप सन्देश दो। तो आपको जो अनुभव हुआ है, वो अनुभव सुनाओ। आप कनेक्शन रखो और दूसरों का कनेक्शन जुड़वाओ। अच्छा है। सभी मिलके सन्देशवाहक बनो, जायेंगे सेन्टर पर। एड्रेस दो, फोन पर कनेक्शन रखो बस। पैगम्बर बनो, पैगाम दो। सभी अच्छे हैं। सभी सेवा कर सकते हैं।

सभी अच्छे हैं, उमंग उत्साह में हैं उन्हों को सन्देश देकर उमंग दिलाओ। दु:खी हैं उन्हों को सुख का सन्देश दो। देखो, यह आयु में भी अनुभवी है तो बहुत सेवा कर सकते हैं।

2009 की विदाई 2010 की बधाई - रात्रि 12 बजे के बाद:-

सभी ने हैपी न्यु ईयर कहा, लेकिन हम आप सभी के लिए सदा हैपी है, आज की दुनिया के हिसाब से हैपी न्यु ईयर किया लेकिन संगमयुग का हर दिन हमारा उत्सव है। सदा उत्सव रहता है क्योंकि उत्साह रहता है। संगमयुग का हैपी संगमयुग है। तो आप सभी को बहुत-बहुत-बहुत परिवर्तन की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। जैसे नया वर्ष है वैसे नये संस्कार, पुराने संस्कार को विदाई और नये संस्कार का आगमन इसीलिए सदा ही हर्षित है और सदा ही हर्षित रहेंगे, हमारे लिए आपके लिए हर वर्ष कल्याणकारी है, आगे बढ़ने बढ़ाने वाला है इसलिए सदा हैपी, हैपी, हैपी।